राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

09 सूबेदार बन एक्शन अवतार दिखाएंगे अनिल कपूर ...

थोड़ा व्यस्त कार्यक्रम लेकिन हम तैयार.... 11

वर्ष : 12 | अंक : 68 | पटना, बुधवार, 19 जून, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम अधिकतम तापमान 31°C न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

बाढ़ और सुखाड़ की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए पूरी तरह अलर्ट रहें : नीतीश

मुख्यमंत्री ने संभावित बाढ़ एवं सुखाड़ के पूर्व तैयारियों की समीक्षा की

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंगलवार को 01 अणे मार्ग स्थित 'संकल्प' में संभावित बाढ़ एवं सुखाड़ के पूर्व तैयारियों की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिलों के जिलाधिकारी एवं वरीय पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक भी जुड़े रहे। समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश देते हुये कहा कि राज्य के खजाने पर पहला अधिकार आपदा पीड़ितों का है। राज्य सरकार बाढ़ और सुखाड़ की स्थिति में प्रभावितों को हरसंभव मदद करती है, इसे ध्यान में रखते हुये सभी संबद्ध विभाग और अधिकारी सतर्क रहें।

मुख्यमंत्री ने निर्देश देते हुये कहा कि बाढ़ और सुखाड़ दोनों की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए सभी विभाग के अधिकारी और जिलाधिकारी पूरी तरह अलर्ट रहें। आपदा प्रबंधन विभाग सतत अनुश्रवण करते रहे कि और क्या-क्या करने की जरूरत है ताकि लोगों को कोई दिक्कत नहीं हो। उन्होंने कहा कि भू-जलस्तर पर नजर रखें और पेयजल का इंतजाम रखें। हर घर नल का जल योजना से लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है, इसे पूरी तरह मेंटेन रखें। मुख्यमंत्री ने कहा कि जल-जीवन-हरियाली अभियान के तहत जल संरक्षण को लेकर कार्य किए जा रहे हैं, इसकी भी सतत निगरानी करें और इसे बेहतर ढंग से क्रियान्वित करें। उन्होंने कहा कि पिछले वर्षों की तुलना में इस वर्ष गर्मी ज्यादा है। इसे ध्यान में रखते हुये सभी प्रकार की तैयारी रखें और लोगों को सचेत करें। हर चीज पर नजर रखनी है और पूरी तरह से सतर्क रहना है। मुस्तैदी के साथ सभी लोग लगे रहेंगे तो आपदा की स्थिति में लोगों को राहत मिलेगी। सभी संबद्ध विभाग जिलाधिकारियों के साथ बैठक कर वस्तु स्थिति की जानकारी लें और उसके आधार पर कार्य करे। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिलाधिकारी अपने-अपने जिलों की

स्थिति का आकलन करें। उसके अनुसार सभी प्रकार की तैयारियां पूर्ण रखें। जिलाधिकारी क्षेत्रों में जाएं और वस्तु स्थिति की जानकारी लें। जिलाधिकारी क्षेत्र में लोगों से बात करें और पिछले वर्षों में आपदा की स्थिति में किए गए कार्यों को भी ध्यान में रखते हुए आपदा से निपटने हेतु कार्ययोजना बनाएं। अन्तरविभागीय समन्वय बनाकर कार्य करें ताकि लोगों को सुविधा और सहूलियत मिले।

इससे पहले बैठक में भारत मौसम विज्ञान विभाग, पटना के निदेशक ने इस वर्ष मॉनसून सत्र के दौरान वर्षापात के पूर्वानुमान की जानकारी देते हुए बताया कि दो से तीन दिनों में मॉनसून के आने की संभावना है। सभी जिलों में वर्षा होने की संभावना है। बैठक में आपदा प्रबंधन विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संभावित बाढ़, सुखाड़ एवं अन्य आपदाओं की पूर्व तैयारियों से संबंधित मुख्य बातों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मानक संचालन प्रक्रिया के अनुसार बाढ़ पूर्व सभी आवश्यक तैयारियां की जा रही हैं।

सभी जिलों एवं संबद्ध विभागों को विस्तृत दिशा-निर्देश दिये गये हैं। उन्होंने नाव संचालन, पॉलिथिन शीट, राहत सामग्री की उपलब्धता, दवा, पशुचारा, बाढ़ आश्रय स्थल, सामुदायिक रसोई, ड्राई राशन पैकेट्स/फूड पैकेट्स, जिला आपातकालीन संचालन केंद्र आदि के संबंध में भी विस्तृत जानकारी दी। बैठक में विकास आयुक्त सह जल संसाधन विभाग के अपर मुख्य सचिव चैतन्य प्रसाद, स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, नगर विकास एवं आवास विभाग के प्रधान सचिव आनंद किशोर, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के प्रधान सचिव पंकज कुमार एवं कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने अपने-अपने विभागों द्वारा संभावित बाढ़ एवं सुखाड़ की स्थिति से निपटने को लेकर की गई तैयारियों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत ने बाढ़/सुखाड़ आदि आपदाओं के बारे में लोगों को जागरूक करने तथा आपदा के क्षेत्र में किये गये कार्यों के बारे में जानकारी दी।

बैठक में रहे मौजूद : बैठक में उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी, ऊर्जा मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव, आपदा प्रबंधन मंत्री संतोष कुमार सुमन, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण मंत्री नीरज कुमार सिंह, कृषि सह स्वास्थ्य मंत्री मंगल पाण्डेय, पशु एवं मत्स्य संसाधन मंत्री रेणु देवी, नगर विकास एवं आवास मंत्री नितिन नवीन, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव ब्रजेश मेहरोत्रा, पुलिस महानिदेशक आर०एस० भट्टी, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य पी०एन० राय, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य मनीष कुमार वर्मा, विकास आयुक्त सह जल संसाधन विभाग के अपर मुख्य सचिव चैतन्य प्रसाद, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ० एस० सिद्धार्थ, स्वास्थ्य एवं आपदा प्रबंधन विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के प्रधान सचिव पंकज कुमार, नगर विकास एवं आवास विभाग के प्रधान सचिव आनंद किशोर, कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, विशेष सचिव मुख्यमंत्री सचिवालय चन्द्रशेखर सिंह, अन्य वरीय पदाधिकारीगण एवं एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के पदाधिकारी उपस्थित थे, जबकि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिलों के जिलाधिकारी, वरीय पुलिस अधीक्षक / पुलिस अधीक्षक जुड़े हुए थे।

संक्षिप्त खबरें

पावो नूरमी खेलों में नीरज चोपड़ा का शानदार प्रदर्शन जीता स्वर्ण पदक

नई दिल्ली। टोक्यो ओलंपिक के स्वर्ण पदक विजेता भारतीय भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा ने पावो नूरमी खेलों में शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत हासिल की। नीरज ने ओलंपिक से पहले हुए इन खेलों में 85.97 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ पहला स्थान हासिल किया और स्वर्ण पदक जीतने में सफल रहे। नीरज के अलावा फिनलैंड के टोनी केरानेन ने 84.19 मीटर के थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर रहकर रजत पदक और ओलिवियर हेलांडर ने 83.96 मीटर के अपने सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ कांस्य पदक जीता। नीरज चोपड़ा सबसे पहले थ्रो करने आए और उन्होंने पहली ही बार में 83.62 मीटर का थ्रो किया। विश्व चैंपियन नीरज की यह खराब शुरूआत नहीं थी। नीरज एंडरसन पीटर्स से आगे रहे जिन्होंने पहली बार में 82.58 मीटर का थ्रो किया। दूसरे प्रयास में नीरज ने 83.45 मीटर का थ्रो किया जो उनके शुरूआती प्रयास से बेहतर नहीं था। दूसरे प्रयास के बाद नीरज पिछड़ गए थे और ओलिवियर हेलांडर ने बढ़त बना ली थी। ओलिवियर ने दूसरे प्रयास में 83.96 मीटर का थ्रो किया था। इससे नीरज दूसरे स्थान पर खिसक गए थे।

पश्चिम बंगाल के रंगापानी में दुर्घटनास्थल पर ट्रेन सेवाएं बहाल

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन के निकट रंगापानी में अप और डाउन दोनों लाइनों पर मरम्मत कार्य पूरा होने के बाद मंगलवार को ट्रेन सेवाएं बहाल कर दी गयीं। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी।सोमवार को सुबह एक मालगाड़ी ने अगरतला-सियालदह कंचनजंघा एक्सप्रेस को पीछे से टक्कर मार दी थी।इस दुर्घटना के बाद से ही इस मार्ग रेल परिचालन बाधित हो गया था।कटिहार के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) एस. कुमार ने बताया कि डाउन लाइन पर ट्रेन सेवाएं सोमवार रात को बहाल कर दी गईं और अप लाइन पर डीजल इंजन से चलने वाली ट्रेन सेवाएं मंगलवार सुबह फिर से शुरू कर दी गईं।उन्होंने कहा कि अप लाइन में इलेक्ट्रिक इंजन के जरिये संचालक को भी आज ही शुरू किया जाएगा।सोमवार शाम को दुर्घटनास्थल का दौरा करने के बाद रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि यह पूर्वोत्तर को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने वाली मुख्य लाइन है, इसलिए इस मार्ग पर जल्द से जल्द सेवाएं बहाल करने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय नालंदा विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में होंगे शामिल

पीएम मोदी आज आएंगे बिहार

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीसरी बार पीएम पद की शपथ लेने के बाद आज यानी बुधवार को सेना के विशेष विमान से गया आ रहे हैं। उसके बाद विशेष हेलीकॉप्टर से राजगीर के लिए रवाना होंगे। पीएम नरेंद्र मोदी राजगीर अंतरराष्ट्रीय नालंदा विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में शामिल होंगे। वह नालंदा विश्वविद्यालय के नव निर्मित कैंपस का उद्घाटन करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन को लेकर जिला पुलिस पूरी तरह अलर्ट है। उसके साथ ही गया एयरपोर्ट की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। चप्पे-चप्पे पर सुरक्षाबलों की तैनाती कर दी गई है। मंगलवार को गया के सीनियर एसपी आशीष भारती गया एयरपोर्ट पहुंचकर सुरक्षा व्यवस्था को और बेहतर बनाने के लिए सभी पुलिस पदाधिकारी और जवानों के साथ बैठक कर सभी हालातों से निपटने के निर्देश दिए। हालांकि पीएम नरेंद्र मोदी को गया आने के कारण जिला पुलिस और जिला प्रशासन के साथ साथ स्वास्थ्य विभाग भी अलर्ट है।जानकारी के अनुसार पीएम मोदी की राजगीर यात्रा बनारस से शुरू होगी। वह 19 जून को

बनारस एयरपोर्ट से साढ़े 08 बजे गया के लिए उड़ान भरेंगे। गया एयरपोर्ट पर उनका 09:10 बजे आगमन होगा। इस दौरान गया एयरपोर्ट से ही पुनः 09 बजकर 20 मिनट पर उनका हेलिकॉप्टर नालन्दा जिला के लिए उड़ान भरेगा, जहां नालन्दा जिला के राजगीर स्थित अंतर्राष्ट्रीय नालन्दा विश्वविद्यालय परिसर में बने हेलिपैड पर उनका हेलिकॉप्टर 10 बजकर 50 मिनट पर लैंड करेगा। हेलिपैड से वह अपने काफिले के साथ विश्वविद्यालय कैंपस के सड़क मार्ग से मुख्य समारोह स्थल सुषमा स्वराज ऑडिटोरियम में 10 बजे पहुंचेंगे। पीएम नरेंद्र मोदी समारोह के दौरान नालंदा विश्वविद्यालय के नवनिर्मित कैंपस का विधिवत उदघाटन करेंगे।

डेढ़ घंटे तक रहेंगे बिहार में : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 10 बजे से 11:30 बजे तक यानी कुल डेढ़ घंटे के समारोह में वह शामिल रहेंगे। जानकारी के मुताबिक वह वहां नालन्दा विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे देश विदेश के स्टूडेंट्स को संबोधित करेंगे। फिर समारोह के समाप्ति के बाद 11 बजकर 45 मिनट पर पीएम मोदी हेलिकॉप्टर से गया के लिए प्रस्थान कर जाएंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बुधवार को गया आगमन को लेकर गया पुलिस पूरी तरह से अलर्ट है। यही कारण है कि मंगलवार की देर शाम जिले के विभिन्न होटलों की जांच की गई है। साथ ही होटल में ठहरने वाले लोगों की जांच पड़ताल शुरू कर दी गई है। सड़कों पर सुरक्षाबलों ने फ्लैग मार्च भी निकाला।

पीएम किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त जारी

9.26 करोड़ों किसानों के खाते में भेजे गए 20 हजार करोड़

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त का काफी समय से इंतजार था। किसानों के लिए अच्छी खबर है। भारत सरकार ने किस्त जारी कर दी है।

पीएम किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त मंगलवार को जारी कर दी गई। देश के 9.26 करोड़ों किसानों के खाते में 20 हजार करोड़ रुपये की राशि डीबीटी के माध्यम से भेजी जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 18 जून को वाराणसी में आयोजित एक कार्यक्रम में पीएम किसान सम्मान निधि योजना की 17वीं किस्त जारी की। प्रधानमंत्री की शपथ लेने के बाद सबसे पहले पीएम मोदी ने किसान सम्मान निधि योजना की 17वीं किस्त को जारी करने को लेकर फाइल पर साइन किया था।

हालांकि कई किसान ऐसे भी हैं जिनके खाते में इस बार किस्त का पैसा नहीं आएगा। आपको किस्त की रकम मिलेगी या नहीं आप इसकी जानकारी कर सकते हैं। पीमए किसान योजना की शुरूआत साल 2019 में हुई थी। अभी तक 16 किस्तों में केंद्र सरकार अब तक इस योजना के तहत किसानों को 3.04 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि वितरित कर चुकी है। किसानों को पिछले काफी समय से 17वीं किस्त का इंतजार था। लोकसभा चुनाव के चलते किस्त जारी नहीं हो सकी थी। अब चुनाव खत्म होने के साथ ही आज किसानों के खाते में किसान सम्मान निधि की किस्त का पैसा आ जाएगा।

बिहार के 76,12,995 किसानों के बैंक खाते मे 1562 करोड़ रुपए का अंतरण

प्रात : किरण

पटना। कृषि मंत्री मंगल पाण्डे ने कहा कि मंगलवार को देश के प्रधानमंत्री के द्वारा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत 17वीं किस्त के रूप में बिहार के 76,12,995 किसानों के बैंक खाते में 1562 करोड़ रुपए का अंतरण किया गया। कृषि मंत्री ने इसके लिए देश के यशस्वी प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने आगे बताया कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना देश के सभी रैय्यत किसान परिवारों को आय सहायता प्रदान करने की दृष्टि से केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित योजना है, जिसकों केन्द्र सरकार द्वारा 01 दिसम्बर, 2018 से लागू किया गया है। इस योजना का उद्देश्य फसल के स्वस्थ एवं अच्छी उपज प्राप्त करने हेतु किसान को खेती के लिए विभिन्न आवश्यक उपादान क्रय करने में वित्तीय मदद प्रदान करना है, ताकि किसानों को प्रत्याशित कृषि आय को सुनिश्चित किया जा सके। श्री पाण्डे ने कहा कि इस योजना पर खर्च होने वाली राशि शत-प्रतिशत केन्द्र सरकार द्वारा वहन किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत रैय्यत किसान परिवार को सहायता राशि के रूप में 6,000 रुपए प्रतिवर्ष की दर से प्रत्येक चार माह के अन्तराल (अप्रैल से जुलाई, अगस्त से नवम्बर एवं दिसम्बर से मार्च) पर 02-02 हजार रुपए तीन बराबर किस्तों में दिया जाता है।

मनरेगा से जुड़े कार्यों को सुबह एवं शाम में करवाएं : सीएम

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंगलवार को बैठक में सभी जिला पदाधिकारी को निर्देश दिया कि इस वर्ष अप्रैल माह से ही दिन प्रतिदिन काफी तेजी से तापमान में बढ़ोतरी देखी जा रही है। इसलिए अपने जिले के क्षेत्रों में लगातार स्थिति का जानकारी एवं निगरानी रखें। हर हाल में अंतिम लोगों तक सहायता उपलब्ध कराने हेतु पूरी तैयारी रखें। मनरेगा के तहत कार्य करने वाले कामगारों/ मजदूरों को भीषण गर्मी को देखते हुए सुबह एवं शाम में कार्य करवाएं। इधर, गया जिला के समीक्षा के दौरान जिला पदाधिकारी गया डॉ त्यागराजन एसएम ने बताया कि हर घर नल का जल ग्रामीण क्षेत्र योजना के तहत 320 पंचायत के 4379 वार्ड हैं। जिसमे पंचायती राज विभाग द्वारा 2602 योजना में 2265 योजना क्रियाशील है। पी एच ई डी विभाग द्वारा 1970 वार्ड में से 1949 वार्ड में पेयजल क्रियाशील है। जिले में 99 वार्ड क्रिटिकल वार्ड हैं। छुटे हुए बसावट जो 1178 टोला है बसावट वाले क्षेत्रों में तेजी से पानी उपलब्ध कराने के लिये कार्य किया जा रहा है। किसी भी टोली में पानी सप्लाई बंद ना रहे। इससे निगरानी हेतु प्रखंड टेक्निकल असिस्टेंट द्वारा लगातार क्षेत्र भ्रमण कर इसका प्रतिवेदन लिया जाता है जहां भी नल जल योजना बंद पाई जाती है। तुरंत 24 घंटे के भीतर ही मरम्मत करते हुए पानी सप्लाई शुरू करवा दी जाती है। बैठक में निर्देश दिया गया कि हर पंचायत के हर वार्ड में नल जल योजना के तहत पानी सप्लाई चालू रहे, इसका पूरा निगरानी रखना सुनिश्चित कराएं ताकि एक भी घर को पानी ना मिलने की शिकायत ना मिले। पीएचईडी विभाग की समीक्षा के दौरान बताया गया कि वर्तमान समय में भूगर्भ जल स्तर 37.25 फीट नीचे है। अत्यधिक गर्मी पड़ने पर आवश्यकतानुसार टैंकर के माध्यम से भी जलापूर्ति सुनिश्चित कराई जाएगी। पीएचडी द्वारा 68 टैंकर से सभी 24 प्रखंड के 77 पंचायत के 199 गाँव/ टोला में 341 ट्रिप लगा रहा है, जिससे लगभग 26444 लोग लाभन्वित हो रहे हैं। नगर निगम के पास 30 टैंकर, नगर पंचायत बोधगया के पास 4, नगर पंचायत टिकारी 3, नगर पंचायत शेरघाटी 2 टैंकर है। पीएचडी द्वारा संबंधित टोलो में जलापूर्ति आम जनों तक उपलब्ध करा रही है तथा जिस स्थान से जल की समस्या से संबंधित शिकायतें प्राप्त होती है।

वहां तुरंत टैंकर मुहैया कराया जाता है। जल संकट वाले टोलो पर लगातार निगरानी भी रखी जा रही है। जिले में सार्वजनिक चापाकल मरम्मत हेतु पर्याप्त गैंग द्वारा कुल 6904 चापाकल को मरम्मत कराया गया है, शेष चापाकलों को युद्ध स्तर पर मरम्मत करवाने का कार्य किया जा रहा है। जिले में पशुओं को पानी पिलाने हेतु सभी कैटल ट्रफ को चालू करवाया गया है, कुछ खराब हैं, उसे भी चालू करवाया जा रहा है। पशुओं के लिए चारा की व्यवस्था सुनिश्चित कराएं। बीमार पशुओं को उपचार तथा सभी जिलों में पशु दवा की प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करवाने का निर्देश दिए हैं। समीक्षा बैठक में हीटवेव को लेकर निर्देश दिया गया कि सभी अस्पतालों पर विशेष नजर रखें। स्वास्थ्य विभाग तथा आपदा प्रबंधन विभाग के हीटवेव से संबंधित जो भी गाइडलाइन है उसका पूरी तरह अनुपालन सभी सरकारी अस्पतालों में करवाना सुनिश्चित करें। सभी सार्वजनिक स्थानों पर प्याऊ की व्यवस्था सुनिश्चित करावे। नगर विकास एवं आवास विभाग के समीक्षा के दौरान निर्देश दिया गया कि नालों की सफाई तेजी से करवाएं। जलजमाव तथा अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव कराना सुनिश्चित करावे। इस अवसर पर वरीय पुलिस अधीक्षक, नगर आयुक्त, अपर समाहर्ता आपदा सहित संबंधित विभागों के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

राहुल गांधी ने वायनाड लोकसभा सीट से दिया इस्तीफा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने केरल की वायनाड लोकसभा सीट से इस्तीफा दे दिया है और उत्तर प्रदेश की रायबरेली सीट अपने पास रखी है। लोकसभा सचिवालय ने मंगलवार को यह जानकारी दी। लोकसभा बुलेटिन में कहा गया है कि उनका इस्तीफा 18 जून से स्वीकार कर लिया गया है। बुलेटिन में कहा गया है, 'केरल और उत्तर प्रदेश के क्रमशः वायनाड और रायबरेली संसदीय क्षेत्रों से लोकसभा के निर्वाचित सदस्य राहुल गांधी ने केरल के वायनाड संसदीय क्षेत्र से इस्तीफा दे दिया है और उनका त्यागपत्र अध्यक्ष की ओर से स्वीकार कर लिया गया है जो 18 जून से प्रभावी माना जाएगा।' इस मुद्दे पर अटकलों को विराम देते हुए कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार

को राष्ट्रीय राजधानी में अपने आवास पर पार्टी के शीर्ष नेताओं के साथ विचार-विमर्श के बाद दोनों सीटों पर निर्णय की घोषणा की। उन्होंने बताया कि राहुल गांधी की बहन प्रियंका गांधी वायनाड उपचुनाव लड़ेंगी। राहुल गांधी की ओर से जीती गई दो सीटों में से एक से इस्तीफा देने के बाद, लोकसभा में कांग्रेस की सीटों की संख्या अब 98 हो गई है। वायनाड सीट 18 वीं लोकसभा में पहली ऐसी सीट होगी जहां उपचुनाव कराया जाएगा। सोमवार को वायनाड सीट छोड़ने का ऐलान करने के दौरान राहुल ने कहा था कि उनके लिए यह एक मुश्किल फैसला था क्योंकि रायबरेली और वायनाड, दोनों से उनका भावनात्मक लगाव है। फैसले के बाद, राहुल ने कहा कि रायबरेली और वायनाड को ह्यदो-दो सांसद मिलेंगे।ह्न उन्होंने कहा, ह्यरायबरेली से मेरा पुराना नाता है और मुझे बहुत खुशी है कि मैं इसका प्रतिनिधित्व करूंगा। यह कोई आसान फैसला नहीं था, क्योंकि मेरा लगाव दोनों (वायनाड और रायबरेली) से है।ह्न सोनिया गांधी अब राजस्थान से राज्यसभा सदस्य हैं, राहुल रायबरेली का प्रतिनिधित्व करेंगे और प्रियंका गांधी (आगामी) उपचुनाव जीत जाने पर वायनाड निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करेंगी। सोनिया पिछले दो दशकों से रायबरेली निर्वाचन क्षेत्र से सांसद थीं और राहुल अमेठी से सांसद थे, जहां वह 2019 में भाजपा की स्मृति ईरानी से हार गए थे। लेकिन वायनाड सीट पर जीत दर्ज की थी।

नीट में 0.001 फीसदी भी लापरवाही हो, उचित समय पर उचित कार्रवाई करें: सुप्रीम कोर्ट

प्रात : किरण

नई दिल्ली, एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने गंभीर अनियमितताओं के आरोपों से घिरी मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट यूजी 2024 रद्द कर इसे दोबारा आयोजित कराने की मांग वाली एक याचिका पर मंगलवार को केंद्र सरकार और राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) से कहा कि भले ही किसी की ओर से 0.001 फीसदी भी लापरवाही हुई हो, उसे स्वीकार करें और विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाने के लिए उचित समय पर उचित कार्रवाई कर इस मामले से पूरी तरह निपटाया जाना चाहिए। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति एस वी एन भट्टी की अवकाशकालीन पीठ ने ये टिप्पणियां

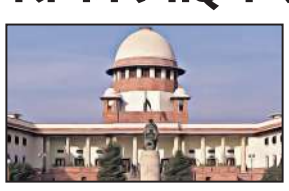

करते हुए केंद्र और एनटीए के अधिवक्ता से आगे कहा, ऐसी स्थिति की कल्पना करें, अगर धोखाधड़ी करने वाला कोई व्यक्ति डॉक्टर बन जाए तो वह समाज के लिए और अधिक हानिकारक होगा। हम जानते हैं कि ऐसी परीक्षाओं की तैयारी में कितनी मेहनत लगती है। हम समय पर कार्रवाई चाहते हैं। शीर्ष अदालत ने पांच मई 2024 को परीक्षा आयोजित कर चार जून 2024 को परिणाम घोषित करने वाली एनटीए को नसीहत देते हुए कहा, एक एजेंसी के रूप में आपको निष्पक्षता से काम करना चाहिए। यदि कोई गलती हुई है तो 'हाँ' कहें, यह एक गलती है और हम यह कार्रवाई करने जा रहे हैं। कम से कम यह आपके काम में विश्वास जगाता है।शीर्ष अदालत ने मेडिकल स्नातक स्तर की पढ़ाई के लिए आयोजित नीट यूजी 2024 में अनियमितता के आरोप लगाने वाली इस याचिका पर सुनवाई के दौरान कहा, वह (एनटीए) इस मामले में आत्ममंथन करे।न्यायमूर्ति नाथ की अध्यक्षता वाली पीठ ने सुनवाई के दौरान केंद्र और एनटीए से कहा कि वे निष्पक्षता से काम करें और अगर नीट यूजी 2024 में कोई गलती हुई है तो उसे स्वीकार करें और छात्रों में आत्मविश्वास जगाने के लिए उचित कार्रवाई करें।

संसद सत्र रक्षा मंत्री की अध्यक्षता में हुई एनडीए सरकार के वरिष्ठ मंत्रियों की बैठक

सदन की रणनीति तैयार करने के लिए राजनाथ सिंह ने की बैठक

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को संसद के आगामी सत्र के लिए सदन की रणनीति तैयार करने के लिए वरिष्ठ मंत्रियों की एक बैठक की अध्यक्षता की। इस सत्र में जहां नए लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव होगा वहीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू अगले पांच साल के लिए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार का दृष्टिकोण देश के सामने रखेंगी। मीटिंग में केंद्रीय मंत्री एस जयशंकर, मनोहर लाल खट्टर, भूपेंद्र यादव, पीयूष गोयल,

धर्मेंद्र प्रधान, अन्नपूर्णा देवी, और किरण रिजिजू शामिल हुए। एनडीए के सहयोगी दलों में जनता दल (यूनाइटेड) के राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के चिराग पासवान सहित अन्य नेता शामिल हुए। सिंह और पासवान केंद्रीय मंत्री हैं। दोनों सदनों में 28 जून को राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा होगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 2-3 जुलाई को चर्चा का जवाब दे सकते हैं।

समझा जाता है कि रक्षा मंत्री के आवास पर हुई बैठक में लोकसभा अध्यक्ष और उपाध्यक्ष पद के संभावित उम्मीदवारों पर भी चर्चा हुई। जेडीयू ने कहा है कि वह अध्यक्ष पद के लिए भाजपा उम्मीदवार का समर्थन करेगी जबकि एक अन्य महत्वपूर्ण सहयोगी तेलुगु देशम पार्टी ने इस प्रतिष्ठित पद के लिए सर्वसम्मति से उम्मीदवार की मांग की है। विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन ने अपने उम्मीदवार के लिए लोकसभा उपाध्यक्ष पद की मांग की है जबकि भाजपा अपने गठबंधन सहयोगी को यह पद देने पर विचार कर रही है।

निवर्तमान लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के संभावित उत्तराधिकारी के रूप में भाजपा नेता राधामोहन सिंह, डी पुरंदेश्वरी और भर्तृहरि महताब के नामों की चर्चा है। आठ बार लोकसभा सदस्य रहे वरिष्ठ कांग्रेस नेता के. सुरेश संसदीय अनुभव के लिहाज से सबसे वरिष्ठ हैं और वह अस्थायी अध्यक्ष की भूमिका के दावेदार हैं।

संक्षिप्त खबरें

स्वास्थ्य शिविर में डॉक्टर ने बताए स्वस्थ रहने टिप्स

पटना सिटी (प्राकि)। बैंक ऑफ इंडिया की पटना सिटी शाखा के द्वारा स्वास्थ्य शिविर मंगलवार को लगाया गया। पैनकार्डिया हार्ट सेंटर के द्वारा शिविर में आए लोगों की आंख जांच की गई। साथ ही ब्लड प्रेशर एवं सुगर का भी मुफ्त जांच किया गया। मौजूद लोगों को स्वस्थ रहने के बारे में जानकारी देते हुए स्वस्थ रहने के टिप्स डॉ संतोष पांडेय और डॉ सुरुचि पांडेय के द्वारा बताया गया। शिविर के वरीय शाखा प्रबंधक रोहित कुमार चौधरी, आरती कुमारी, नीतू कुमारी, ज्योत्सना कुमारी, अधिवक्ता देवानंद तिवारी, प्रभात रंजन, अमित कुमार, सुमन कुमार आदि ने सहयोग किया।

हत्या व मारपीट के मामले में पुलिस ने दो को किया गिरफ्तार

पटना सिटी (प्राकि)। अगमकुआं थाना की पुलिस ने हत्या और मारपीट के मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि हत्या के मामले में फरार चल रहे जयपुर धनुकी के रहने वाले रामप्रवेश महतो को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार रामप्रवेश बस मालिक कृपा शंकर सिंह की हत्या के मामले में आरोपित है। यह फरार चल रहा था। वहीं पुलिस ने मारपीट और हत्या के प्रयास के आरोप में रिशु कुमार उर्फ विशाल कुमार श्रीवास्तव को भी गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार रिशु इसी थाना क्षेत्र के भूतनाथ रोड स्थित जनता फ्लैट का रहने वाला है। पकड़े गए दोनों आरोपितों से पुलिस ने पूछताछ करने के बाद कोर्ट में पेश किया और उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। उक्त कांड में फरार चल रहे आरोपियों के खिलाफ पुलिस छापेमारी अभियान चलाए जाने की बात कहती है।

निर्जला एकादशी पर श्रद्धालुओं ने व्रत रख किया धार्मिक अनुष्ठान

पटना सिटी (प्राकि)। निर्जला एकादशी के अवसर पर श्रद्धालुओं ने गंगा नदी के विभिन्न घाटों पर गंगा में डुबकी लगाई। इस दौरान सूर्य को जलार्पण किया। गंगा नदी के किनारे स्थित शिव मंदिरों में भी जाकर जल अर्पित कर फूल-फल, बिल्व पत्र आदि चढ़ाने का काम किया। इस दौरान अनेक लोगों ने व्रत रखा और भगवान विष्णु की उपासना करने के साथ ही धार्मिक ग्रंथों को भी पढ़ा। जो लोग व्रत नहीं रखे ऐसे अधिकांश लोगों ने भोजन में चावल का त्याज्य किया। शाम में व्रत रखने वालों ने भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना करने के बाद फलाहार किया। शाम से लेकर रात तक घर और मंदिरों में भजन कीर्तन का दौर भी चला। हालांकि मतभिन्नता के कारण अधिकांश श्रद्धालुओं ने सोमवार को भी एकादशी का व्रत रख पूजा अर्चना किया था।

हार्ट अटैक से एक व्यक्ति की मौत

दानापुर। नगर केशाहपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत मुबारकपुर विजापत में पुलिस द्वारा रेड करने के दौरान घबराये एक व्यक्ति को हार्ट अटैक हो गया। लोग लेकर अस्पताल पहुंचे जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। जिससे आस पास के लोग आक्रोशित हो गये। सूचना पर पहुंची एएसपी सुश्री दीक्षा व शाहपुर पुलिस ने घटना की जानकारी ली। मृतक के पुत्र संजीत कुमार ने बताया कि बीत रात एका एक पुलिस आयी और जोर जोर से दरवाजा पीटने लगी। गेट खोलने पर पूछा की क्या हुआ, तो वे लोग कुछ नही बताये सीधा घर में घुस गये और दानापुर पुलिस ने मेरे चाचा के दो बेटा पंकज और गुड्डू को पकड़ कर साथ ले गयी। पुछने पर बोला गया कि दानापुर थाना आओ सब बताते है। पुलिस को देख मेरे पिता महेन्द्र राय 67 घबरा गये और उनका हार्ट अटैक हो गया। जिससे उनकी मौत हो गया। मौत के बाद घर में चीख पुकार मच गया। लोगो की भीड़ जुट गयी। लोग पुलिस के इस कार्रवाई पर नाराजगी व्यक्त करने लगे। सूचना पर पहुंची एएसपी दीक्षा ने बताया कि एक लूट कांड में मृतक के भतिजा नाम आया था। जिसके बाद पुलिस उसे गिरफ्तार करने गयी थी। इसी दौरान वृद्ध पुरुष की हार्ट अटैक हो गई है। परिजनो ने बताया है कि इसी दौरान हार्ट अटैक से महेन्द्र राय की मौत हो गयी है। दानापुर अपर थानाध्यक्ष सिंटू कुमार झा ने बताया कि बिहटा में हुए लूट मामले में पंकज और गुड्डू को गिरफ्तार किया गया है।

सास-बहू-बेटी सम्मेलन के जरिए लोगों को किया जा रहा परिवार नियोजन के प्रति जागरुक

10 जिलों के 1018 मुखिया और अन्य ग्राम पंचायत स्तर के जनप्रतिनिधि हो रहे लाभान्वित

- परिवार नियोजन एवं सामाजिक स्थिति पर जनप्रतिनिधि के नेतृत्व क्षमताओं को विकसित करने पर है केंद्रित

प्रात :किरण संवाददाता

पटना । परिवार नियोजन कार्यक्रम को सुदृढ़ करने के लिए कई नवीन प्रयोग किए जा रहे हैं। परिवार नियोजन कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक जागरुकता बढ़ाने के लिए राज्य में सास-बहू-बेटी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सास-बहू-बेटी सम्मेलन का आयोजन एएनएम और आशा कार्यकर्ता के सहयोग से सम्पन्न होता है। जिसमें योग्य दम्पतियों के सास-बहू की न्यूनतम 10 जोड़ियों को सम्मलित कर उन्हें स्वस्थ्य परिवार के प्रति जागरूक किया जाता है। राज्य में सास-बहू-बेटी सम्मेलन के जरिए खासकर ग्रामीण इलाकों में छोटा परिवार खुशहाल परिवार का संदेश दिया जा रहा है। कुल प्रजनन दर के लक्ष्य को हासिल करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में भी परिवार नियोजन के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ाना काफी जरूरी है। इस दिशा में सास-बहू सम्मेलन कार्यक्रम खासकर ग्रामीण क्षेत्र में छोटा परिवार, खुशहाल परिवार का संदेश देने में सक्षम साबित हो रहा है। साथ ही सम्मलेन के माध्यम से ह्यबच्चे दो ही अच्छेह्न जैसे स्लोगन के जरिए सास-बहू को जागरूक किया जा रहा है और छोटा परिवार के महत्व की जानकारी दी जा रही है।

राज्य के दस जिलों में चलाया जा रहा कार्यक्रम

सी श्री के द्वारा ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों के सहयोग से 10 जिलों के 77 प्रखंडों की 1018 ग्राम पंचायतों में सास बहू बेटी सम्मेलन के आयोजन में सहयोग दिया गया था। जिन जिलों में इस योजना की शुरूआत की गयी थी उनमें पटना, शेखपुरा, समस्तीपुर, औरंगाबाद, पूर्वी चंपारण, नालंदा, नवादा, रोहतास, मधुबनी और मुजफ्फरपुर शामिल है। इस कार्यक्रम के माध्यम से पंचायत के 1018 मुखिया और अन्य ग्राम पंचायत स्तर के जनप्रतिनिधि लाभान्वित हुए हैं। कार्यक्रम के तहत महिलाओं पर विशेष जोर देने के साथ स्वास्थ्य,परिवार नियोजन और सामाजिक स्थिति के क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए जनप्रतिनिधि के नेतृत्व क्षमताओं को विकसित करने पर केंद्रित है। इसके अतिरिक्त इसका उद्देश्य मुखिया और अन्य पंचायत प्रतिनिधियों व सदस्यों को उनके गतिशील नेतृत्व के माध्यम से मिशन परिवार विकास से संबंधित जमीनी गतिविधियों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और मजबूत करने में मदद करना है।

योजना पर राज्य स्वास्थ्य समिति पर बनी है सहमति

सेंटर फॉर कैटेलाइजिंग चेंज (सी3) व राज्य स्वास्थ्य समिति के संयुक्त प्रयास से सामुदायिक स्तर पर सास-बहू-बेटी सम्मेलन संबंधित जिला स्वास्थ्य सोसायटी (डीएचएस) के साथ किया जा रहा है। इस दौरान समुदायों, विशेष रूप से नवविवाहित जोड़ों के साथ ही सास और ननदों को संगठित करने में सहायता प्रदान किया जा रहा है। वहीं डीएचएस द्वारा लक्षित प्रखंडों में सास-बहू-बेटी सम्मेलन आयोजित कर समाज को जागरूक किया जा रहा है। नालंदा, रोहतास, पटना, समस्तीपुर, औरंगाबाद, पूर्वी चंपारण, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, नवादा और शेखपुरा में कुल 387 ऐसे आयोजन सफलतापूर्वक आयोजित किए गए, जिनमें मुखिया और अन्य पीआरआई नेता शामिल थे। इन आयोजनों ने परिवार नियोजन और आधुनिक गर्भनिरोधक तरीकों के बारे में सामुदायिक जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जिला स्तर पर आयोजित होने वाले गतिविधियां: सारथी रथ आंदोलन में समर्थन, साइकिल रैली, जिला और पीएचसी पर अभिसरण बैठकें, जिला स्तरीय स्वास्थ्य मेला, सास बहू बेटी सम्मेलन की शुरूआत सामुदायिक स्तर की गतिविधियां: सामुदायिक स्तरीय साइकिल रैली का आयोजन, सास बहू बेटी सम्मेलन के आयोजन में सहयोग, आशा की अनुपस्थिति में योग्य दम्पत्तियों को संगठित करने में सहायता, नई पहल किट के वितरण में सहयोग, किशोरी बैठकें, माताओं की बैठक, परिवार नियोजन पर जागरूकता रैली, एफपी वली मेहंदी, परिवार नियोजन पर मुखिया/सरपंच का उन्मुखीकरण, विशेष ग्राम सभा एवं वार्ड सभा का आयोजन इस अवसर पर सी श्री के राज्य प्रमुख, प्रकाश रंजन ने बताया कि सास बहू बेटी सम्मेलन समुदायों को परिवार नियोजन के ऊपर जागरूक करने का बेहतरीन प्लेटफार्म है। इस प्लेटफार्म के माध्यम से योग्य दंपत्तियों के अलावा परिवार के अन्य सदस्यों को भी परिवार नियोजन की महत्ता समझाने में मदद मिलती है जिससे वे नव दंपत्तियों के परिवार नियोजन साधन उपलब्धता एवम निर्णय में सहभागी की भूमिका निभाते हैं।

पटना से नई दिल्ली एवं बरौनी से नंदुरबार के लिए स्पेशल ट्रेन का परिचालन

प्रात :किरण संवाददाता

हाजीपुर। ग्रीष्मकालीन अवकाश में यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर कई समर स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है । इसी क्रम में पटना से नई दिल्ली एवं बरौनी से नंदुरबार के लिए एक-एक वन-वे स्पेशल का भी परिचालन किया जायेगा ।

गाड़ी सं. 04065 पटना-नई दिल्ली अनारक्षित स्पेशल - गाड़ी सं. 04065 पटना-नई दिल्ली अनारक्षित 19 जून (बुधवार) को पटना जं. से 21.30 बजे खुलकर आरा, बक्सर, डीडीयू, प्रयागराज एवं कानपुर रूकते हुए मंगलवार को 15 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी । गाड़ी सं. 09044 बरौनी-नंदुरबार स्पेशल - गाड़ी सं. 09044 बरौनी-नंदुरबार स्पेशल दिनांक 19 जून (बुधवार) को बरौनी से 18 बजे खुलकर पाटलिपुत्र, आरा, डीडीयू, प्रयागराज छिवकी, जबलपुर, भुसावल के रास्ते शुक्रवार को 03.30 बजे नंदुरबार पहुंचेगी । इस स्पेशल में स्लीपर क्लास के 18 कोच होंगे । गाड़ी सं. 09054 बरौनी-नंदुरबार स्पेशल - गाड़ी सं. 09054 बरौनी-नंदुरबार स्पेशल 20 जून (गुरूवार) को बरौनी से 18.00 बजे खुलकर पाटलिपुत्र, आरा, डीडीयू, प्रयागराज छिवकी, जबलपुर, भुसावल के रास्ते शनिवार को 03.30 बजे नंदुरबार पहुंचेगी । इस स्पेशल में तृतीय वातानुकूलित श्रेणी का 01 एवं स्लीपर क्लास के 18 कोच होंगे ।

सगुना मोड़ स्थित प्रगति नगर में उप डाकघर का हुआ शुभारंभ

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर खगौल सगुना मोड स्थित प्रगति नगर में उप डाकघर का शुभारंभ किया गया। मंगलवार को मुख्य डाक महाध्यक्ष अनिल कुमार ने उपडाकघर का उद्घाटन किया। उन्होने कहा कि इसके खुलने से आर. के. पुरम, आदर्श कॉलोनी, लेखानगर, उर्जा नगर, त्रिभुवन स्कूल का एरिया, यादव नगर और अन्य मोहल्लों के साथ साथ विभिन्न स्कूल संस्थानों, बैंकिंग संस्थानों के लोगों को डाकघर की बैंकिंग एवं डाक की सुविधा मिलेगा। सगुना मोड़ के आम नागरिक खुश हैं कि अब उन्हें उनके क्षेत्र में डाकघर होने से डाकघर कि सभी सेवाओं, डिजिटल बैंकिंग एवं अन्य डाकघर की सुविधाओं का अधिक से अधिक लाभ मिल सकेगा। यहां नवीनतम सेवा, डाक निर्यात केंद्र का लाभ लोग ले सकते हैं डाक निर्यात केंद्र के माध्यम से अपने सामानों को देश एवं देश के बाहर भेज सकते हैं। श्री कुमार ने कहा कि आज भी 28% डीडी,70% पास्पोर्ट व अन्य महत्वपूर्ण कागजात डाक से भेजे जा रहे हैं। मुख्य डाक महाध्यक्ष ने उप डाकघर से डिजिटल बैंकिंग एवं अन्य डाकघर की सुविधाओं अधिक से अधिक लेने की अपील लोगो से की। इस मौके पर निदेशक पवन कुमार, वरिष्ठ डाक अधीक्षक राजदेव प्रसाद,उप डाक अधीक्षक तनवीर अहमद, किशोर कुमार, कन्हैया प्रसाद सिंह,मो तबरेज आलम अमरदीप कुमार समेत अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

दशमेश पिता के दरबार में आकर मिलता शांति व सुकून : सीग्रीवाल

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र से तीसरी बार लोकसभा के सदस्य चुने पर जनार्दन सिंह सिग्रीवाल तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब पहुंचे। यहां पहुंचने के बाद वे दरबार साहिब गए। यहां गुरु महाराज के समक्ष नतमस्तक हुए। ग्रंथी सिंह ने आशीर्वाद स्वरूप गुरुघर से सिरोपा और प्रसाद दिया। उन्हें गुरु महाराज के शस्त्र और चरण पादुका का दर्शन कराया गया। सांसद श्री सिग्रीवाल ने कहा कि यहां गुरु जी के समक्ष नतमस्तक होकर मन को शांति और सुकून मिलता है। वह ऐसे गुरु का दर्शन कर रहे हैं, जिन्होंने पूरा जीवन गरीबों की सेवा और हिन्दू सनातन धर्म एवं हिन्दुस्तान की संस्कृति और सभ्यता के लिए अपना सर्वंश बलिदान कर दिया। उनके साथ अजय सिंह टुन्नू, धनंजय सिंह व धीरज सिंह भी आए थे। पटना साहिब आने पर इनका स्वागत श्री सनातनी सिख सभा के अध्यक्ष त्रिलोक सिंह निषाद और गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कार्यालय के प्रबंधक सरदार हरजीत सिंह ने किया। इस दौरान श्री सीग्रीवाल ने कहा कि धन्य है पटना साहिब की धरती, जहां दशमेश पिता ने अवतार लिया। वैसे भी गुरु महाराज का संदेश है कि हर किसी को एक बार अपने जीवन में पटना आना चाहिए। पटना गुरु का घर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी यहां आकर गुरु चरणों में अपना शीश नवा चुके हैं। वे प्रार्थना करेंगे कि पीएम नरेंद्र मोदी को गुरु इतनी शक्ति और भक्ति प्रदान करें, कि उनके नेतृत्व में भारत का नाम विश्व में रोशन हो और देश को आर्थिक और सैन्य शक्ति के रूप में विकसित करने की उन्हें क्षमता दें। देश का हर नागरिक, किसान, जवान व नौजवान खुशहाल हो और उन्नति करें।

बदमाशों ने वाहन से मोबिल गिरने की बात कह 3.75 लाख उड़ाया

ऑटो सवार व्यक्ति का जेब काट 75 हजार का चपत लगा उतारा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बार-बार वाहन से मोबाइल गिरने और यात्रियों के वेश में ऑटो सवार के द्वारा यात्री का जेब या थैला से रुपया काटने की बात खबरें बनती और छपती हैं। फिर भी लोग इसके शिकार हो रहे हैं। ताजा दो मामला अगमकुआं थाना क्षेत्र का है। कुम्हरार के पास चार पहिया वाहन से विनोद कुमार जा रहे थे। उनका वाहन धीमी गति से जाम के कारण बढ़ रहा था। इसी दौरान बदमाशों ने कहा कि आपके वाहन से मोबाइल गिर रहा है। जब गाड़ी रोक कर नीचे उतर विनोद देखने लगे। इसी दौरान बदमाशों ने वाहन में रखा बैग को उड़ा लिया। विनोद के अनुसार उक्त बैग में तीन लाख 75 हजार नगद के अलावा अन्य कागजात भी था। इस संबंध में पीड़ित के द्वारा अगमकुआं थाना में आवेदन देकर घटना के बारे में जानकारी देते हुए मामला दर्ज कराया गया है। वहीं दूसरी ओर इसी थाना क्षेत्र के बड़ी पहाड़ी के पास नवीन कुमार सिन्हा ऑटो पर अपने गंतव्य को जाने के लिए सवार हुए थे। इसी दौरान यात्री के वेश में ऑटो में रहे सवार ने उनका पॉकेट काट कर 60 हजार की चपत लगा दिया। पीड़ित नवीन का कहना था कि ऑटो में पहले से दो यात्री सवार थे और रास्ते में दो और यात्री सवार हो गए। इसके बाद ऑटो चालक ने कृष्णा निकेतन के पास ऑटो रोक दिया और बहाना बनाते हुए उसे उतार दिया। जब तक वह कुछ समझते, ऑटो चालक वाहन के साथ फरार हो गया। तब उन्हें अपने जेब में रहे 75 हजार के गायब होने का एहसास हुआ। पुलिस ने बताया कि दोनों पीड़ितों की शिकायत पर मिले आवेदन के आधार पर प्राथमिक दर्ज कर लिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। इस मामले में सीसीटीवी को भी खंगाला जा रहा है।

मेडिसिन का ओपीडी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के फेब्रिकेटेड भवन में शुरू

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

एनएमसीएच के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में स्थित फैब्रिकेटेड भवन में मेडिसिन विभाग का ओपीडी शुरू हो गया। इसका उद्घाटन कालेज की प्राचार्या प्रोडॉ उषा कुमारी और अधीक्षक डॉ अलका सिंह ने संयुक्त रूप से किया। अध्यक्षता मेडिसिन के विभागाध्यक्ष डॉ अजय कुमार सिन्हा ने की। विभागाध्यक्ष ने बताया कि पहले अस्पताल परिसर में स्थित भवन में ओपीडी का संचालन हो रहा था। यहां जगह के छोटा होने और मरीजों की संख्या बढ़ने के कारण सबों को परेशानी हो रही थी। वह भी हर आयु वर्ग के लोगों को सीढ़ी से चढ़ना व उतरना भी मुश्किल होता था। अब यहां पर यह सुविधा शुरू होने की स्थिति में मरीजों को लाभ मिलेगा और परेशानी कम होगी। विभाग का तीन वार्ड भी इसी भवन में संचालित हो रहा है। ऐसे में अब मरीजों को इसका पूरा लाभ मिलेगा। एक ही छत के नीचे आउटडोर और इंडोर भी उपलब्ध होगा। अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ सरोज कुमार ने बताया कि मरीजों की सुविधाओं का ख्याल रख यहां पर ओपीडी शुरू कराया गया है। इसके शुरू होने के साथ मरीजों के बैठने और चिकित्सकीय लाभ देने को लाइन लगने के लिए पर्याप्त जगह मिल सकेगा। यहां पर महिला व पुरुष के लिए अलग-अलग लाइन लगाने की व्यवस्था की गयी है, ताकि मरीजों को किसी तरह की परेशानी नहीं हो।

भारतीय मानव अधिकार रक्षक गंगा दशहरा के अवसर पर मथुरा-वृन्दावन नगर निगम क्षेत्र में फूड पैकेट्स का वितरण किया

पटना गंगा दशहरा के अवसर पर भारतीय मानवाधिकार रक्षक (रजि.) ने मथुरा-वृन्दावन नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत भूतेश्वर और मथुरा जंक्शन रेलवे स्टेशन के पास झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगो को बीच फूड- पैकेट्स का वितरण किया गया। उक्त जानकारी भारतीय मानव अधिकार रक्षक के राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविंद कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि संस्था के जिला अध्यक्ष दीपा अग्रवाल ने बताया कि फूड पैकेट्स में पूरी, सब्जी और मिठाई का वितरण किया गया। संस्था किसी भी पर्व में जरूरतमंदो एवम गरीबों के बीच आवश्यकता अनुसार सामग्रियों का वितरण किया जाता है। राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविंद कुमार ने बताया गया कि रविवार को गंगा दशहरा पर्व के उपलक्ष्य पर संस्था के सहयोग से मथुरा - वृंदावन नगर निगम क्षेत्र के भूतेश्वर के समीप और रेलवे जंक्शन के समीप गरीब और असहाय लोगो के बीच फूड पैकेट्स का वितरण किया गया।

बिहार में एनडीए की सरकार में नौकरियां की बहार : प्रभाकर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर कुमार मिश्र ने कहा कि बिहार में फिर नीतिशे कुमार हैं। एनडीए की सरकार है इसलिए नौकरियों की बहार है। उन्होंने मंगलवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि चुनाव के दौरान नौकरी देने का ढोल पीटने वाले को समझ में आ जानी चाहिए कि झूठ अधिक दिनों तक नहीं टिक सकता। सत्य के आगे उसे मैदान छोड़ना ही पड़ता है। नौकरी को लेकर 10वीं फेल एक नेता ने बिहार में इतना लंबा-लंबा फेंका कि खुद बाउंड्री के बाहर हो गए। लंबा फेंकने वाले को बिहार की जनता ने लंबी यात्रा पर भेज दिया। श्री मिश्र ने कहा कि ह्यजंगल राज के युवराजह्न ने लोकसभा चुनाव के दौरान नौकरी देने का राग अलापते रहे, लेकिन अब दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। एनडीए सरकार नौकरी देने का नया कीर्तिमान स्थापित करने जा रही है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मिशन मोड में सात निश्चय पार्ट-टू के लक्ष्य को हासिल करने के लिए अधिकारियों को निर्देश जारी कर दिया है। एक साल में करीब साढ़े चार लाख नौकरियां दी जाएंगी और 11 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध कराए जाएंगे। श्री मिश्र ने कहा कि ह्यजंगल राज के युवराजह्न के झूठ का अब भंडाफोड़ होने वाला है। लोगों को असलियत का पता चल जाएगा कि रोजगार देने का डींग हांकने वाला कितना बड़ा फरेबी निकला। नौकरी देने वाले कोई और नहीं, नीतीश कुमार हैं। महागठबंधन की सरकार में वे सिर्फ डिप्टी सीएम पद पर विराजमान होकर औपचारिकता पूरी कर रहे थे। एनडीए सरकार का नेतृत्व करते हुए नीतीश कुमार जनहित में एक और रिकार्ड बनाने जा रहे हैं, वह रिकॉर्ड होगा। नौकरी और रोजगार देने का और बिहार के सर्वांगीण विकास का। डबल इंजन की सरकार में बिहार डबल रफ्तार के साथ प्रगति पथ पर दौड़ रहा है।

सांसद डॉ गोपाल जी ठाकुर का दरभंगा एयरपोर्ट पर हुआ गर्मजोशी से स्वागत

प्रात :किरण संवाददाता

दरभंगा।लागातार दूसरी बार लोकसभा चुनाव जीतने के बाद दिल्ली से क्षेत्र भ्रमण के लिए सांसद डा गोपाल जी ठाकुर के दरभंगा पहली बार आगमन पर भाजपा नेताओं तथा कार्यकर्ताओ ने दरभंगा हवाई अड्डे पर गरमजोशी से स्वागत किया। पार्टी कार्यकताओं ने पाग चादर व मखान माला पहना किया स्वागत।दरभंगा एयरपोर्ट के भीतरी लॉन से लेकर एयरपोर्ट के मुख्य गेट से एनएच 105 के दिल्ली मोड़ तक भाजपा कार्यक्रताओ के सैकड़ों चार चक्के एवं दो मोटरसाइकिल से पूरा सड़क पट गया था तथा भाजपा कार्यकर्ताओ एवं भाजपा के झंडे से पूरा वातावरण भगवामय लग रहा था। पार्टी नेताओं एवं कार्यक्रताओं का कहना था की जिस तरह से लोकसभा चुनाव में सांसद डा ठाकुर ने भारी मतों के अंतर से जीत हासिल किया है उससे पूरी पार्टी और क्षेत्र के एनडीए समर्थित लोगों ने उत्साह और जुनून व्याप्त है यही कारण है की संसद के दरभंगा आगमन की सूचना मिलते ही इतनी बड़ी संख्या में कार्यक्रता उपस्थित हुए। एयरपोर्ट पर उपस्थित उत्साही कार्यकताओं का उत्साहवर्धन करते हुए सांसद डा ठाकुर ने कहा की आप सबों के अथक परिश्रम और प्रयास से हमें यह जीत मिली है और हम क्षेत्रवासियों तथा अपने समर्थको के भरोसे को कभी कमजोर नही होने देंगे। सांसद डा ठाकुर ने खुद को भाजपा का एक साधारण कार्यकर्ता तथा दरभंगा लोकसभा का बेटा बताते हुए कहा की इस चुनाव में उनको हराने के लिए धनबल बाहुबल तथा जाति और धर्म का उपयोग किया गया लेकीन उनके साथ पीएम नरेंद्र मोदी का चेहरा कार्यकर्ताओ का विश्वास तथा दरभंगा की जनता का आशिर्वाद साथ था जिसके कारण उनकी इतना बरी जीत हुइ है। सांसद डा ठाकुर ने खुद को भाजपा का सच्चा सिपाही तथा यहां की जनता का सेवक बताते हुए कहा दरभंगा के विकास को राष्ट्रीय मनचित्र पर स्थापित करना उनकी पहली प्राथमिकता है जिसको पुरा किए बीना वे चैन से नहीं बैठेंगे। इस अवसर पर प्रेम मिश्रा रिंकू, पिंटू झा, सुजीत मलिक, राजा झा, रविशंकर पासवान, रजनीश झा, रजनीश सुंदरम, रामग्या चौधरी, विकाश विवेक चौधरी, संतोष झा, राजा झा, सौरव सुमन, नेहरू आदि।

बिना टिकट यात्रियों पर रेलवे की कड़ी नजर, एक दिन में पकड़े गये कुल 12 हजार 500 यात्री

प्रात :किरण संवाददाता

हाजीपुर । ट्रेनों में बिना टिकट अथवा अनियमित यात्रा करने वाले यात्रियों की धर-पकड़ हेतु पूर्व मध्य रेलवे द्वारा विशेष टिकट जांच अभियान चलाया जा रहा है । यह जांच अभियान स्टेशन के साथ-साथ ट्रेनों में भी सघन रूप से जारी है । इसी क्रम में अवैध रूप से वातानुकूलित श्रेणी में यात्रा करने वाले यात्रियों के विरूद्ध भी जांच अभियान चलाया जा रहा है । इसी क्रम में आज दिनांक 18.06.2024 को पाँचों मंडलों दानापुर, सोनपुर, समस्तीपुर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं धनबाद में एक साथ विशेष टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया। इस जाँच अभियान में पूर्व मध्य रेल के महत्वपूर्ण स्टेशनों पर रेलवे अधिकारियों, पर्यवेक्षकों, रेलकर्मियों, टी०टी०ई० एवं भारी मात्रा में रेलवे सुरक्षा बल कर्मियों को तैनात किया गया। सभी महत्वपूर्ण मेल-एक्सप्रेस ट्रेनों यथा 12365 पटना-रांची जनशताब्दी, 12321 हावड़ा-मुंबई मेल, 12801/02 पुरूषोत्तम एक्सप्रेस, 11447 जबलपुर-हावड़ा शक्तिपुंज एक्सप्रेस, 13351 धनबाद-एल्लेपी एक्सप्रेस, 13024 गया-हावड़ा एक्सप्रेस, 11060 जयनगर-एलटीटी पवन एक्सप्रेस के वातानुकूलित कोचों की विशेष रूप से जाँच की गयी। इन वातानुकूलित श्रेणी के कोचों की जांच में कुल 450 बेटिकट/अनियमित यात्रियों को पकड़ा गया जिनसे जुमार्ने के रूप में 03 लाख 15 हजार रुपए वसूले गए । इसके साथ ही सभी पैसेंजर ट्रेनों एवं मेमू ट्रेनों में भी विशेष टिकट जाँच की गयी एवं बेटिकट यात्रियों को पकड़ा गया। यह विशेष टिकट जाँच अभियान पूरे दिन चलाया गया। इस जाँच अभियान में कुल 12 हजार 500 बेटिकट/अनियमित यात्रियों को पकड़ा गया जिनसे जुमार्ने के रूप में 95 लाख 55 हजार रुपए वसूले गए। विदित हो कि पूर्व मध्य रेल के पांचों मंडलों में बिना टिकट अथवा बिना उचित प्राधिकार के साथ यात्रा करने वाले यात्रियों की धरपकड़ हेतु निरंतर टिकट जांच की जा रही है तथा भविष्य में भी यह जारी रहेगी । पूर्व मध्य रेल यात्रियों से अपील करती है कि वे हमेशा उचित यात्रा टिकट लेकर ही यात्रा करें ।

संक्षिप्त खबरें

जदयू सांसद देवेशचंद्र ठाकुर इस्तीफा दें : भाकपा

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने सीतामढ़ी से जदयू सांसद देवेशचंद्र ठाकुर के बयान की तीखी निंदा करते हुए सांसद पद से इस्तीफे देने की मांग की है। जदयू सांसद का बयान संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति के आचरण के विपरीत और समाज में उन्माद पैदा करने वाला है। देवेश चंद्र ठाकुर ने अपने बयान में कहा है किकुशवाहा, यादव और मुसलमान का काम नहीं करूँगा,क्योंकि इन्होंने वोट नहीं दिया। कुशवाहा समाज के लोग स्वार्थी हो गए। यह बयान घोर आपत्तिजनक है। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि देवेश चंद्र ठाकुर भाजपा नेताओं को खुश करने के लिए इस तरह का बयान दे रहे हैं। इसका बयान पूरी तरह अलोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्षता केखिलाफ है। प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, सांसद और विधायक चुनाव जीत जाने के बाद पूरे सामाज के होते हैं और शपथ भी किसी से भेदभाव नहीं करने का लेते हैं, लेकिन लोकसभा सदस्य का शपथ लेने से पहले ही देवेशचंद्र ठाकुर ने संविधान और लोकतांत्रिक व्यवस्था के विपरीत बयान दिया है। इसलिए देवेशचंद्र ठाकुर तत्काल प्रभाव से सांसद पद से इस्तीफा दें।

सांसद देवेश चंद्र ठाकुर की अभिव्यक्ति जाति आधारित प्रतिशोध और दुर्भावना से प्रेरित है : निखिल

पटना। भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ निखिल आनंद ने कहा है कि जदयू सांसद देवेश चंद्र ठाकुर की अभिव्यक्ति जाति आधारित प्रतिशोध, हताशा और दुर्भावना से प्रेरित है जो राजनीति में शर्मनाक और निंदनीय है। भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ निखिल आनंद ने कहा है कि सांसद देवेश चंद्रठाकुर की अभिव्यक्ति भेदभावपूर्ण है क्योंकि राजनीति में जाति आधारित दुर्भावना शर्मनाक और निंदनीय है. देवेश चंद्र ठाकुर का बयान जाति आधारित प्रतिशोध, हताशा और दुर्भावना से प्रेरित है. भाजपा सभी समुदायों की पार्टी है और हम समाज के सभी वर्गों का वोट और समर्थन लेने के साथ-साथ सभी लोगों के कल्याण के लिए काम करने में विश्वास करते हैं। निखिल ने कहा कि राज्य की आबादी का 14 फीसदी हिस्सा यादव समुदाय को नजरअंदाज कर किसी भी राजनीतिक दल या बिहार राज्य का भला नहीं हो सकता है। हम यादवों या किसी भी ओबीसी समुदाय को हाशिए पर रखने और उपेक्षा एवं प्रताड़ित करने के किसी भी भावना का विरोध करते हैं। आज केंद्र सरकार में ओबीसी समुदाय से 27 मंत्री हैं, जबकि यादव समुदाय से 4 मंत्री हैं, जो सामाजिक समरसता और सामाजिक न्याय की राजनीति के प्रति पीएम नरेंद्र मोदी जी के संकल्प और प्रतिबद्धता को साबित करता है।

प्रतिभावान व्यक्तियों की राजद-कांग्रेस में कोई पूछ नहीं : विजय

राजतंत्र की तरह एक ही परिवार की गुलामी के लिए मजबूर हैं नेता और कार्यकर्ता

- विधायक और सांसद क्षेत्र के सभी लोगों का करते हैं प्रतिनिधित्व, बयान का भाव समझने की जरुरत
- विकसित भारत और विकसित बिहार बनाने के लिए सभी करें नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार का सहयोग।

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा है कि राजद और कांग्रेस जैसी पारिवारिक दलों में प्रतिभावान नेताओं और कार्यकर्ताओं की कोई पूछ नहीं है। विधानसभा परिसर में मंगलवार को मीडिया के सवालों का वे जवाब दे रहे थे। श्री सिन्हा ने कहा कि इन दलों का स्वभाव बदलने वाला नहीं है। सजायाफ्ता और जमानत पर चल रहे लोगों की चरणवंदना के लिये नेताओं औरकार्यकर्ताओं को मजबूर किया जा रहा है।राजतंत्र की तरह इन दलों में एक ही परिवार के आगे पीछे घूमते रहने और इनका सही गलत में हामी भरने की नियति बन गई है।भ्रष्टाचारी, अपराधी और माफियाओं की इन दलों में पौ बारह हैं। फलस्वरूप इनके समर्थकों का भी दोहन होता है। श्री सिन्हा ने कहा कि जदयू के सांसद के वयान का भाव समझे बिना विपक्षी हाय तौबा करने लगे।राज्य की जनता अवगत है कि मोदी जी और नीतीश जी के द्वारा किए जा रहे विकास कार्य जन जन तक पहुंच रहा है।इसमें जात-धर्म के आधार पर कोई विभेद नहीं है।

सांसद और विधायक भी अपने क्षेत्र की जनता की सेवा के लिए प्रतिवद्ध रहते हैं।एन डी ए में सबका साथ सबका विकास के मोड में काम किया जाता है। श्री सिन्हा ने राज्य की जनता से अपील की है कि विकसित भारत और विकसित बिहार बनाने के लिए सबको नरेन्द्र मोदी और नीतीश कुमार का साथ देना चाहिए।

युवाओं के हाथों में कलम की जगह कट्टा थमाने वाले नौकरियों पर बोल रहे झूठ : राजीव रंजन

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि अपने राज में बिहार के युवाओं के हाथों में कलम की कट्टा थमवा देने वाली राजद के युवराज का नीतीश सरकार की नौकरियों पर लगातार झूठ बोल रहे हैं। गरीबों से उनकी जमीनें लिखवा कर चौथे दर्जे की नौकरी देने वाले युवराज को यह तक नहीं पता कि शिक्षकों की बहाली के फाइल पर उनके मंत्री के दस्तखत तक नहीं हैं। हकीकत में इन्हें खोखली बयानबाजी के अतिरिक्त कुछ आता-जाता नहीं, केवल अपने माता-पिता के शासनकाल की कालिख पोछने के लिए यह नीतीश सरकार के कामों का श्रेय लेने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजद का इतिहास गवाह है इनके राज में युवा नहीं बल्कि अपराधी फले-फूले हैं। अपने कुशासन से इन्होने रंगदारी और अपहरण को उद्योग जैसा बना दिया था। बिहार के युवाओं के हाथों में इन्होने किताबों की जगह कट्टा थमा दिया था। ज्ञान की भूमि कहे जाने वाला बिहार इनके जंगलराज में अपराधियों का स्टार्ट अप हब बन गया था। आज भी यदि इन्हें मौका मिले तो यह फिर से अपराध की यूनिवर्सिटी बना कर युवाओं को लूट-खसोट की ट्रेनिंग देने लगेंगे। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि इसके अलावा घोटाला और भ्रष्टाचार इनके दूसरे प्रमुख सेक्टर हैं, जिनपर इनका खुद का कॉपीराइट है। अलकतरा से लेकर चारा तक डकार जाने वाली इस पार्टी के युवराज खुद नाबालिग रहते हुए ही इन विषयों में पीएचडी कर चुके हैं। मौका मिलने पर यह नौकरी करने वाले बिहार के युवाओं को भी इसकी ट्रेनिंग देकर अपने भ्रष्टाचार का हिस्सेदार बना सकते हैं। हकीकत में जंगलराज के युवराज जानते हैं कि बिहार की जनता उनकी पार्टी की असलियत जानती है और दोबारा उन्हें चुनने की गलती नहीं करने वाली। इसीलिए कभी वह नीतीश सरकार के कामों का सेहरा अपने माथे बांधने लगते हैं तो कभी नौकरियों की बात कर के युवाओं को झांसा देने लगते हैं। उन्हें समझ जाना चाहिए कि जनता उनका खेल जानती है। उनके बहकावे में कोई नहीं आने वाला।

नालों के अतिक्रमण पर रहेगा जीरो टॉलरेंस

जलनिकासी के लिए अलर्ट मोड पर है पटना नगर निगम की टीम

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। पटना नगर निगम द्वारा जलनिकासी के लिए लगातार अलर्ट मोड पर काम कर रहा है। एक तरफ नालों की उड़ाही पुर्ण की जा चुकी है वहीं मॉक ड्रील के माध्यम से जमीनी स्तर पर आने वाली समस्याओं को भी दूर किया जा रहा है। इसी क्रम में मंगलवार को पटना नगर निगम की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। उप महापौर की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र अंचल एवं नूतन राजधानी अंचल के माननीय पार्षदों द्वारा मैनहॉल, कैचपीट एवं नाला से संबधित मुद्दों पर वार्ड वार चर्चा की गई।

बेहतर हुई है नाला उड़ाही- उप महापौर : उप महापौर रेशमी कुमारी द्वारा पदाधिकारी का मनोबल बढ़ाते हुए कहा गया कि नाला उड़ाही ससमय और बेहतर हुई है।* आगे भी टीम को अलर्ट मोड पर रहना होगा जिससे ससमय जल निकासी सुनिश्चित की जाए।

नालों पर अतिक्रमण पर रहेगा जीरो टॉलरेंस : नगर आयुक्त

नगर आयुक्त द्वारा शहर के नालों मानसून में जीरो टोलरेंस के साथ अतिक्रमण हटाने का निर्देश सभी पदाधिकारियों को दिया। नेहरू पथ, पारस हॉस्पिटल, सिटी सेन्ट्रल मॉल के पास एवं अन्य सभी जगहों पर से अतिक्रमण हटाने का निर्देश दिया। इसके साथ ही माननीय पार्षद के साथ स्थल निरीक्षण करने एवं समस्याओं को दूर करने का निर्देश भी पदाधिकारियों दिया गया ।

अलर्ट मोड पर है क्यूआरटी:

पटना नगर निगम द्वारा क्विक रिस्पॉस टीम (क्युआरटी) का निर्माण किया जा चुका है। यह टीम वर्षा होने के साथ ही दो घंटे के अंदर जलनिकासी* सुनिश्चित करेगी। गाड़ी में जलनिकासी के सभी उपकरण मौजूद रहेंगे।

वॉकी टॉकी से रहेंगे कनेक्ट :

पटना नगर निगम की टीम वॉकी टॉकी से कनेक्टेड है। वर्षा होते ही सभी एक दूसरे से कनेक्ट रहेगें और किसी तरह की जलनिकासी की समस्या का त्वरित निष्पदन करेंगे।

बैठक में सशक्त स्थाई समिति के सदस्य डॉ. आशीष सिन्हा, इंद्रदीप चंद्रवंशी, मुन्ना जयसवाल, पाटलिपुत्र अंचल एवं नूतन राजधानी अंचल के माननीय वार्ड पार्षद ने अपने सुझाव दिए। इसके साथ ही अपर नगर आयुक्त, कार्यपालक पदाधिकारी, कार्यपालक अभियंता एवं नगर निगम के पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

जिन्होंने आजादी की लड़ाई नहीं देखी वे देख रहे भाजपा सरकार में गुलामी की प्रक्रिया : डा अखिलेश

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जिन्होंने आजादी की लड़ाई नहीं देखी वे भाजपा सरकार में गुलामी की प्रक्रिया देख रहे हैं। राष्ट्रभक्ति का स्वांग भरने वालों को मैं कहना चाहता हूँ कि स्वतंत्रता सेनानियों की जिन्दगी से सीख लेकर इसकी परिभाषा को समझें और अनुकरण करें। बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह ने बिहार विभूति डा अनुग्रह नारायण सिंह की 136वीं जयन्ती के अवसर पर ये बातें कही। वे पार्टी मुख्यालय सदाकत आश्रम में मंगलवार को आयोजित महान स्वतंत्रता सेनानी एवं बिहार के प्रथम वित्तमंत्री अनुग्रह बाबू के जयन्ती समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अनुग्रह बाबू उन बिरले विभूतियों में थे जिन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई भी लड़ी और आजादी के बाद राष्ट्र निर्माण में अपना अनूठा योगदान दिया। बिहार के प्रथम वित्तमंत्री के तौर पर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री डा श्रीकृष्ण सिंह के साथ आधुनिक बिहार की पटकथा लिखी। डा सिंह ने कहा कि अनुग्रह बाबू स्पष्ट वक्ता थे तथा सादा जीवन उच्च. विचार की प्रतिमूर्ति थे। उनका दरबाजा गरीबों, पिछड़ों तथा असहायों के लिये हमेशा खुला रहता था।

उन्होंने कहा कि अनुग्रह बाबू स्वतंत्रता आन्दोलन के संग्राम में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में डा राजेन्द्र प्रसाद, स्व ब्रजकिशोर प्रसाद, मौलाना मजहरूल हक, डा श्रीकृष्ण सिंह जैसे नेताओं के साथ कंधे-से-कंधे मिलाकर देश की स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी। आज कृतज्ञ राज्य अनुग्रह बाबू के योगदान को स्मरण कर उनके चरण में शत-शत नमन कर रहा है।

इसके पूर्व डा अनुग्रह नारायण सिंह के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। जयन्ती समारोह में कांग्रेस विधान परिषद दल के नेता डा मदन मोहन झा, डा समीर कुमार सिंह, लाल बाबू लाल,आनन्द माधव, दिनेश कुमार, उदय शंकर पटेल, प्रदुमन कुमार, राहुल पासवान, सुदय शर्मा, विश्वनाथ बैठा, राजनन्दन कुमार,राज छविराज, निधि पाण्डेय, अमित यादव, मो अबदुल बाकी, संतोष कुमार, सत्येन्द्र सिंह, मृत्युंजय कुमार सिंह ने भी भाग लिया एवं अनुग्रह बाबू को श्रद्धांजलि अर्पित की।

युवाओं को बड़ी संख्या में नौकरी और रोजगार देना नीतीश कुमार की पहली प्राथमिकता : विजय

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। वित मंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि जनता के आशीर्वाद से वर्ष 2020 में जब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनी तब हमनें सात निश्चय पार्ट-2 के तहत अपने तय कार्यकर्मों की रूपरेखा जनता के सामने रखी थी। खासतौर पर युवाओं से जुड़े समस्याओं पर हमारी सरकार ने विशेष जोड़ दिया था और उनके नौकरी व रोजगार के लिए विस्तृत कार्ययोजना बनाई। जदयू प्रदेश कार्यलय में जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया।

इस अवसर पर मंत्री ने कहा कि विपक्षी पार्टियां कुछ भी दावे करती रहे लेकिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने नौकरियों से जुड़ें विभागवार प्रमाणिक आँकड़े जारी कर यह साबित कर दिया कि युवाओं के हित में काम करना नीतीश सरकार की पहली प्राथमिकता है।उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा सात निश्चय पार्ट-2 के तहत अब तक 5 लाख 16 हजार से अधिक सरकारी नौकरियां दी गई है, 1 लाख 99 हजार पदों के लिए नियुक्ति की तमाम प्रक्रियाएं पूरी हो चुकी है अब सिर्फ नियुक्ति पत्र वितरण होना बाकी है, सरकार द्वारा विभिन्न आयोगो को 2 लाख 11 हजार नए नियुक्ति की अधियाचना भेजी जा चुकी है, इसके आलवे हमारी सरकार अगले 1 वर्ष में लगभग 3 लाख पदों पर नियुक्ति करेगी। बिहार की जनता से हमनें जो वादे किए थे उसे ससमय पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है और हमारी सरकार के ईमानदार प्रयासों का नतीजा है कि हमनें तय लक्ष्य से बेहतर परिणाम हासिल किए हैं।

श्री विजय कुमार चैधरी ने कहा कि वर्ष 2020 में जब एनडीए की सरकार बनी तभी से युवाओं को नौकरी देने का सिलसिला निरंतर चल रहा है। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि किसी खास समयावधि में नौकरी दी गई, यह प्रक्रिया सतत रूप से जारी है एवं आने वाले एक वर्ष में हम इसे और अधिक मुस्तैदी से करेंगे।

उन्होंने कहा कि जो भी नियुक्तियाँ हुई है वह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सकारात्मक पहल और दृढ़ संकल्प का परिणाम है, किसी अन्य को इसका श्रेय लेने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि प्रदेश की जनता हकीकत से वाकिफ है। इस मौके पर पार्टी के विधानपार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी जी, पार्टी के मुख्य प्रवक्ता सह विधानपार्षद नीरज कुमार, विधानपार्षद सह कोषाध्यक्ष ललन कुमार सर्राफ, विधायक विनय कुमार चौधरी, प्रदेश प्रवक्ता अभिषेक झा एवं प्रो नवीन आर्या मौजूद रहें।

बिना काम किए झूठा श्रेय लेने के लिए व्याकुल है विपक्ष : उमेश

पटना। प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सिर्फ काम में विश्वास रखते हैं लेकिन विपक्षी पार्टियां बेगैर किसी काम के झूठा श्रेय लेने के लिए व्याकुल रहती है। नीतीश सरकार द्वारा वर्ष 2020 में सात निश्चय पार्ट-2 के तहत 10 लाख सरकारी नौकरी और 10 लाख रोजगार देने का वादा किया गया था। आज हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि सरकारी नौकरी देने के मामलें में हमारी सरकार 12 लाख के आँकड़े तक पहुँचने वाली है और रोजगार के क्षेत्र में यह आंकड़ा लगभग 22 लाख तक जाएगा यानी किए गए वादे से भी दोगुना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सीमित संसाधनों के बावजूद भी बिहार की प्रगति को नई गति दी है।

कांग्रेस नेता अजीत ने ली पीके से जन सुराज की सदस्यता

प्रात : किरण संवाददाता

पटना । पश्चिम चंपारण के लौरिया विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और समाजसेवी अजीत नाथ तिवारी के नेतृत्व में आज सैकड़ों समर्थकों ने जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर के समक्ष जन सुराज की सदस्यता ग्रहण की। धमौरा पंचायत के बौद्ध टोला लछनौता गांव निवासी श्री तिवारी पूर्व में कांग्रेस से जुड़े रहे हैं। श्री तिवारी पश्चिम चंपारण जिला कांग्रेस कमिटी में जिला असंगठित किसान कामगार यूनियन के वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं । वे कांग्रेस की सदस्यता से इस्तीफा देकर प्रशांत किशोर के नेतृत्व में जन सुराज के संस्थापक सदस्य बन गये है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बिहार के हित के लिए जन सुराज के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। कांग्रेस नेतृत्व ने बिहार को अपनी बदहाली पर छोड़ राजद के हवाले कर दिया है जिसे अब स्वीकार नहीं किया जा सकता।उनके साथ शामिल होने वालों में अनुप रंजन पाण्डेय, लाल बाबू यादव, सचिन्द्र कुमार पाण्डेय, दीनानाथ पटेल, मनोज बारी, प्रवीण तिवारी, अरुण पासवान, प्रकाश चौधरी, सुभाष चौधरी, मधु पासवान,रामनाथ पटेल, एजाजुल अंसारी, नसीम अंसारी,नथुनी अंसारी, संतोष तिवारी, विश्वजीत तिवारी, नवीन तिवारी आदि सैकड़ों समर्थक शामिल थे। मौके पर चंपारण के संगठन प्रभारी व पूर्व आईएएस अधिकारी अजय कुमार द्विवेदी, प्रदेश मुख्य प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय कुमार ठाकुर भी मौजूद थे।

प्रकृति से जुड़िये, निरोग रहेंगे : डॉ सरला

- बीमारियों से बचाव में सूर्यकिरण जरूरी : डॉ खादिर
- मिलेट्स की खेती को बढ़ावा देगी सरकार : मंगल

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। देश की जानी - मानी खाद्य विशेषज्ञ डॉ सरला बैंगलोर ने कहा कि हम प्रकृति से जितना करीब रहेंगे उतना ही निरोग रहेंगे। डॉ सरला आज यहाँ रवीन्द्र भवन में आयोजित तीन दिवसीय मिलेट्स महोत्सव के समापन सत्र को संबोधित कर रही थीं। इस समारोह का आयोजन डॉ आर के सिन्हा के अवसर ट्रस्ट के बैनर तले किया गया।

डॉ सरला ने कहा कि खराब खान - पान के कारण समाज में नपुंसकता बढ़ रही है। हार्मोनल इन बैलेंस के लिए हम खुद जिम्मेदार हैं। छोटे मिलेट्स कुटकी, कंगनी, रागी का उपयोग कर हम हार्मोनल इन बैलेंस को दूर कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि दूध हमारी सेहत के लिए बहुत जरूरी है लेकिन दिक्कत यह है कि हमें शुद्ध दूध ही सुलभ नहीं हो पा रहा है। हम गायों में स्टोरायड का इंजेक्शन लगाकर जहरीला दूध पीने के अभ्यस्त हो गये हैं। यहाँ तक की हम नवजातों को भी बाजार का जहरीला और पाउडर का दूध पिलाकर भावी पीढ़ी को बीमार बना रहे हैं। नवजातों के लिए मदर मिल्क का कोई विकल्प नहीं है।

उन्होंने कहा कि बाजार में शुद्ध दूध उपलब्ध नहीं होने के कारण अब जरूरी हो गया है कि हम प्लांट दूध की तरफ कदम बढ़ाएं। विकल्प के रूप में बाजरा, मूंगफली, तिल और नारियल का दूध हमारे स्वास्थ्य के लिए हितकर है। नवजातों के लिए नारियल का दूध अमृत के समान है। प्लांट मिल्क से पनीर, खीर और मिठाई भी बनाई जा सकती है। डॉ सरला ने कहा कि बच्चों को चॉकलेट, स्ट्राबेरी मिला दूध कभी नहीं पिलाना चाहिए। उसमें केमिकल मिला होता है जो बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को खराब कर सकता है। धीरे - धीरे हमें चाय - कॉफी की आदत भी छोड़नी ही होगी। तभी हम स्वस्थ रह पायेंगे।

उन्होंने कहा कि भौतिक तड़क - भड़क के लिए हम प्रकृति से दूर होते चले गए। अपनी अच्छी जीवन शैली को छोड़कर बिना अक्ल लगाये पाश्चात्य संस्कृति की नकल करके हमने अपनी शक्ल बिगाड़ ली है। पानी के बरतन में तांबा की प्लेट रखने अथवा तांबा के बरतन में पानी पीने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। वह पानी में मिले प्लास्टिक के असर को खत्म करता है। इससे पहले मिलेट्स मैन के नाम से प्रसिद्ध डॉ खादिर वली ने कहा कि बीमारियों से बचाव में सूर्यकिरण सर्वाधिक जरूरी है। अगर आप को स्वस्थ रहना है तो सूर्य नमस्कार की आदत डालिए। सुबह - सुबह सूर्य नमस्कार करने से कई बीमारियों से छुटकारा मिलेगा। हजारों साल पहले हमारे पूर्वज यही करते थे। उन्होंने कहा कि नींद और आहार भी हमारे लिये उतनी ही जरूरी है। बेहतर जीवन जीने के लिए हमें अपनी जीवन शैली बदलनी होगी। विदेशियों ने हमारा खाना और पाखाना दोनों खराब कर दिया है।

समारोह की अध्यक्षता पूर्व सांसद आर के सिन्हा ने की। मंच संचालन अवसर ट्रस्ट के सीईओ अनुरंजन श्रीवास्तव ने किया। समारोह में लकी ड्रॉ द्वारा कुछ चयनित प्रतिभागियों को कृषि मंत्री मंगल पाण्डेय और आर के सिन्हा द्वारा सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कृषि मंत्री ने कहा कि बिहार सरकार मिलेट्स की खेती के विकास में हरसंभव सहयोग करेगी। कार्यक्रम के आयोजन में कृषि विभाग, एसआईएस ग्रुप, एसीएफएल, आद्या ऑर्गेनिक, इंडियन पब्लिक स्कूल देहरादून और संगत - पंगत ने सहयोग दिया। आखिर में प्रख्यात भोजपुरी गायिका मनीषा श्रीवास्तव ने अपने मिलेट्स गीत और ' जगदम्बा घर में दियरा बार अइलीं हो... , चारों दूलहा में बड़का कमाल सखिया... गाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

खाटू श्याम के भण्डारे में लोगों ने किया प्रसाद ग्रहण

पटना। श्री खाटू श्याम पधारो पटना धाम के बैनर तले आयोजित प्रत्येक एकादशी द्वादशी के संध्या सातवीं बार देवी स्थान जहाजी कोठी कदमकुआं के समीप भंडारा का आयोजन किया गया। भण्डारे में करीब दो हजार से अधिक भक्तों ने प्रसाद ग्रहण कर पुण्य प्राप्त किया। एकादशी के अवसर पर इस भण्डारे में प्रसाद ग्रहण के लिए भक्तों का तांता लगा रहा। भण्डारे में भक्तगण पूरे श्रद्धा से पूरी, कचौरी, सब्जी, बुँदिया आदि का प्रसाद श्याम भक्तों से ग्रहण कर रहे थे। मौके पर माँ वैष्णव सेवा समिति के सचिव कन्हैया अग्रवाल ने बताया कि प्रत्येक माह के एकादशी को श्याम भण्डारे का आयोजन किया जा रहा है। एम पी जैन ने बताया कि प्रसाद बाँटने में श्याम भक्त आनन्द डालमिया, मुकेश हिस्सारिया , पवन शर्मा, जीतेंद्र कुमार जीतू, सचिन डालमिया, अनुज गुप्ता, गोपी मित्तल, अनंत अगरवाल, अजय शर्मा, नंद किशोर अग्रवाल, सज्जन चौधरी, पंकज अग्रवाल, गौरव शर्मा आदि लगे हुए थे।

धूमधाम से मनेगा राहुल गांधी का जन्म दिवस

पटना। कांग्रेस नेता एवं सुपौल से पूर्व प्रत्याशी मिन्नत रहमानी ने कहा है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी का जन्मदिवस बुधवार को 11:30 बजे दिन में बसबिट्टी रोड सुपौल स्थित मेरे आवासीय कार्यालय पर मनाया जायेगा। इस अवसर पर समाज सेवा में लगे कुछ प्रबुद्धजनों को अंग वस्त्र से सम्मानित किया जाएगा ।

बिहार में लू से 25 लोगों की मौत

पटना। बिहार के पांच जिलों में मंगलवार को लू से 25 लोगों की मौत की सूचना है। जबकि 50 से अधिक लोग विभिन्न अस्पतालों में भर्ती कराए गए हैं। रोहतास व औरंगाबाद में सात-सात, गया में तीन, जहानाबाद में दो, आरा में चार, शेखपुरा व बक्सर में एक-एक व्यक्ति की मौत की सूचना है। स्वजन लू से मौत बता रहे हैं। खड़गपुर से गया जंक्शन पहुंचे सीआरपीएफ जवान शिवपाल सिंह अचानक अचेत होकर गिरे और उनकी मौत हो गई। मंगलवार को पटना समेत 13 जिलों के अधिकतम तापमान में वृद्धि दर्ज की गई। पटना के अधिकतम तापमान में पांच डिग्री वृद्धि के साथ 42.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

भवन निर्माण विभाग
बिहार सरकार
कार्यपालक अभियंता, पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना का कार्यालय
अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं0-07 वर्ष 2024-25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : कार्यपालक अभियंता, पाटलीपुत्र भवन प्रमंडल, पटना।
2. परिमाण-विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय : दिनांक-23.07.2024 को 12.00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा प्राप्ति कि तिथि एवं समय : दिनांक-25.07.2024 को 3:00 बजे अपराह्न तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक-25.07.2024 को 3.30 बजे अपराह्न से।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : (क) अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, दक्षिण बिहार अंचल, भ0नि0वि0, पटना। (ख) कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना। (ग) संबंधित भवन अवर प्रमंडल का कार्यालय, पटना।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान : क्रमांक (5) पर वर्णित स्थान पर।
7. कार्य का विवरणी :

क्रम सं	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य (ओ0ग्रास)	कार्य समाप्ति की अवधि
1	2	3	4	5	6
1	Renovation of store room guest room with WPC board in Residence No. -A3/6 at Nehru Path Patna for the year 2023-24	1450800.00	29000.00	2500.00	1 month
2	S/R to G.O. flat no. -G/6, W/2 and D/6 at punaichak patna for the year 2024-25	900000.00	18000.00	1250.00	1 month

विस्तृत जानकारी state.bihar.gov.in/prdbihar से प्राप्त की जा सकती है।
PR- 001967 (BCD) 2024-25
कार्यपालक अभियंता
पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना
नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार

भवन निर्माण विभाग
बिहार सरकार
कार्यपालक अभियंता,
पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना का कार्यालय
अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं०-06 वर्ष 2024-25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : कार्यपालक अभियंता, पाटलीपुत्र भवन प्रमंडल, पटना।
2. परिमाण-विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय : दिनांक-20.07.2024 को 12.00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा प्राप्ति कि तिथि एवं समय : दिनांक-22.07.2024 को 3:00 बजे अपराह्न तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक-22.07.2024को 3.30 बजे अपराह्न से।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : (क) अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, दक्षिण बिहार अंचल, भ0नि0वि0, पटना। (ख) कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना। (ग) संबंधित भवन अवर प्रमंडल का कार्यालय, पटना।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान : क्रमांक (5) पर वर्णित स्थान पर।
7. कार्य का विवरणी

क्रम सं	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य (ओ0ग्रास)	कार्य समाप्ति की अवधि
1	2	3	4	5	6
1	Renovation and PH work in 96 Officer's flat No. -A3/7 at Nehru Path, Patna for the year 2023-24	1190600.00	24000.00	2500.00	1 month
2	S/R to 84 Officer's set flat no. -41,42, 44,45 and 46 at punaichak patna for the year 2024-25	1400000.00	28000.00	2500.00	1 month

निविदा की विस्तृत जानकारी www.state.bihar.gov.in/prdbihar पर देखें।
PR. No.001970 (BCD) 2024-25
कार्यपालक अभियंता
पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना
नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार।

संक्षिप्त खबरें

शराब संग दो बाइक के साथ तस्कर गिरफ्तार

मधुबनी हरलाखीसाहरघाट थाना पुलिस ने 90 लीटर शराब व दो बाइक के साथ दो तस्कर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार दोनों शराब तस्कर की पहचान साहरघाट थाना क्षेत्र के रेमा गांव निवासी कामेश्वर कुमार, संजय कुमार के रूप में बताया गया है। साहरघाट थानाध्यक्ष अरविंद कुमार ने बताया गिरफ्तार दोनों शराब तस्कर को न्याय की हिरासत में जेल भेजा गया है।

एईएस का एक मरीज मिला

मुजफ्फरपुर आज एईएस का एक मरीज फिर पाया गया। शहरी क्षेत्र ब्रह्मपुरा की रौनक खातून, 4 बर्ष में एईएस की पुष्टि हुई है। अबतक एसकेएमसीएच मुजफ्फरपुर में कुल 34 एईएस पीड़ित मरीजों का इलाज हुआ, जिसमे मुजफ्फरपुर के कुल 20 मरीज हैं। शेष अन्य जिलों से है। सभी मरीज स्वस्थ्य हो कर अपने घर जा चुके हैं।

यौन शौषण का मुख्य आरोपी गिरफ्तार

मुजफ्फरपुर। नौकरी का झांसा देकर लड़कियों से यौन शोषण करने के मामले में पुलिस ने मुख्य आरोपी तिलक प्रसाद सिंह को गिरफ्तार कर लिया है। उसको पुलिस ने गोरखपुर से गिरफ्तार किया है। इस मामले में एक पीड़िता की शिकायत पर कुल 9 लोगों को आरोपी बनाया गया है जिसमें तिलक प्रसाद सिंह मुख्य आरोपी है।पुलिस फिलहाल मुख्य आरोपी तिलक प्रसाद सिंह को कस्टडी में लेकर उससे पूछताछ कर रही है। सिटी एसपी अवधेश सरोज दीक्षित ने मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी की पुष्टि की है। उन्होंने कहा है कि पुलिस पीड़िता द्वारा लगाए सभी आरोपों की गहनता से जांच कर रही है। रिपोर्ट के मुताबिक इसी लड़के की तस्वीर पीड़िता के साथ वायरल हुई थी। एक तस्वीर में आरोपी पिस्टल के साथ भी नजर आ रहा था। हालांकि पुलिस अभी पिस्टल बरामद नहीं कर पाई है।

बघांत मध्य विद्यालय में हुई कंप्यूटर की चोरी

मनीगाछी(दरभंगा)। प्रखंड क्षेत्र के बघांत गांव स्थित मध्य विद्यालय में कंप्यूटर के प्रिंटर,यू पी एस एवं बैट्री सहित अन्य सामानों की चोरी अज्ञात चोरों द्वारा कर ली गई है। कंप्यूटर के सामानों की चोरी होने की जानकारी मंगलवार को विद्यालय खुलने पर प्रधानाध्यापक को हुई। ज्ञात हो कि अत्यधिक गर्मी के कारण सरकार के निर्देश पर विद्यालय में 13 जून से 15 जून शनिवार तक पूर्ण अवकाश घोषित था। 16 को रविवार एवं 17 को बकरीद पर्व को लेकर छुट्टी थी। 18 जून मंगलवार को विद्यालय खुलने पर विद्यालय पहुंचे प्रधानाध्यापक ने कंप्यूटर रूम की किवार को क्षतिग्रस्त देखकर शिक्षकों एवं पंचायत के मुखिया को बुलाकर कमरे को खोला तो कंप्यूटर के सामान गायब पाए गए।इस संबंध में विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक सत्येन्द्र कुमार झा ने मनीगाछी थाना में लिखित आवेदन दिया है। थानाध्यक्ष ने आवेदन मिलने की पुष्टि करते हुए जांच कर आगे की कार्रवाई करने की बात बतलाई है। ज्ञात हो कि इससे पहले भी 19 दिसम्बर 2022 एवं 6 सितंबर 2023 को विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने विद्यालय से कम्प्यूटर समानों की चोरी के संबंध में थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई थी।लेकिन उस पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हो सका।

अखबार हॉकर के साथ मारपीट, थाना में दिया आवेदन

विभूतिपुर, समस्तीपुर, मारपीट की घटना को लेकर साखमोहन गंगोली निवासी अखबार हॉकर प्रहलाद कुमार साह ने स्थानीय थाना में एक आवेदन दिया है, जिसमें बताया गया है कि 17 जून की संध्या अखबार बेचकर वापस आ रहे थे तभी गांव के ही विकास साह, बिट्टू साह, दीपक साह,कृष्ण गोपाल, विजय साह सभी मिलकर मारपीट किया, बीच बचाव करने मेरे पिताजी आए उनके साथ भी मारपीट किया, उन्होंने आरोप लगाया है कि घटना के बाद 112 पर डायल किया तो वह भी आया लेकिन मुझे ही गंदा गाली देकर चला गया,

आज के बाद मौसम में बदलाव की संभावना, लोगों को गर्मी से मिलेगी निजात

समस्तीपुर, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा पूसा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के द्वारा मंगलवार को 19 से 23 जून तक का मौसम पूवार्नुमान जारी किया गया, इस पूवार्नुमान के अनुसार उत्तर बिहार के जिलों में हल्की लू की स्थिति बनी रहेगी, हालांकि दो दिनों में इसमें कमी आ सकती है, उसके बाद 20-21 जून को उत्तर बिहार के जिलों के अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है, उसके बाद वर्षा की सक्रियता में हल्की वृद्धि हो सकती है, इस अवधि में अधिकतम तापमान 37-39 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है, जबकि न्यूनतम तापमान 26-29 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है, सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है, पूवार्नुमानित अवधि में औसतन 20 से 25 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है, मंगलवार को अधिकतम तापमान 39 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, वहीं न्यूनतम तापमान 27 डिग्री दर्ज किया गया,

पूर्व केंद्रीय मंत्री ने आवास पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ किया प्रेसवार्ता

पूर्व केंद्रीय मंत्री डा. शकील अहमद ने प्रधानमंत्री पर कई निशाना साधा

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली भारत देश के आम आवाम जनताओ ने लोक सभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अहंकार तोड़ कर भारत की संविधान को बचाने का काम किया है.प्रधानमंत्री जी पाँच वर्ष में बिहार सहित अन्य राज्य में विकास कार्य नही करके अपने गठबंधन को संम्भालते, संम्भालते ही उनका समय गुजर जाएगा.उन्होंने कहा कि अभी भी प्रधानमंत्री अपनी मन से घमंड को हटाकर बेरोजगारी,मंहगाई पर ध्यान देना चाहिये . नही तो अगले पांच वर्ष भारत से नामोनिशान मिट जाएगा.ये बाते मंगलवार को सुक्की गांव स्थित पूर्व केंद्रीय मंत्री अपने आवास पर प्रेसवार्ता के दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री डा. शकील अहमद ने पत्रकार को कहा.उन्होंने कहा कि भारत एक लोक तंत्र देश रहने के बाबजूद भी प्रधानमंत्री जी हीटर जैसे भारत की जनता को संदेश दे रहे थे जो देश की जनताओं की पसंद नही आया. पूर्व केंद्रीय मंत्री डा. शकील अहमद ने प्रधानमंत्री पर आरोप लगाया कि वे धर्म के नाम पर भारत की जनताओं को विखण्डित करने का साजिस रच रहे थे.लेकिन भारत की जनताओं ने इनकी साजिस को समझकर सारा खेल को बिगाड़ दिया गया.उन्होंने कहा कि भारत देश मे 70 प्रतिशत युवा बेरोजगारी की दौड़ से गुजर रहे है.भारत सरकार में केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में लाखों पद खाली पड़ा हुआ है.लेकिन प्रधानमंत्री युवा,युवती बेरोजगार को नोकरी नही देकर निजी कारपोरेट घराने के हाथ बेचने की काम कर रही है.उन्होंने कहा कि यदि देश की शिक्षित युवा, युवतियों को रोजगार मुहैया नही कराते है तो भगवान के नाम पर ,धर्म के नाम यह खेल ज्यादा दिन तक नही चल सकता है. देश की जनता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का सभी चाल समझ गया है.ये सरकार पांच साल आते आते टूट कर बिखर जाएगी. इस मौके पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष मनोज मिश्र, पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष शितलाम्बर झा,प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष उपेंद्र यादव,वरिष्ठ कांग्रेसी नेता व जिप सदस्य दीपक कुमार सिंह,जयनगर प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष सुरेंद्र महतो,सुरेश चंद्र झा रमन,शुशील झा,विशेश्वर झा,राम एकवाल पासवान,अंकित झा,अनुरंजन सिंह,जयनगर प्रखंड के पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष रामचंद्र साह, सदानंद झा,नरेश यादव,कलुआही प्रखंड के पूर्व प्रमुख जीवछ यादव,कुसुम कांत झा,कौशल किशोर झा, मो. तनवीर जक्की सहित अन्य कांग्रेसी कार्यकर्ता मौजूद थे.

शिक्षकों को आदर्श शिक्षक बनने की जरूरत है : अखिलेश मिश्र

डीपीएस कादिराबाद में टीचर्स ट्रेनिंग कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।दिल्ली पब्लिक स्कूल कादिराबाद दरभंगा में शिक्षकों के स्किल डेवलपमेंट हेतु कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत रिसोर्स पर्सन डॉ अखिलेश कुमार मिश्र सहायक निदेशक, डिस्टेंस एजुकेशन डिपार्टमेंट, एल.एन.एम.यू. दरभंगा, विद्यालय के निदेशक शोएब अहमद खान, वरिष्ठ प्राचार्य संजय कुमार झा के द्वारा दीप प्रज्वलन एवं आज के मुख्य अतिथि डॉ मिश्र को मिथिला परंपरा के अनुसार पाग-चादर से सम्मानित करने के बाद हुई । लगभग 6 घंटे के आज के टीचर्स ट्रेनिंग कार्यक्रम में शिक्षकों को उनके शिक्षण कार्य में होने वाले परेशानियां एवं निदान पर चर्चा की गई। शिक्षकों के स्किल डेवलपमेंट हेतु उन्हें अलग-अलग ग्रुप में बांट कर विभिन्न प्रकार के एक्टिविटी करवाया गया। डॉ मिश्र ने शिक्षकों को अनेक तरह के टिप्स के साथ-साथ कंटेंट मैनेजमेंट, छात्रों का इंगेजमेंट एवं उनके मन-मस्तिष्क तक पहुंचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को आदर्श शिक्षक बनने की जरूरत है। हमें बच्चों की आवश्यकताओं को समझना होगा। हमें विश्लेषण करके पता लगाना होगा कि बच्चों की समस्याएं क्या है और उन्हें दूर करने के प्रयास करने होंगे। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्या अनुराधा ने सभी शिक्षकों को आज की ट्रेनिंग टिप्स से लाभ लेते हुए उन्हें स्किल डेवलपमेंट हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम का समापन प्रधानाचार्या के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

अपने अमर्यादित बयान के लिए यादव तथा मुस्लिमों से माफी मांगे सांसद देवेश चंद्र ठाकुर : राकेश ठाकुर

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

सीतामढ़ी के सांसद देवेश चंद्र ठाकुर के द्वारा यादव तथा मुस्लिम समाज के खिलाफ दिये गए बयान की निंदा करते हुए जिला राजद प्रवक्ता राकेश कुमार ठाकुर ने कहा कि यह ह्यमानसिक संतुलन की हानिह्न को दशार्ने के साथ उनके उच्च पद के लिए अशोभनीय है, उन्होंने कहा, ह्यक्या एक सांसद को इस तरह की भाषा का उपयोग करना चाहिए, देवेश चंद्र ठाकुर गरिमा विहीन हो गये हैं, उनका बयान बेहद दुर्भाग्यपूर्ण, अशोभनीय, अमर्यादित व निंदनीय है, सांसद ने अपने पद की मयार्दा तथा गरिमा को कलंकित किया है, राजद प्रवक्ता ने कहा कि ये बहुत शर्म की बात है, जब कोई सांसद बनता है तो वह पूरे क्षेत्र का सांसद होता है, किसी जाति विशेष का नहीं होता है, सांसद के इस तरीके के बयान ओछी मानसिकता का प्रतीक हैं, ऐसे बयान समाज में भेद-भाव पैदा करते हैं, राजद प्रवक्ता ने कहा कि अपने अमर्यादित बयान के लिए सांसद देवेश चंद्र ठाकुर को बिहार के यादव तथा मुस्लिम भाइयों से माफी मांगना चाहिए।

श्रेया की हत्या के दोषियों को फास्ट ट्रैक कोर्ट से सजा दिलाने की मांग : अविनाश सिंह

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद के नवीनगर में बिहार की बेटी श्रेया का अपहरण कर सामूहिक गैंगरेप करके तेजाब से जलाया और फिर नवीनगर इंद्रपुरी के डैम में फेंक दिया। जिला प्रशासन, नेता, मीडिया सब चुप हैं, सरकार, बिहार पुलिस एवं नबीनगर प्रशासन जल्द से जल्द इस हत्याकांड की जांच कर सार्वजनिक करे और दोषियों को फास्ट ट्रैक कोर्ट से सजा दिलवाने का कार्य करे, इसको लेकर समस्तीपुर में इस हत्या के मामले में समाजसेवी दिपक सिंह के नेतृत्व में कैंडल मार्च निकाला गया। सरकार प्रशासन से करणी सेना के जिलाध्यक्ष अविनाश सिंह चंदेल ने निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए दोषियों को फास्ट ट्रैक कोर्ट से फांसी की सजा दिलवाई जाए न्याय मिलने तक सघंष जारी रहेगा, मनीष यादव ने मानवता को शर्मसार करने वाले इस घटना को निष्पक्ष जांच की मांग किए। मौके पर अविनाश सिंह चन्देल, जेके यादव, प्रवीण सिंह, दिपक सिंह, निलेश सिंह, अरविंद यादव, कृष्ण, आशीष, गौरव, विवेक सिंह, राकेश, रौशन सिंह, प्रिंस सिह इत्यादि उपस्थित थे।

पूर्व प्रखंड प्रमुख की अध्यक्षता में विकास कार्यों का किया गया समिक्षा

प्रात : किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)।प्रखंड अंतर्गत उसरी पंचायत के मुखिया पूनम देवी के निजी आवास पर पूर्व प्रखंड प्रमुख बिजल पासवान के अध्यक्षता में प्रखंड अंतर्गत सभी पंचायत के मुखिया एवं पंचायत समिति सदस्यों की संयुक्त बैठक आहूत की गई। बैठक मनरेगा योजना ,15वीं , छठी राज्य वित्त आयोग एवं अन्य विषयों को लेकर की गई बैठक शुरू होते ही उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि सभी मुखिया अपने पंचायत में संविधान द्वारा प्रदत्त 29 विषय की निगरानी जिसमें प्रमुख रूप से विकास कार्यों के अतिरिक्त स्वास्थ्य, शिक्षा, आंगनवाड़ी ,कृषि एवं जन वितरण प्रणाली आदि से जुड़े सभी विभागों की समीक्षा एवं निगरानी करेंगे।वहीं सदस्यों ने आक्रोश व्यक्त करते हुए निर्णय लिया कि प्रखंड में पंचायती राज से जुड़े सभी कर्मियों के मनमानी एवं असहयोगात्मक रवैया के विरुद्ध सभी प्रतिनिधि संगठित होकर अपनी आवाज बुलंद कर दोषियों को दंडित करने के लिए तत्पर रहेंगे।बैठक में प्रखंड अंतर्गत मनरेगा योजनाओं से संबंधित विषय पर चर्चा करते हुए सदस्यों ने कहा कि कुशेश्वरस्थान पूर्वी प्रखंड के प्रखंड प्रमुख अंजनी भारती के द्वारा अपने निजी हित को साधने के इरादे से जिला अधिकारी दरभंगा को मनरेगा योजना से संबंधित एक लिखित आवेदन दिया है जिसका कुशेश्वरस्थान पूर्वी के सभी मुखिया एवं उपस्थित पंचायत समिति सदस्य प्रमुख द्वारा लगाए गए आरोप को सिरे से खारिज करते हुए उनके इस रवैया का प्रतिकार किया है. बैठक में मुखिया संघ के अध्यक्ष एवं केवटगामा पंचायत के मुखिया छेदी राय , मुखिया राजेश पासवान, मुखिया मोहम्मद इस्लाम, मुखिया नवल किशोर राय ,मुखिया प्रतिनिधि परमानंद साहू ,पंचायत समिति सदस्य राम बच्चन हजारी, उमेश कुमार मतवाला, मुखिया प्रतिनिधि राम भजन यादव ,पंचायत समिति प्रतिनिधि सुमन कुमार, बबन यादव मोहम्मद इंतजार, रिंकू सदा सहित जनप्रतिनिधि गण उपस्थित थे।

प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग ग्रुप की बैठक में डीएम ने दिए निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन की अध्यक्षता में आज समाहरणालय सभागार में प्रोजेक्ट मआनटरइंग ग्रूप की बैठक आयोजित की गईं। विभिन्न विभागों के अधिकारियों तथा अभियंता इस बैठक में शामिल थे। बैठक में जिलाधिकारी ने अधिकारियों को आपसी समन्वय स्थापित कर जिला में विकासात्मक आधारभूत संरचना के निर्माण कार्य में प्रगति लाने तथा उत्पन्न हो रही समस्या का समाधान करने का सख्त निर्देश दिया। इस क्रम में जिलाधिकारी ने भू अर्जन, भूमि विवाद, अतिक्रमण, एलाइनमेंट में अवस्थित बिजली पोल सहित कई अन्य समस्या का समाधान करने हेतु नियमानुकूल अपेक्षित कार्रवाई करने तथा निर्माण कार्य में तेजी लाने को कहा। बूढ़ी गंडक नदी पर डॉ जगन्नाथ मिश्र कॉलेज के पास अप्रोच पथ के भू अर्जन हेतु चार मौजा चंदवारा एक, चक मुहम्मदपुर, नाजिरपुर, चंदवारा दो में से तीन मौजा चंदवारा एक, नाजिरपुर एवं चक मुहम्मदपुर का दखल कब्जा पुल निर्माण निगम को भू अर्जन कार्यालय द्वारा दिया जा चुका है। भू-अर्जन कार्यालय को प्राप्त कुल राशि 26 करोड़ का वितरण किया जा चुका है। अवशेष राशि प्राप्त करने हेतु पुल निर्माण निगम को पत्र भेजा गया है। बैठक में जिला पदाधिकारी द्वारा जिला भू अर्जन पदाधिकारी एवं पूर्व निर्माण निगम के वरीय परियोजना पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि अवशेष राशि प्राप्त करने हेतु जिलाधिकारी द्वारा विभाग को पत्र भेजना सुनिश्चित करें। साथ ही बैठक में पुल निर्माण निगम के वरीय परियोजना प्रबंधक को निदेश दिया गया कि वह निविदा जल्द से जल्द पूर्ण कर निर्माण कार्य प्रारंभ करें। एन एच 139 डब्लू अदालवारी- मानिकपुर खंड के मुआवजा भुगतान हेतु पुनः कैंप का आयोजन किया जाएगा। कैंप का व्यापक प्रचार- प्रसार, प्रचार वाहन से कराने का भी निदेश दिया गया। अंचल अधिकारी सरैया को कैंप में उपस्थित रह कर भू धारियों के भू स्वामित्व प्रमाण पत्र निर्गत करने तथा परिमार्जन का भी निदेश दिया गया। पूर्व में सरैया अंचल में लगाए गए शिविर में कुल 87 लाख का भुगतान हेतु वाउचर तैयार किया गया था ग्रामीण सड़कों को महत्वपूर्ण बताते हुए जिलाधिकारी ने ग्रामीण कार्य विभाग की समीक्षा की तथा डिवीजनवार विस्तृत प्रतिवेदन प्राप्त करने तथा कार्यपालक अभियंताओं के साथ अलग से बैठक कराने का निर्देश जिला योजना पदाधिकारी को दिया। पथ निर्माण विभाग के अंतर्गत मोतीपुर बरूराज पथ, राजेपुर- करचौलिया पथ, मीनापुर टेंगराहा पथ में अर्जित भूमि का वांछित कागजात भू-धारियों से प्राप्त कर मुआवजा राशि के नियमानुकूल भुगतान की कार्रवाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया ।इसके अतिरिक्त बुडको, इंडियन वाइल, एनटीपीसी, कृषि बाजार समिति, नई रेल परियोजना आदि की भी समीक्षा कर कार्य में तेजी लाने को कहा।

मुखिया संघ ने लिया डोंगल वापस करने का निर्णय

- धोखाधड़ी से भुगतान करने पर मोहम्मदपुर सकड़ा पंचायत के लेखपाल के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने का निर्णय

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड पंचायत समिति भवन विभूतिपुर के प्रांगण में मुखिया संघ के अध्यक्ष रंजीत कुमार की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई, बैठक में संघ के अध्यक्ष एवं सभी मुखिया ने लेखपाल से डोंगल वापस करने व योजना का भुगतान पंचायत कार्यालय में करने का निर्णय लिया, वही महम्मदपुर सकड़ा पंचायत के लेखपाल गौतम कुमार द्वारा धोखाधड़ी से भुगतान करने को लेकर उनके विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराने का निर्णय लिया,

वहीं पीएचइडी के उदासीनता के कारण अनुरक्षण के अभाव में नल जल योजना प्रभावित होने एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा पूरी हो चुकी योजना के भुगतान रोकने पर चर्चा करते हुए निष्पादन नहीं होने पर आंदोलन एवं अनशन करने तथा बंद पड़े सोलर लाइट का भुगतान नहीं करने का निर्णय लिया, बैठक में मुखिया चंद्रमणि प्रसाद सिंह, राजकुमार, सुशील कुमार चौधरी, मनोज कुमार यादव, रामप्रवेश राय, भोला शंकर दास, रामसेवक साह, भगवानदास, दिलीप कुमार व मुखिया प्रतिनिधि राजेश कुमार झा, अशोक कुमार, जगदीश कुमार जग्गा, अनिल कुमार, रमन भारती आदि ने भाग लिया।

मारपीट को लेकर खजौली थाना में आवेदन पर प्राथमिक दर्ज

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली थाना क्षेत्र के दतुआर गांव निवासी ऋषि कुमार पासवान ने मारपीट की घटना को लेकर स्थानीय थाना में प्राथमिकी दर्ज करायी गयी है.उन्होंने प्राथमिकी आवेदन में आरोप लगाया है कि 16 जून को सुवह करीब 11 वजे दिन में मेरा चचेरा चाचा सुनील कुमार पासवान खजौली बाजार से पैदल अपने घर दतुआर आ रहा था.इसी बीच दतुआर पंचायत के वार्ड - 13,गांव दतुआर निवासी मौसम कुमार सिंह के घर के पास पहुँचने पर उन्होंने मुझे अपने दरवाजे पर बुलाया.दरवाजे पर मौजूद उनके चचेरे भाई अमोद कुमार सिंह उनकी बहन रिमझिम कुमारी द्वारा मेरे चाचा को बेरहमी से मारपीट किया गया.मारपीट की आवाज सुनकर मेरे रिश्ते में दादा भोकर पासवान पहुँच कर मारपीट को छुड़ाया गया. इसी घटना को लेकर संध्याकाल में खजौली बाजार से वाइक से घर आने वक्त जामुन महतो घर के पास सड़क के किनारे दतुआर गांव निवासी जयकिशोर सिंह विजय कुमार सिंह एव शिवचंद्र सिंह जाती सूचक शब्द का प्रयोग कर धातक हथियार मारपीट कर गंम्भीर रूप से घायल कर दिया गया.थानाध्यक्ष प्रवीण कुमार सिंह ने बताया कि मारपीट की घटना के आवेदन के अलोक में प्राथमिकी दर्ज कर अनुसंधान जारी कर दिया गया है.

खाटू श्याम बाबा का उत्सव धूमधाम से मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

कमतौल(दरभंगा)। कमतौल बाजार स्थित अशोक लिल्हा के कैम्पस में खाटू श्याम मंडली दरभंगा द्वारा पूरे धूमधाम से उत्सव मनाया गया ।इस अवसर पर मंडली के द्वारा प्रस्तुत किए गए भक्ति गीतों से पूरे क्षेत्र को भक्तिमय कर दिया ।सैकड़ों की तादाद में श्रद्धालु महिला व पुरुष श्रोता के रूप में मौजूद थे ।सभी श्रचालुओ ने खाटू श्याम बाबा की पूजा अर्चना एवम ज्योति अर्पण कर अपने आप को धन्य समझा ।सबों ने आयोजक लिल्हा परिवार की भूरी भूरी प्रशंसा की ।आयोजक की ओर से उत्सव के अंत में महा प्रसाद की व्यवस्था की गई थी । गली गली में श्याम होना चाहिए ,हर मंदिर में श्याम होना चाहिए,आदि भक्ति संगीतो पर सभी श्रोता झूम उठे ।श्याम मण्डली में बिनोद शर्मा, श्याम शर्मा,राहुल शर्मा, संजय मित्तल, नवनीत गुप्ता, तरुण मरोड़िया, दिनेश बजाज शामिल थे। आयोजन को गौरव लिल्हा, प्रमोद लिल्हा, जगदीश लिल्हा, अरुण लिल्हा ने सपरिवार श्रद्धा व भक्ति से सजोया था। देर रात तक यह कार्यक्रम चला ।बताया जाता है कि दिवंगत हुए स्व0 ओम प्रकाश लिल्हा की इच्छा रही थी कि उनके आवास पर श्याम उत्सव का आयोजन हो ,उसी इच्छा को पूर्ण करने के लिए परिजनों ने उत्सव का आयोजन किया था ।

नही रहे भाजपा के पूर्व जिला महासचिव शिवजी

प्रात : किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)।भाजपा के पूर्व जिला महामंत्री व समाजसेवी साहो गाँव निवासी 73 वर्षीय शिवजी प्रसाद यादव का निधन पटना में निजी अस्पताल में इलाज के दौरान हो गया। बता दे कि शिवजी यादव पिछले कई दिनों से बीमार चल रहा था जिनका इलाज दिल्ली तथा दरभंगा ,पटना में भी चला लेकिन गंभीर बीमार पड़ने के कारण मंगलवार की अहले सुबह 4 बजे पटना में इलाज के दौरान उनकी निधन हो गई। परिजन उन्हें पैतृक गाँव साहो लाया जहां उनकी अंतिम संस्कार किया गया। बता दें कि शिवजी प्रसाद यादव के 3 पुत्र एवं दो पुत्री है ,और पुत्र पोता नाती से भड़ा पूरा परिवार को छोड़कर इस दुनिया से चले गए। उनके बड़े पुत्र अशोक यादव ने मुखाग्नि दिया उनके दूसरे पुत्र दिलीप यादव मीडिया दर्षन दैनिक समाचार पत्र के पत्रकार है। शिवजी यादव की मौत की खबर सुनकर उनके आवास पर सांतना देने वाले का ताता लग गया। शोकव्यक्त करने वाले में भाजपा नेता रंजीत सिंह, भाजपा मंडल अध्यक्ष राजकुमार सहनी, जनस्वराज के जिला उपाध्यक्ष मनोज झा, भाजपा नेता मणिकांत मिश्र, साहो पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि प्रदीप यादव,पूर्व मुखिया हैदर खाँ, पंचायत समिति सदस्य मजहर खाँ, जज्जी आलम खाँ, रामप्रकाश पोद्दार, सहित सैकड़ों लोगों ने शोकव्यक्त किया।

दस दिवसीय खादी मेला का हुआ समापंन ,70लाखकी हुई बिक्री

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। शहर के गौशाला रोड स्थित बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग परिसर में आयोजित 10 दिवसीय खादी मेला का समापन हो गया।इस दौरान लगभग 70लाख रुपये के विभिन्न उत्पादों की बिक्री हुई। यह मेला 8 जून से प्रारंभ हुआ था।इस अवसर पर आगंतुकों को बिहार के खादी के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान खादी के परिधान और उत्पादों की सराहना की गई और बिहार के खादी उद्यमियों के बारे में बताया गया।बिहार की खादी अपनी गुणवत्ता और विविधता के लिए जानी जाती है। यहाँ के खादी के कपड़े न केवल आरामदायक होते हैं, बल्कि पर्यावरण के अनुकूल भी होते हैं। इस मेले में विभिन्न प्रकार के खादी वस्त्रों का प्रदर्शन किया गया, जिसमें शर्ट, साड़ी, कुर्ता, पायजामा, और दुपट्टा शामिल थे। इन वस्त्रों की खूबसूरती और उत्कृष्टता ने सभी आगंतुकों का मन मोह लिया। समापन कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे राज्य मेला प्रभारी अभय सिंह और मेला प्रभारी शिवम कुमार सिन्हा ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई। अभय सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा, ह्यबिहार की खादी न केवल एक व्यवसाय है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक भी है। इस प्रकार के मेले उद्यमियों को अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने और नए बाजार खोजने का मंच प्रदान करते हैं।ह्न उन्होंने ग्राम उद्यमियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए, जिससे उनकी मेहनत और समर्पण को सम्मानित किया गया।शिवम कुमार सिन्हा ने कहा, ह्यइस मेले का उद्देश्य खादी के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाना और उद्यमियों को प्रोत्साहित करना है।

जन संवाद कार्यक्रम में कई समस्याओं से विधायक को कराया गया अवगत

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर, समस्तीपुर, विभूतिपुर प्रखंड कार्यालय पर स्थानीय विधायक अजय कुमार द्वारा जनसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें जनता ने विधायक को बिजली विभाग से संबंधित समस्या, अंचल अधिकारी जमीन संबंधी समस्या, विभूतिपुर थाना आपूर्ति विभाग एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी समस्तीपुर जन्म, मृत्यु प्रमाण पत्र से संबंधित समस्या से लिखित आवेदन देकर अवगत कराया, जिस पर विधायक ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निष्पादन के लिए पत्र लिखकर सभी अधिकारियों को जल्द से जल्द समस्याओं का निपटारा करने का निर्देश दिया गया, मौके पर सीपीएम जिला सचिव मंडल सदस्य महेश कुमार, लोकल मंत्री श्याम किशोर कमल, मिथिलेश सिंह, डॉक्टर विष्णु देव प्रसाद सिंह, राजद नेता चंद्रदेव महतो, जयनारायण शर्मा, बबलू कुमार, पूर्व मुखिया अमरेश प्रसाद सिंह आदि उपस्थित थे,

गर्मी के कारण 11वीं की छात्रा हुई बेहोश

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड क्षेत्र में एक बार पुनः विद्यालय खुलते ही भीषण गर्मी के कारण उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय वाजिदपुर बम्बैया में 11वीं की छात्रा पिंकी कुमारी बेहोश हो गई, छात्रा के बेहोश होते ही विद्यालय परिसर में अफरा-तफरी शुरू हो गई, वहीं विद्यालय के शिक्षकों द्वारा छात्रा के मुंह पर पानी का छींटा मारकर तथा प्राथमिक उपचार के बाद अभिभावक को इसकी सूचना देकर छात्रा को अभिभावक के साथ घर भेज दिया गया, बता दें की मिशन गर्मी के कारण विभाग के आदेशानुसार सभी प्रकार के विद्यालय बंद थे, वहीं सोमवार को विद्यालय खुली, जिसमें जिलाधिकारी के आदेशानुसार प्रथम वर्ग से आठवीं वर्ग तक के छात्र-छात्राओं के लिए विद्यालय में 2 दिनों के लिए पठन-पाठन स्थगित किया गया है, वही नौवीं वर्ग से ऊपर के छात्र-छात्राओं के लिए विद्यालय खुली हुई है, बता दे की एक सप्ताह पूर्व भी इसी विद्यालय में जैसे ही विद्यालय खुली भीषण गर्मी के कारण एक पांचवी वर्ग की छात्रा बेहोश हो गई थी, जिसे परिजनों के द्वारा निजी क्लीनिक में इलाज कराया गया, इसके बाद विद्यालय पुनः एक सप्ताह के लिए बंद कर दिया गया था, आज जैसे ही विद्यालय खुली इसी विद्यालय में 11वीं की छात्रा बेहोश हो गई,

संक्षिप्त खबरें

बाइक की टक्कर से चार लोग हुए घायल

जमुई[झाझा] झाझा बोड़वा मुख्य स्थित करहरा के समीप सड़क किनारे खड़ी एक बाइक में दूसरे बाइक के द्वारा टक्कर मार देने से दोनों बाइक पर सवार कुल चार लोग घायल हो गए। इधर घटना की जानकारी डायल 112 की पुलिस को मिलने के बाद पुलिस टीम मौके स्थल पर पहुंची और सभी घायलों को उठाकर इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया जहां चिकित्सक के द्वारा सभी घायलों का इलाज किया गया। घटना में घायल की पहचान धमाना गांव के रहने वाले टोला सेवक इंद्रदेव कुमार उसकी पत्नी फूल कुमारी और 5 साल की बेटी कृति कुमारी के रूप में हुई है जबकि घायल दूसरे बाइक चालक की पहचान फाइनेंसकर्मी आर्यन कुमार के रूप में हुई है। घायल टोला सेवक ने बताया कि स्कूल से झाझा बीआरसी आ रहा था और कुछ बाजार में भी मेरी पत्नी को कुछ काम था इसलिए पत्नी और बेटी को लेकर बाइक से झाझा दिशा की ओर आ रहा था तभी करहरा के समीप सड़क किनारे बाइक खड़ी कर हम लोग खड़े थे कि पीछे से दो बाइक टकराने के बाद एक बाइक चालक मेरे बाइक में आकर टक्कर मार दिया जिससे हम लोग घायल हो गए।

आला ढूंढते रहे स्वास्थ्यकर्मी और नवजात की चली गई जान

गिद्धौर सीएचसी में प्रसव के नाम पर आए दिन बरती जा रही लापरवाही

- उदासीन बना स्वास्थ्य विभाग
- प्रसूता के परिजन ने अस्पताल प्रबंधन पर लगाया प्रसव के बाद लापरवाही बरतने का आरोप

प्रात : किरण, संवाददाता

गिद्धौर/जमुई गिद्धौर के दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इन दिनों प्रसव कराने को लेकर अस्पताल आनेवाले मरीजों के साथ लापरवाही बरतने का मामला दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। नया मामला बीते सोमवार का है, जहां पतसंडा निवासी गणेश राम के पुत्र मुन्ना कुमार अपनी पत्नी पंचोला कुमारी को प्रसव कराने के लिए दिग्विजय सिंह समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गिद्धौर आये थे। जहां अस्पताल में सुबह 8:20 बजे प्रसूता को भर्ती कर चिकित्सक के निर्देश पर एएनएम नूतन कुमारी द्वारा तकरीबन 11:25 बजे मरीज का प्रसव करा दिया गया। प्रसव के बाद मरीज व नवजात की स्थिति सामान्य थी। करीब आधे घंटे बाद ही प्रसूता एवं नवजात को बिना डिस्चार्ज किए अस्पताल से घर भेज दिया गया। जहां कुछ घंटों के बाद परिजन द्वारा बच्चे की तबियत अचानक बिगड़ने पर बच्चे को स्वास्थ्य जांच को लेकर अस्पताल लाया गया, जहां स्वास्थ्य कर्मियों ने उक्त नवजात को मृत घोषित कर दिया।

इधर घटना से आहत पीड़ित प्रसूता पंचोला देवी के परिजन बटेश्वर राम, गणेश राम, विकास कुमार, मुन्ना कुमार, रेखा देवी, सुनीता कुमारी, सुभाष राम, रोहित कुमार ने अस्पताल प्रबंधन पर अपने बच्चे की इलाज में देरी होने के कारण हुए मौत का आरोप लगाते हुए कहा कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा सरकारी अस्पताल में प्रसूता एवं नवजात की देखभाल एवं सुरक्षा को लेकर 24 से 48 घंटे तक विभागीय स्तर से चिकित्सकीय निगरानी में मरीजों को रखने के कड़े निर्देश विभाग द्वारा अस्पताल प्रबंधन को दिए गए हैं। बावजूद इसके प्रसव के तीस मिनट बाद ही अस्पताल से प्रसूता एवं नवजात को घर वापस भेज दिया गया, जहां बच्चे की तबियत बिगड़ने एवं रुक रुक कर रोने एवं सांस लेने में तकलीफ के बाद स्वास्थ्य जांच हेतु उसे अस्पताल लाया गया। जहां हमारे बच्चे की मौत हो गई।

प्रसूता के परिजनों ने आगे यह भी कहा कि नवजात शिशु की नाजुक स्थिति रहने के बावजूद भी डेढ़ घंटे तक ड्यूटी पर मौजूद चिकित्सक अंजना कुमारी एवं स्वास्थ्यकर्मी बच्चे की जांच हेतु आला ढूंढते रहे। स्वास्थ्यकर्मियों को आला ढूंढने में ही डेढ़ घंटे लग गए। कूलर के नीचे से जब आला मिला, तब तक नवजात शिशु की मौत हो गई। इस घटना से आक्रोशित परिजनों ने अस्पताल प्रबंधन के दोषी स्वास्थ्यकर्मियों पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाते हुए सिविल सर्जन एवं जिलाधिकारी जमुई से शिकायत कर मामले में कार्रवाई की मांग की है।

इस मामले के बारे में पूछे जाने पर दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. प्रदीप कुमार से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि मामला संज्ञान में आया है मामले की जांच की जाएगी और संबंधित स्वास्थ्यकर्मियों पर विधिसम्मत कार्रवाई की जाएगी।

वहीं इस संदर्भ में जिला चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. कुमार महेंद्र प्रताप ने बताया कि मामले की जानकारी मिली है। प्रसव से जुड़ी किसी भी प्रकार की लापरवाही को कतई बर्दाश्त नही किया जाएगा। मामले की जांच कर कठोर कार्रवाई की जाएगी।

बादल निकलते ही धुप से मिली राहत , उमस भरी गर्मी बरकरार

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई /सोनो - मंगलवार दिन के 11 बजे तक आकाश में छाई घने बादलों के बीच छीपे भगवान भास्कर सुर्य की किरणों से आग बरसती व चिलचिलाती धूप से जहां लोगों को थोड़ी राहत मिली है , वहीं उमस भरी गर्मी के कारण लोग अपने अपने घरों में दुबकने पर मजबुर हो गये हें । उमस भरी गर्मी के कारण खासकर रोजमर्रा की भांति दिहाड़ी मजदूरी करने वाले लोगों पर काफी बुरा प्रभाव पड़ रहा है । वहीं दुर दराज आवागमन करने वाले यात्रियों में काफी कमि देखने को मिली रही हे । सोनो , खपरिया , काली पहाड़ी , बटीया तथा महेश्वरी , चरका पत्थर एवं सरधोडीह आदि चोक चोराहों पर सवारी ढोने वाली सभी छोटी छोटी वाहनों को विरान पड़ी सड़कों पर यात्रियों को आने की इंतजार में खड़े देखा गया है । इधर आग उगलती धुप ओर उमस भरी गर्मी के कारण घरों के पंखे ओर कुलर आदि से निकलने वाली हवा भी अब लु की तरह निकलने लगी हे , ऐसी परिस्थिति में अब मेडियम तबके के लोगों पर खास असर देखने को मिला है । ज्ञात हो कि बिति 24 घंटे पुर्व सोनो थाना छेत्र के अम्माटिल्हा गांव में एक व्यक्ति की लु लगने से मौत हो गई है ।

मिर्जागंज में मुखिया प्रतिनिधी निजी टैंकर से भेज रहे हैं पानी, लोगों को मिल रही राहत

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंज :-इन दिनों गर्मी पिछले कई वर्षों का रिकॉर्ड तोड़ रहा है। पूरा तापमान बढ़ने से पूरे इलाके में भीषण गर्मी पड़ रही है।भीषण गर्मी में पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है । वहीं गर्मी बढ़ने से मिजागंज पंचायत में पानी का जलस्तर काफी नीचे चला गया है। पानी का जलस्तर घटने से कुआं , चापाकल और बोरिंग सुख गया है। जिससे पूरे पंचायत में पानी का घोर किल्लत हो गया है और हर तबके के लोग त्राहिमाम कर रहे हैं । पानी की किल्लत को देखते हुए मिजार्गंज पंचायत के लोकप्रिय समाजसेवी सह मुखिया प्रतिनिधि शैलेंद्र महतो के द्वारा पंचायत के सभी वार्डो में टैंकर से लोगो को घर- घर पानी पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं ।पानी मिलने से लोगों को राहत मिल रहा है। पूरे पंचायत में निजी खर्च से लोगों के बीच पानी देने का कार्य कर रहे है । शैलेंद्र महतो ने बताया कि टैंकर और बंद पड़े चापकल में निजी खर्च से समरसेबुल की व्यवस्था हो जाने से पानी की गहरी चिंता कम हो गई है । भीषण गर्मी में मिजार्गंज पंचायत के सभी घरों को पानी का जरूरत पूरी हो रही है। जिससे घर की महिलाओं और बच्चों को पानी के लिए कहीं जाना नहीं पड़ रहा है उन्होंने लोगो से आगाह किया कि जहां भी पानी की किल्लत है उनसे संपर्क कर सूचना दे वहां कार्यकता टैंकर से पानी पहुंचाने को तैयार है वहीं ग्रामीणों ने बताया कि मिजार्गंज में बहुत पहले पीएचईडी द्वारा जलापूर्ति के उद्देश्य से 20 हजार गैलन वाला पानी का टंकी लगाया गया था लेकिन चालक के मनमानी के कारण लोगो को पानी नहीं मिल रहा है । चालक द्वारा दिन भर में 5 मिनट भी अच्छा से पानी नहीं देते है वहीं इसकी शिकायत वरीय पदाधिकारी को भी करने से कोई फायदा नही हुआ है ।वहीं अलीगंज प्रखंड में पानी के लिए लोग दर दर भटक रहे कहीं कहीं जनप्रतिनिधियों के द्वारा टैंकर पहुंचाया जा रहा है।

धमना काली मंदिर में पूजा-अर्चना के लिए लगी भीड़ वार्षिक पूजा हुआ संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] मां काली मंदिर धमना की वार्षिक पूजा की शाम आरती में भक्तों की भीड़ उमड़ गई। इसके कारण पूजा समिति को खासा परेशानी हुई। धमना काली शक्तिशाली देवी के रूप में विख्यात है। जो भी भक्त सच्चे दिल से मन्नत मांगता है उसकी मुराद पूरी होती है। सैकड़ों भक्तों की मुराद पूरी होने के कारण कई भक्तों ने मां काली के मंडप से लेकर पूजा स्थल का निर्माण कराया। कई भक्त नौ दिनों तक उपवास पर रहते है। इलाके की महिलाओं की भीड़ सुबह चार बजे से लगनी प्रारंभ हो गई जो दोपहर तक जारी रही। कई भक्त रात-दिन मां काली की सेवा में लगे हुए हैं। मंदिर में ही डेरा डाल दिया है। काफी निष्ठा के साथ नौ दिनों तक भव्य रूप से पूजा-अर्चना होती है। शनिवार को धमना मुखिया प्रतीक शर्मा ने मंदिर प्रांगण में भक्तों की बीच प्रसाद का वितरण किया। साथ ही फल और नारियल भी दिए। उन्होंने कहा कि इस दरबार में बड़े से लेकर छोटे व्यक्ति अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। इलाके के लोगों के लिए यह आस्था का केंद्र है। इससे कई गांव की आस्था जुड़ी हुई है। इस मौके पर धमना, गोविदपुर, काशी कुंड, केशोपुर, खेरन, बगधासा सहित दर्जनों गांव के लोग उपस्थित थे।

पंचायती राज्य मंत्री ने किया पड़वा नवटोल पंचायत सरकार भवन का निरीक्षण

मुखिया सहित जनप्रतिनिधियों ने माला पहना कर किया मंत्री का भव्य स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा मधेपुरा पहुंचे पंचायती राज्य मंत्री ने शिंघेश्वर में बाबा भोले नाथ मंदिर में पूजा अर्चना करने के बाद जिले के कई सरकार भवन का निरीक्षण किया। बिहार सरकार के पंचायती राज मंत्री केदार प्रसाद गुप्ता जिले के मुरलीगंज प्रखंड अंतर्गत पड़वा नवटोल पंचायत सरकार भवन का दौरा कर निरीक्षण किया। इस मौके पर मंत्री श्री गुप्ता का मुखिया सहित स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने माला पहना कर भव्य स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न पंचायत के मुखिया के साथ विकास योजनाओं की समीक्षा भी की। मंत्री ने कहा कि पंचायत सरकार भवन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का महत्वाकांक्षी योजना है। उनका हमेशा से रहा है कि गांव के लोगों का खुद का अपना पंचायत सरकार भवन हो और इसी सरकार भवन में जनता को हर प्रकार की सुविधा प्राप्त हो सके। गांधी जी के सपना को साकार करने के लिए पंचायती राज व्यवस्था के तहत गांव के विकास हेतु काम किया जा रहा है। इसी के तहत बिहार के प्रत्येक पंचायत में पंचायत सरकार भवन बनाया गया है और बनाया भी जा रहा है। पूरे बिहार में अभी तक लगभग 1400 से ऊपर पंचायत सरकार भवन बनकर तैयार हो चुका है। लगभग 2000 से ऊपर पंचायत सरकार भवन निर्माण का काम चल रहा है। उन्होंने कहा कि शेष पंचायत सरकार भवन 2025 से पहले बन जाएगा। इसका मुख्य उद्देश्य यही है कि गांव के लोगों को गांव में ही सरकार की सुविधा आसानी से मिले। लोगों को आय प्रमाण-पत्र, जाति प्रमाण-पत्र समेत अन्य कोई भी काम जिसके लिए लोगों को प्रखंड कार्यालय जाना पड़ता था, वह अब पंचायत स्तर पर ही उपलब्ध हो रहा है। मंत्री ने कहा कि पड़वा नवटोल पंचायत सरकार भवन निरीक्षण के दौरान सभी कर्मचारी उपस्थित पाए गए। उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि बिहार में जितने भी पंचायत सरकार भवन बने हैं सभी में इसी तरह कर्मचारी नियमित रूप से उपलब्ध रहे। ताकि आम लोगों को किसी भी कार्य के लिए भटकना नहीं पड़े। इस दौरान मुखिया संघ की ओर से मांग की गई कि कबीर अंत्येष्टि योजना के तहत पंचायत को राशि उपलब्ध करवाया जाए।

ट्रेन से गिरकर एक रेलयात्री हुआ घायल, अस्पताल में हुआ इलाज

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] चलती गाड़ी से गिर जाने से एक रेलयात्री घायल हो गया जिससे परिजनों एवं अन्य लोगों की मदद से इलाज के लिए रेफरल अस्पताल झाझा लाया गया जहां चिकित्सक के द्वारा घायल रेलयात्री का इलाज किया गया। घायल रेलयात्री की पहचान सोनो थानाक्षेत्र के पैरामटियाना गांव के निवासी शत्रुघ्न पासवान के रूप में हुई है। घायल ने बताया कि वह बंशीपुर रेलवे स्टेशन से झाझा आने के लिए गया गया झाझा सवारी गाड़ी पकड़ा और चैरा रेलवे स्टेशन के पास गेट के पास खड़ा था कि तभी पीछे से एक बुर्जुग के धक्का देने से वह नीचे गिरकर घायल हो गया। जिसके बाद किसी अन्य रेलयात्रियों की मदद से झाझा रेलवे स्टेशन पहुंचा और फिर परिजनों को संपर्क किया गया तो परिजन एवं रेलपुलिस की मदद से इलाज के लिए अस्पताल लाया गया। वही अस्पताल में डॉक्टर के द्वारा बेहतर इलाज किए जाने के बाद घायल की स्थिति में सुधार हुआ जिसके परिजन अपने साथ उन्हे अपने घर ले गया।

शहीद पवन यादव की याद में निकाला कैंडल मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

घैलाढ़ (मधेपुरा) जम्मू कश्मीर के राजौरी जिला अंतर्गत नौशेरा में पेट्रोलिंग करने के दौरान 70 फीट खाई में वाहन गिर जाने से शहीद हुए सैनिक पवन यादव की याद में सोमवार संध्या को प्रखंड क्षेत्र के पथराहा चौक पर कैंडल मार्च निकाला गया। लोगों ने कैंडल जलाकर शहीद जवानों को श्रद्धांजलि दी। इस दौरान भारत माता की जय के जयघोष एवं जब तक सूरज चांद रहेगा शाहिद पवन यादव तेरा नाम रहेगा का जयघोष लगाए गए। प्रखंड क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों एवं युवाओं के द्वारा समाजसेवी राजनंदन यादव के नेतृत्व में पथराहा चौक से शहीद पवन यादव की याद में कैंडल मार्च निकालकर उनके समाधि स्थल तक पहुंचा। जहां कैंडल मार्च में शामिल सभी लोगों ने उनके समाधि के पास कैंडल जलाकर शहीद को श्रद्धांजलि दी व नमन किया। वहीं जिला पार्षद प्रतिनिधि डॉक्टर विनीत कुमार आर्यन ने कहा कि देश की सुरक्षा अर्द्ध सैनिकों के कंधे पर टिकी है। इनकी कुबार्नी बेकार नहीं जाएगी। वहीं समाज सेवी राजनंदन यादव ने कहा कि भारत माता की रक्षा करने हेतु सदैव तत्पर रहने वाले जवान शहीद पवन कुमार के नाम से पथराहा चौक का नाम पंजीकृत किया जाए। मुखिया प्रतिनिधि अशोक यादव ने कहा कि देश सेवा में शहीद हुए पवन यादव के पत्नी को नौकरी सरकार को अवश्य देना होगा ताकि अपने परिवार और बच्चे का भरण पोषण सही और सुचारू ढंग से कर पाए। उसके बलिदानी को हमारे क्षेत्र के लोग ही नहीं पूरे देश के लोग हमेशा हमेशा के लिए याद रखेंगे। इस दौरान वार्ड सदस्य अजीत कुमार, विजय कुमार शर्मा, अंगद यादव, देव मोहन नेहरू आदि मौजूद रहे।

घरेलू विवाद पर दो भाइयों के बीच हुई मारपीट में चार लोग हुए घायल

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] थाना क्षेत्र के रजला गांव में दो भाइयों के बीच घरेलू बात को लेकर विवाद हुआ और फिर विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों भाइयों के परिवार के बीच जमकर मारपीट हुई जिसमें दोनों भाइयों की ओर से कुल मिलाकर चार सदस्य घायल हो गया। एक पक्ष से घायल की पहचान कैलाश यादव का पुत्र नीतीश कुमार तो दूसरे पक्ष से घायल की पहचान सिंघेश्वर यादव, उसकी पत्नी पांचवा देवी और उसके पुत्री रुणा देवी के रूप में हुई है। दोनों पक्षों की ओर से सभी घायलों को इलाज के लिए रेफरल अस्पताल झाझा लाया गया। जहां सभी घायलों का इलाज किया गया। घायल नीतीश कुमार की बहन किरण कुमारी ने बताया कि घरेलू विवाद पर चाचा सिंघेश्वर यादव और उसके घर वालों ने विवाद शुरू करते हुए मारपीट किया और मेरे भाई के सिर पर टांगी से प्रहार कर घायल कर दिया। दूसरे पक्ष से घायल सिंघेश्वर यादव ने बताया कि कि मैं अपने घर पर नहीं था। उसी वक्त घरेलू विवाद करते हुए भाई कैलाश यादव, उसकी पत्नी और बेटा -बेटी मेरे घर में घुसकर मेरी पत्नी और बेटी को मारपीट करते हुए तलवार से वार कर घायल कर दिया। जब मैं अपने घर पहुंचा तो मेरे साथ भी मारपीट किया गया। मारपीट को लेकर दोनों पक्षों की ओर से झाझा थाना में पुलिस को घटना की जानकारी दी और दोनो पक्षों की ओर से एक दूसरे पर मारपीट करने का आरोप लगाया।

खेती-बाड़ी-धान फसल की पौधशाला तैयार करने में एक माह से अधिक की हो चुकी है देरी

मानसून की देरी और बेरुखी से किसानों में बढ़ रही मायूसी ,खेती कार्य प्रभावित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। मानसून की देरी और बेरुखी के कारण किसान मायूस है।अपनी खेतीबाड़ी एवं जीविका के लिए परेशान हो रहे हैं। वहीं आसमान की ओर टकटकी लगाकर आशा भरी निगाहों से बारिश के इंतजार में है ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है किसानों की चिंताएं बढ़ती जा रही है। अब कुछ ही दिनों में जून भी समाप्त हो जाएगा। ऐसे में किसानों को खरीफ मौसम के लिए कम अवधि के प्रभेद, जिसमें खासकर देसी बीज जो उनके पूर्वज खेती करते आ रहे हैं। उन तरीकों को अपनाना जरूरी हो गया है। कृषि विशेषज्ञों ने बताया कि मानसून की देरी में कम अवधि के प्रभेद जो 90 दिनों का बीज पर प्रभेद बाजार में मौजूद है का चयन करें। जो बीज बाजार में उपलब्ध न हो तो किसान कृषि विश्वविद्यालय में उचित मूल पर गुणवत्ता युक्त प्राप्त कर सकते हैं।जो किसान धान नहीं लगा पाएंगे वैसे किसान उड़द,तिल,मड़वा,तीनपरिवया मकई, देसी बीज को अपनाएं।अमूमन ग्रामीण किसान रोहिणी नक्षत्र में ही धान की पौधशाला तैयार करते हैं।जो 25 मई से प्रारंभ हो जाता है। धान की पाठशाला तैयार करने में एक माह की देरी हो चुकी है। ऐसे में कम अवधि के प्रभेद का चयन करना आवश्यक है। ताकि रवि सीजन की फसल समय से बुवाई हो सके। जमुई जिले के दस प्रखंड आते हैं जिसमें गिद्धौर,लक्ष्मीपुर,खैरा, सोनो,चकाई, अलीगंज शामिल है। कम प्रभेदों के फसल की बुवाई कर खेतों में जल संरक्षण को बढ़ावा दें। खेतों में कंपोस्ट का प्रयोग अधिक करें। ताकि वर्षा जल को अधिक से अधिक सिंचित किया जा सके।

जान लेने की नियत से दंपति को किया गंभीर रूप से घायल, पुलिस ने किया गिरफ्तार

घायल दंपति का दिग्विजय सिह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में किया गया इलाज

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। गिद्धौर थाना क्षेत्र अंतर्गत पतसंडा पंचायत निवासी इतवारी राम के पुत्र कोको राम एवं उनकी पत्नी उषा देवी के साथ मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर देने का मामला प्रकाश में आया। जिसके बाद अभियुक्त गिद्धौर थाना क्षेत्र अंतर्गत पतसंडा निवासी स्व.सिधेश्वर राम के पुत्र छोटे राम को गिद्धौर थाना की पुलिस ने एसआई रामधारी महतो एवं सशस्त्र बलों के सहयोग से गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।मामले को लेकर बताया गया कि अभियुक्त छोटे राम ने जान लेने की नियत से कोको राम एवं उनकी पत्नी उषा देवी को मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया और सर पे लोहे के रड़ के मारकर गंभीर रूप घायल कर दिया। जिसके बाद गिद्धौर थाना को इसकी सूचना दी गई। घायलों का उपचार दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में किया गया। वहीं मामले के संदर्भ में गिद्धौर थानाध्यक्ष रीता कुमारी ने बताया कि अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।आगे विधिसम्मत कार्रवाई की जा रही है

मधेपुरा नगर परिषद् बन चुकी है सिर्फ और सिर्फ लूट परिषद : कुमारी विनीता

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा पूर्व पार्षद पूर्व मुख्य पार्षद प्रत्याशी सह राजद प्रदेश उपाध्यक्ष कुमारी विनीता भारती ने लाखों के लगे शीतल शुद्ध पेय जल के लूट का पादार्फास करते हुए आरोप लगाई की लागातार मधेपुरा नगर परिषद में सिर्फ और सिर्फ लूट हो रही है। जब नगर परिषद कार्यलय मधेपुरा कोर्ट - डी आर सी सी भवन व कलेक्ट्रट के सामने ही शुद्ध पेय जल न निकल रहा है तो बाकी जगहों की बात ही छोड़िए। उन्होंने कहा मधेपुरा नगर परिषद में लाखों रूपया से कई जगहों पर शुद्ध पेय जल की वेवस्था की गई लेकिन अब गर्मी बीतने को है बरसात आने ही वाली है मगर अभी तक नगर परिषद शुद्ध पेय जल की वेवस्था नहीं कर पाई और ऊपर से लाखों रूपया का निकासी भी कर ली। जब से मधेपुरा नगर परिषद में ये जोड़ी मुख्य पार्षद व कार्यपालक की बनी है तब से अब तक करोड़ो रूपया की लूट हो चुकी है जो हमारे नगर के लोगों के साथ बहुत बड़ा धोखा है। अगर मधेपुरा नगर परिषद अपने कारनामा से बाज नहीं आती है तो बहुत जल्द आर - पार की लड़ाई को बाध्य हो जाऊँगी और एक बड़े आंदोलन की शुरूआत करुँगी।

सम्पादकीय

जन स्वास्थ्य प्रणाली में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सेवा का मानकीकरणों

लेखक : डॉ. जे. एन. श्रीवास्तव, डॉ. के. मदन गोपाल , डॉ. स्वर्णिका पाल , डॉ. अभय दहिया

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) एक महत्वपूर्ण पहल रही है, जिसका उद्देश्य व्यापक स्वास्थ्य देखभाल सेवा तक सार्वभौमिक पहुंच हासिल करना है। एनएचएम; स्वास्थ्य सेवा की अवसंरचना को मजबूत करने, मानव संसाधनों को बढ़ाने और आवश्यक चिकित्सा आपूर्ति की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें मुख्य रूप से जनजातीय समुदाय और स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं की कमी झेल रहे क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाती है। ये प्रयास, सामूहिक रूप से जन स्वास्थ्य में सुधार और प्रत्येक नागरिक के लिए स्वास्थ्य सेवा सुलभ बनाने के प्रति भारत के समर्पण को दशार्ते हैं। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से, भारत ने जनसंख्या स्थिरीकरण, मातृ, शिशु व बाल स्वास्थ्य और संचारी रोगों से संबंधित प्रमुख संकेतकों में उल्लेखनीय सुधार किया है। भारत में ऐसे संकेतकों में गिरावट की औसत दर वैश्विक औसत से अधिक रही है, विशेष रूप से मातृ, शिशु और पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर के मामले में। हालांकि, देश की स्वास्थ्य प्रणाली विभिन्न चुनौतियों का सामना करती रही है, जैसे बढ़ती आबादी और नई बीमारियां, दी गई नैदानिक स्थितियों के लिए देखभाल की परिवर्तनशीलता और उपयुक्तता तथा सेवाओं की गुणवत्ता आदि। स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों को मजबूत करना और देखभाल की गुणवत्ता बढ़ाना योजनाबद्ध कार्यक्रमों के बावजूद, जन स्वास्थ्य सुविधाओं के कम उपयोग, अनुचित और/या असुरक्षित उपचार, गलत निदान और अपमानजनक तरीके से सेवा देने आदि से संबंधित चुनौतियों के लिए खराब अवसंरचना, स्वास्थ्य कर्मियों के रूप में मानव संसाधनों (एचआरएच) की कमी और देखभाल की कम गुणवत्ता जैसे कारकों को जिम्मेदार ठहराया जाता है। ये चुनौतियां; अप्रत्याशित, असामयिक मौतें, जिन्हें रोका जा सकता था, खराब स्वास्थ्य, व्यक्तियों पर वित्तीय बोझ और जन स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के प्रति लोगों के विश्वास में कमी से सीधे जुड़ी हुई हैं। इन मुद्दों को ध्यान में रखते हुए, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने समय पर उपाय करने और चुनौतियों का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करने के लिए एक बहुआयामी रणनीति अपनाई। इस दिशा में विभिन्न उपायों में से एक है - संशोधित भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य मानकों (आईपीएचएस), 2022 के माध्यम से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में देखभाल के सभी स्तरों पर सुविधाओं से जुड़े मानकों का उन्नयन करना है, जो सभी जन स्वास्थ्य सुविधा केन्द्रों में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के घटकों को बेहतर बनाने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है। आईपीएचएस दिशानिर्देशों का एक महत्वपूर्ण पहलू है- आवश्यक (न्यूनतम) और हासिल करने योग्य (अपेक्षित) सेवाओं पर विशेष जोर। स्वास्थ्य सेवा की प्रत्येक सुविधा को न्यूनतम सेवाओं का एक सेट प्रदान करना आवश्यक है, ताकि भरोसेमंद स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित की जा सके। दिशा-निर्देश अवसंरचना, उपकरण, दवाओं, निदान, मानव संसाधन आदि के लिए मानक निर्दिष्ट करते हैं तथा राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को योजना बनाने और सुसंगत एवं विश्वसनीय देखभाल सुनिश्चित करने में सहायता करते हैं। आईपीएचएस के प्रमुख लक्ष्य बहुआयामी हैं और स्वास्थ्य सेवा के राष्ट्रीय लक्ष्यों के अनुरूप हैं। आईपीएचएस समय पर देखभाल के दृष्टिकोण के साथ स्वास्थ्य देखभाल सुविधा केन्द्रों की स्थापना के लिए जनसंख्या मानदंडों को फिर से डिजाइन करके बेहतर पहुंच पर ध्यान केंद्रित करता है। यह रोगी को उच्च स्तरीय स्वास्थ्य देखभाल सुविधा केन्द्रों में भेजने के लिए एक निर्बाध प्रणाली स्थापित करने के लिए इनपुट भी प्रदान करता है। इसके अलावा, आईपीएचएस; स्वास्थ्य सेवाएं रोगी के अनुकूल होनी चाहिए और सम्मानजनक तरीके से प्रदान की जानी चाहिए तथा सभी पर वित्तीय बोझ कम पड़ना चाहिए आदि को सुनिश्चित करने की दिशा में भी इनपुट प्रदान करता है। आईपीएचएस द्वारा जन स्वास्थ्य सुविधाओं में देखभाल के प्रत्येक स्तर के लिए विनिदेर्शों का एक सेट प्रदान करने के साथ, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय अनुचित और असुरक्षित उपचार, छूटे हुए निदान आदि को रोकने तथा जन स्वास्थ्य संस्थानों में सम्मानजनक देखभाल प्रदान करने के लिए देखभाल की गुणवत्ता में सुधार करने की आवश्यकता को प्राथमिकता देता है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रमुख कार्यक्रम, राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक (एनक्यूएएस) को यह सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन और कार्यान्वित किया गया है कि जन स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में सेवाएं न केवल सुरक्षित और रोगी-केंद्रित हों, बल्कि गुणवत्ता का भरोसेमंद स्तर भी हो। यह पहल, स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की गुणवत्ता को समझने, मापने और सुधारने से जुड़ी कमियों को दूर करने पर केंद्रित है। जन स्वास्थ्य सुविधाओं में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा का प्रावधान एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो रोगी के परिणामों, सुरक्षा और समग्र रोगी संतुष्टि को प्रभावित करता है। यह समुदाय के समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी सहायता करता है, रोगी के अनुभवों को बढ़ाता है और देखभाल की लागत को कम करके सेवा प्रदाता के अनुभव में वृद्धि करता है। जन स्वास्थ्य सुविधाओं में मानकीकृत सेवाओं की उपलब्धता का आश्वासन होने से जन स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ता है, जो आगंतुकों की बढ़ी हुई संख्या और सभी हितधारकों के साथ बेहतर संबंधों से पता चलता है। एनक्यूएएस कार्यान्वयन ने स्वास्थ्य सुविधाओं की विनियामक आवश्यकताओं और अग्नि सुरक्षा आदि से जुड़ी तैयारियों के अनुपालन को भी सुनिश्चित किया है। स्वास्थ्य सेवा में गुणवत्ता सुनिश्चित करने से असमानताओं का भी समाधान हुआ है और यह सुनिश्चित किया गया है कि सभी रोगियों को, उनकी पृष्ठभूमि या परिस्थितियों की परवाह किए बिना, समान देखभाल मिले। यह स्वास्थ्य समानता और सामाजिक न्याय हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है और सभी के लिए जीवन को आसान बनाने के सरकार के सिद्धांत के अनुरूप है। हाल की महामारी से सीख लेते हुए और भविष्य की किसी भी सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति की तैयारी करने के क्रम में, भारतीय जन स्वास्थ्य प्रणालियों की अवसंरचना को बड़े पैमाने पर समर्थन देने के लिए अखिल भारतीय मिशन, यानी प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-एबीएचआईएम) की शुरूआत हुई। अवसंरचना और निगरानी गतिविधियों पर मुख्य ध्यान दिया गया। लागत प्रभावी प्रयोगशाला प्रणालियों के माध्यम से सेवाओं की पहुंच, दक्षता, प्रभावशीलता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए पीएम-एबीएचआईएम के तहत एकीकृत जन स्वास्थ्य प्रयोगशाला (आईपीएचएल) को एक प्रमुख घटक के रूप में डिजाइन किया गया। ये प्रयोगशालाएं न केवल तेज, विश्वसनीय और सटीक परीक्षण परिणाम प्रदान करेंगी, बल्कि प्रभावी नैदानिक और निगरानी सेवाओं के लिए जिला व उप-जिला स्तर पर संपर्क भी स्थापित करेंगी, इस प्रकार एक सुदृढ़ स्वास्थ्य प्रणाली के निर्माण की दिशा में भारत के कदम को आगे बढ़ाएंगी। देश में विशाल भौगोलिक एवं जनसांख्यिकीय विविधता और अलग-अलग क्षेत्रीय स्वास्थ्य सेवा चुनौतियों के साथ, भारत सरकार ने गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने का प्रयास जारी रखा है, जो सुरक्षित, प्रभावी, रोगी केंद्रित, समय पर उपलब्ध, कुशल और न्यायसंगत हैं। संक्षेप में, आईपीएचएस दिशानिर्देश परिवर्तन के एक प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं, जो भविष्य के मार्ग को रोशन करते हैं, जहां स्वास्थ्य सुविधाएं प्रत्येक स्तर पर सेवा सुविधा देने के लिए आवश्यक विशिष्टताओं के एक निर्धारित सेट के साथ कार्य कर रहीं हैं। समान मानक निर्धारित करके और उनके कार्यान्वयन को सुनिश्चित करके, आईपीएचएस का उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा को अधिक सुलभ, किफायती और सम्मानजनक बनाना है, विशेष रूप से कमजोर और वंचित समुदायों के लिए। समानांतर रूप से, जन स्वास्थ्य सुविधाओं में राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानकों के कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की सुविधा मिली है, जो सुरक्षित, प्रभावी और रोगी-केंद्रित देखभाल सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे स्वास्थ्य परिणाम बेहतर होगा, रोगी का अनुभव बेहतर होगा और अधिक कुशल जन स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की सुविधा प्राप्त होगी। ये परिवर्तनकारी पहल स्वास्थ्य परिणामों में सुधार, रोकथाम योग्य बीमारियों के बोझ को कम करने और सरकार की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली पर नए सिरे से विश्वास और निर्भरता को बढ़ावा देने का भरोसा देती हैं। (डॉ. जे एन श्रीवास्तव सलाहकार हैं और डॉ. अभय दहिया गुणवत्ता और रोगी सुरक्षा प्रभाग के विशेषज्ञ हैं; डॉ. के मदन गोपाल सलाहकार हैं तथा डॉ. स्वर्णिका और डॉ. अर्पिता वरिष्ठ विशेषज्ञ जन स्वास्थ्य प्रशासन, राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली संसाधन केंद्र, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के रूप में काम करती हैं)

मोदी 3.0 की मजबूती को लेकर अलग-अलग चर्चाओं के दौर

हालाकि इस पर सफाई भी आई। लेकिन यह भी सही है कि इस बार संघ वैसा सक्रिय नहीं दिखा जैसे पहले के चुनावों में दिखता था ।वहीं प्रधानमंत्री का एनडीए का 400 पार और भाजपा खुद 370 जीतने का नारा लक्ष्य से बहुत पीछे रह गया। अब सबकी निगाहें लोकसभा अध्यक्ष पर है। जिस पर फिर कयासों का दौर शुरू हो गया है। निश्चित रूप से विविधताओं से भरे भारत देश और उसकी राजनीति में मतांतर नए नहीं है। इसीलिए कभी लगता है कि मोदी के नेतृत्व की एनडीए सरकार बेहद मजबूत है तो कभी लगता है कि भाजपा और उसके अपने महत्वपूर्ण आनुषांगिक दल ही क्यों खफा हैं। आंध्र प्रदेश विधानसभा में गजब का प्रदर्शन करते हुए टीडीपी-भाजपा गठबंधन ने बड़े बहुमत वाली जीत हासिल की। दोनों का एजेण्डा सबको पता है। टीडीपी मुस्लिम आरक्षण,परिसीमन, सी.ए.ए., अमरावती के विकास और विशेष दर्जे पर तबज्जो चाहेगी तो कमोवेश जेडीयू भी बिहार में ऐसे ही एजेण्डे के साथ अगले साल विधानसभा चुनाव में जाएगी।

ऋतुपर्ण दवे
लेखक

मोदी मंत्रिमण्डल का गठन जरूर हो गया है लेकिन कयासों का दौर खत्म नहीं हुआ। एक बार में ही 72 सदस्यीय भारी भरकम मंत्रिमण्डल की वजहें लोग कुछ भी बताएं लेकिन यह नरेन्द्र मोदी की चतुराई कही जाएगी जो उन्होंने एक बारगी सारे किन्तु-परन्तु पर विराम लगा एक तीर से कई निशाने साधे। इससे न केवल सहयोगियों बल्कि भाजपा के आनुषांगिक संगठनों को भी बड़ा संदेश गया कि भले ही सीटें घटीं लेकिन मोदी की हैसियत वही है। घटक दलों के सहयोगियों का मोदी के तीसरे कार्यकाल में मंत्रिमण्डल बंटवारे में मिले पद और कदसेभी काफी भ्रमटूटा ।साफ दिखा कि नरेन्द्र मोदी ने जो चाहा वो किया ।जिस शांति और धैर्य से घटक दलों के साथ पहली बैठक हुई, प्रमुख दोनों सहयोगी नीतिशबाबू और चंद्रबाबू ने मोदी की तारीफ में कसीदे पढ़े उससे राजनीतिक नब्ज टटोलने वालों की भी धड़कनें असहज हुई। हम उम्र और राजनीति में मोदी से सीनियर होने के बावजूद नीतिश का उनके पैर छूने झुकना सबको अब भी हैरान कर रहा है। यह भ्रम ही साबित हुआ कि जेडीयू को रेल तो टीडीपी को सड़क परिवहन मंत्रालय मिलना तय है ।पुरानी सरकारों में रेल मंत्रालय प्रायः गठबन्धन के सहयोगियों के खाते में रहा ।मौजूदा मंत्रिमण्डल में 33 नए चेहरे हैं जिनमें तीन पूर्व मुख्यमंत्री हैं। पहली बार मंत्री बनने वालों में7 सहयोगी दलों से हैं ।7 महिलाएं भी मंत्री बनीं जिनमें2 कैबिनेट और 5 राज्य मंत्री हैं ।एक भी मुस्लिम मंत्रिमण्डल में नहीं है। आजादी के बाद पहला मौका है जब मुसलमान को प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया ।नए मंत्रिमंडल में 21 सवर्ण, 27 ओबीसी, 10 एससी, 5 एसटी, 5 अल्पसंख्यक मंत्रियों को जगह मिली। भावुक अपीलों और जनता से कनेक्ट होने में हुनरमंद मोदी का कोई सानी नहीं। अब उन्होंने नई अपील कर विपक्ष को बहस का नया मुद्दा दे दिया ।अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल से मोदी का परिवार हटाने की गुहारलगा दी। भले ही डिस्प्ले नाम बदलेलेकिन भारत की तरक्की की कोशिशों के खातिर प्रयास करने वाले एक परिवार के रूप में हमारा बंधन मजबूत और अटूट है। इशारा अबकी बार एनडीए सरकार की ओर तो था ही साथ ही गठबन्धन के सहयोगियों को भी बता दिया कि अब वो कितने अहम हैं? इसी बीच संघ प्रमुख मोहन भागवत के उस बयान को देखना होगा जिसमें उन्होंने मणिपुर में शांति बहाली नहीं होने पर चिंता व्यक्त जताई और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर तंज कसा ।नागपुर में आरएसएस प्रशिक्षुओं को मोहन भागवत ने कहा कि 10 साल पहले मणिपुर में शांति थी। लेकिन साल भर सेएकाएक हिंसा बढ़ गई। इसपर प्राथमिकता के साथ विचार करना होगा। चुनावी बयानबाजी से ऊपर उठकर राष्ट्र के सामने मौजूद समस्याओं पर ध्यान देने की जरूरत है। मणिपुर साल भर से शांति की राह देख रहा है। अब सरकार भी बन गई तब भी चर्चा नहीं रुकी कि जो हुआ वह क्यों हुआ, कैसे हुआ, क्या हुआ? झूठ भी कायदे से पेश किया गया। ऐसे में देश कैसे चलेगा? विपक्ष को विरोधी नहीं मानना चाहिए। उसकी राय जरूरी है। चुनावी गरिमा का ख्याल नहीं रखा गया जो जरूरी है ।अभी चुनौतियां खत्म नहीं हुई है ।यह बयान शायद भाजपा प्रमुख नड्डा के उस बयान का जवाब लगता है जिसमें उन्होंने कहा था कि भाजपा अब अपने पैरो पर खड़ी है। भागवत के बाद संघ के बडे नेता इंद्रेश कुमार का बयान भी सुर्खियों में रहा जिसमें उन्होंने भी भाजपा की टॉप लीडरशिप पर निशाना साधा। हालाकि इस पर सफाई भी आई। लेकिन यह भी सही है कि इस बार संघ वैसा सक्रिय नहीं दिखा जैसे पहले के चुनावों में दिखता था ।वहीं प्रधानमंत्री का एनडीए का 400 पार और भाजपा खुद 370 जीतने का नारा लक्ष्य से बहुत पीछे रह गया। अब सबकी निगाहें लोकसभा अध्यक्ष पर है। जिस पर फिर कयासों का दौर शुरू हो गया है। निश्चित रूप से विविधताओं से भरे भारत देश और उसकी राजनीति में मतांतर नए नहीं है। इसीलिए कभी लगता है कि मोदी के नेतृत्व की एनडीए सरकार बेहद मजबूत है तो कभी लगता है कि भाजपा और उसके अपने महत्वपूर्ण आनुषांगिक दल ही क्यों खफा हैं। आंध्र प्रदेश विधानसभा में गजब का प्रदर्शन करते हुए टीडीपी-भाजपा गठबंधन ने बड़े बहुमत वाली जीत हासिल की। दोनों का एजेण्डा सबको पता है। टीडीपी मुस्लिम आरक्षण,परिसीमन, सी.ए.ए., अमरावती के विकास और विशेष दर्जे पर तबज्जो चाहेगी तो कमोवेश जेडीयू भी बिहार में ऐसे ही एजेण्डे के साथ अगले साल विधानसभा चुनाव में जाएगी। महाराष्ट्र में तो अभी चुनाव होने हैं। इन हालातों में महत्वपूर्ण घटक कब तक भाजपा के हमराह रहेंगे? जबकि महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश सहित बिहार में पद और कद पर कई बातें होनी शुरू हो गई हैं। अपने दम पर बहुमत हासिल करने में नाकाम भाजपा नीत गठबंधन सरकार को लेकर दुनिया भर में कौतूहल था। लेकिन मंत्रिमण्डल गठन के बाद विभाग वितरण से लोग भौंचक्का हैं कि यह कैसा जादू? क्या सचमुच राजनीति में मंजे दोनों बाबू न केवल मोदी के साथ हैं बल्कि ब्रान्ड मोदी के दो हाथ हैं?बहुमत का आंकड़ा न छू पाने के बावजूद मंत्रिमण्डल बंटवारे में दिखी मोदी के मन की बात ने क्या सभी का लोहा मनवा लिया? हालांकि चंद्रबाबू नायडू के शपथ ग्रहण में नीतिश का न जाना फिर चर्चाओं में है। लेकिन इटली में जी-7 सम्मेलन में बिना सदस्य रह कर भी विशेष रूप से प्रधानमंत्री को बुलाना और दुनिया के शीर्ष नेताओं से मेल-मुलाकात के बाद मोदी की नई छवि और कार्यप्रणाली को लेकर राजनीतिक चचाओं ने नया मोड़ जरूर ले लिया है। लेकिन देश के अंदर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब और दक्षिण के चुनाव परिणामों के मायने पर भी जानकारों की राय बंटी हो सकती है। लेकिन यह सच है कि असल परीक्षा के लिए लोकसभा के नियमित सत्र और नए अध्यक्ष तक इंतजार करना ही होगा। नई परिस्थितियों में खुद की छवि को बजाए मसीहाई दिखाने के बड़ी सहजता और विनम्रता से लबरेज दिखाकर भी प्रधानमंत्री मोदी नई एनडीए सरकार के वैसे ही सख्त मुखिया दिख रहे हैं जैसे बीते दोनों कार्यकाल में रहे ।लोग तब और अब में फर्क भले ढूंढें लेकिन यह कब दिखेगा, कोई नहीं जानता। फिलाहाल 30 जून का इंतजार है जब मन की बात के जरिए तीसरे कार्यकाल में नरेन्द्र मोदी का पहला संबोधन क्या होगा?

भारत में लैंगिक असमानता की बढ़ती खाई

सेना में भर्ती होकर देश की रक्षा कर रही है।अपने दम पर व्यवसायी बन रही हैं।होटलों की मालिक हैं।बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लाखों रुपये की नौकरी छोड़कर स्टार्टअप शुरू कर रही हैं। वे विदेशों में पढ़कर नौकरी नहीं, अपने गांव का सुधार करना चाहती हैं। अब सिर्फ अध्यापिका, नर्स, बैंकों की नौकरी, डॉक्टर आदि बनना ही लड़कियों के क्षेत्र नहीं रहे, वे अन्य क्षेत्रों में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।स्त्री शक्ति के प्रति सम्मान भावना ही नहीं, समानता, सह-अस्तित्व एवं सौहार्द की भावना जागे, तभी उनके प्रति हो रहे अपराधों में कमी आ सकेगी और लैंगिक असमानता को दूर किया जा सकेगा।

ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

विश्व आर्थिक मंच द्वारा हाल में प्रस्तुत किये गए लैंगिक अंतर के आंकड़ों ने एक ज्वलंत प्रश्न खड़ा किया है कि शिक्षा, आय, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में आधी दुनिया को उसका हक क्यों नहीं मिल पा रहा है? निस्संदेह, हमारे सत्ताधीशों को सोचना चाहिए कि लैंगिक अंतर सूचकांक में भारत 146 देशों में 129वें स्थान पर क्यों है? लगातार महिलाओं की दोयम दर्जा की स्थिति का बना रहना नीति-नियंताओं के लिये आत्ममंथन का मौका हैं। निश्चय ही यह स्थिति भारत की तरक्की के दावों से मेल नहीं खाती। इसके बावजूद उम्मीद जगाने वाला तथ्य है कि पिछले वर्ष जनप्रतिनिधि संस्थाओं में महिलाओं की एक तिहाई हिस्सेदारी को लेकर विधेयक पारित हो चुका है। इसके बावजूद हाल में सामने आए आंकड़े परेशान करने वाले हैं और तरक्की के दावों पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। यह विचारणीय प्रश्न है कि सरकार द्वारा महिलाओं के कल्याण के लिए अनेक नीतियां बनाने और कायदे कानूनों में बदलाव के बावजूद लैंगिक असमानता की खाई गहरी क्यों होती जा रही है। ये स्थितियां समाज में इस मुद्दे पर खुले विमर्श की जरूरत को बताती हैं। हालिया लोकसभा चुनाव में सीमित मात्रा में महिलाओं के संसद में पहुंचने ने भी कई सवालों को जन्म दिया है। निश्चित रूप से तमाम सरकारी घोषणाओं के बावजूद जमीन पर महिला असमानता के दंश विद्यमान रहना बड़ी चुनौती है। लैंगिक अंतर सूचकांक में पिछले साल भारत 127वें स्थान पर था, जो 2022 में 135वें स्थान से 1.4 प्रतिशत अंक और आठ पायदान ऊपर था। लेकिन इस वर्ष फिर दो पायदान ऊपर चढ़ा है। सूचकांक में भारत के पड़ोसी देश बांग्लादेश को 99वें, चीन को 106वें, नेपाल को 117वें, श्रीलंका को 122वें, भूटान को 124वें और पाकिस्तान को 145वें स्थान पर रखा गया है। आइसलैंड (93.5 फीसदी) फिर से पहले स्थान पर है और डेढ़ दशक से सूचकांक में सबसे आगे है। शीर्ष 10 में शेष नौ अर्थव्यवस्थाओं में से आठ ने अपने अंतर का 80 फीसदी से अधिक हिस्सा पाट लिया है। निश्चित तौर पर किसी भी समाज में पूर्ण लैंगिक समानता हासिल करने में लंबा समय लगता है, लेकिन इस दिशा में सत्ताधीशों की तरफ से ईमानदार पहल होनी चाहिए। यह भी एक हकीकत है कि दुनिया के सबसे ज्यादा आबादी वाले देश के आंकड़ों की तुलना दक्षिण एशिया के छोटे देशों से नहीं की जा सकती। इसमें दो राय नहीं कि पूरी दुनिया में सरकारों द्वारा लैंगिक समानता के लिये नीतियां बनाने के बावजूद अपेक्षित परिणाम नहीं निकले हैं। जिसकी एक वजह समाज में पुरुष प्रधानता की सोच भी है। जिसके चलते यह आभास होता है कि आधी दुनिया के कल्याण के लिये बनी योजनाएं महज घोषणाओं तथा फाइलों तक सिमट कर रह जाती हैं।

भारत में महिलाओं की उपेक्षा, भेदभाव, अत्याचार एवं असमानता की स्थितियों का बना रहना विडम्बनापूर्ण हैं। भारत में रोजगार और शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं को समान अधिकार दिलाने के स्वर तो बहुत सुनने को मिलते हैं, महिलाओं को आजादी के बाद से ही मतदान का अधिकार भी पुरुषों के बराबर दिया गया है, परन्तु यदि वास्तविक समानता की बात करें तो भारत में आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी महिलाओं की स्थिति चिन्ताजनक एवं विसंगतिपूर्ण है। हमारे सत्ताधीशों के लिये यह तथ्य विचारणीय है कि हमारे समाज में आर्थिक असमानता क्यों बढ़ रही है? हम समान कार्य के बदले महिलाओं को समान वेतन दे पाने में सफल क्यों नहीं हो पा रहे हैं? जाहिर है यह अंतर तभी खत्म होगा जब समाज में महिलाओं से भेदभाव की सोच पर विराम लगेगा। यह संतोषजनक है कि माध्यमिक शिक्षा में नामांकन में लैंगिक समानता की स्थिति सुधरी है। फिर भी महिला सशक्तीकरण की दिशा में बहुत कुछ किया जाना बाकी है। देर-सवेर महिला आरक्षण कानून का ईमानदार क्रियान्वयन समाज में बदलावकारी भूमिका निभा सकता है। जरूरत इस बात की है कि राजनीतिक नेतृत्व इस मुद्दे को अपेक्षित गंभीरता के साथ देखे। महिलाएं ही समस्त मानव प्रजाति की धुरी हैं। वो न केवल बच्चे को जन्म देती हैं बल्कि उनका भरण-पोषण और उन्हें संस्कार भी देती हैं। महिलाएं अपने जीवन में एक साथ कई भूमिकाएं जैसे- मां, पत्नी, बहन, शिक्षक, दोस्त बहुत ही खूबसूरती के साथ निभाती हैं। बावजूद क्या कारण है कि आज भी महिला असमानता की स्थितियां बनी हुई है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये जरूरी है कि अधिक महिलाओं को रोजगार दिलाने के लिए भारत सरकार को जरूरी कदम उठाने होंगे। सरकार को अपनी लैंगिकवादी सोच को छोड़ना पड़ेगा। क्योंकि भारत सरकार के खुद के कर्मचारियों में केवल 11 प्रतिशत महिलाएं हैं। सरकारी नौकरियों में महिलाओं के लिये अधिक एवं नये अवसर सामने आने जरूरी है। भारत में महिला रोजगार को लेकर चिंताजनक स्थितियां हैं। सेंटर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकॉनमी (सीएमआईई) नाम के थिंक टैंक ने बताया है कि भारत में केवल 7 प्रतिशत शहरी महिलाएं ऐसी हैं, जिनके पास रोजगार है या वे उसकी तलाश कर रही हैं। सीएमआईई के मुताबिक, महिलाओं को रोजगार देने के मामले में हमारा देश इंडोनेशिया और सऊदी अरब से भी पीछे है। रोजगार या नौकरी का जो क्षेत्र स्त्रियों के सशक्तिकरण का सबसे बड़ा जरिया रहा है, उसमें इनकी भागीदारी का अनुपात बेहद चिंताजनक हालात में पहुंच चुका है। यों जब भी किसी देश या समाज में अचानक या सुनियोजित उथल-पुथल होती है, कोई आपदा, युद्ध एवं राजनीतिक या मनुष्यजनित समस्या खड़ी होती है तो उसका सबसे ज्यादा नकारात्मक असर स्त्रियों पर पड़ता है और उन्हें ही इसका खामियाजा उठाना पड़ता है। दावोस में हुए वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम में ऑक्सफैम ने अपनी एक रिपोर्ट ह्यटाइम टू केयरह्ल में घरेलू औरतों की आर्थिक स्थितियों का खुलासा करते हुए दुनिया को चौका दिया था। वे महिलाएं जो अपने घर को संभालती हैं, परिवार का ख्याल रखती हैं, वह सुबह उठने से लेकर रात के सोने तक अनगिनत सबसे मुश्किल कामों को करती है। अगर हम यह कहें कि घर संभालना दुनिया का सबसे मुश्किल काम है तो शायद गलत नहीं होगा। दुनिया में सिर्फ यही एक ऐसा पेशा है, जिसमें 24 घंटे, सातों दिन आप काम पर रहते हैं, हर रोज क्राइसिस झेलते हैं, हर डेडलाइन को पूरा करते हैं और वह भी बिना छुट्टी के। सोचिए, इतने सारे कार्य-संपादन के बदले में वह कोई वेतन नहीं लेती। उसके परिश्रम को सामान्यतः घर का नियमित काम-काज कहकर विशेष महत्व नहीं दिया जाता। साथ ही उसके इस काम को राष्ट्र की उन्नति में योगभूत होने की संज्ञा भी नहीं मिलती। प्रश्न है कि घरेलू कामकाजी महिलाओं के श्रम का आर्थिक मूल्यांकन क्यों नहीं किया जाता? घरेलू महिलाओं के साथ यह दोगला व्यवहार क्यों? नरेन्द्र मोदी की पहल पर निश्चित ही महिलाओं पर लगा दोयम दर्जा का लेबल हट रहा है। हिंसा एवं अत्याचार की घटनाओं में भी कमी आ रही है। बड़ी संख्या में छोटे शहरों और गांवों की लड़कियां पढ़-लिखकर देश के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे उन क्षेत्रों में जा रही हैं, जहां उनके जाने की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। वे टैक्सी, बस, ट्रक से लेकर जेट तक चला-उड़ा रही हैं।

खाद्य पदार्थों की सुरक्षा एवं गुणवत्ता जरूरी

एल.एस. हरदेनिया

खाद्य सुरक्षा की स्थिति तब बनती है जब सभी लोगों के पास हर समय पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन के लिए भौतिक एवं आर्थिक पहुंच उपलब्ध होती है, ताकि एक सक्रिय एवं स्वस्थ जीवन के लिए उनकी आहार संबंधी आवश्यकताओं एवं खाद्य वरीयताओं की पूर्ति हो सके। खाद्य सुरक्षा इस बात का बहुत महत्वपूर्ण निर्धारक है कि लोग सक्रिय और स्वस्थ जीवन जी सकते हैं या नहीं, क्योंकि यह पोषक तत्वों की जरूरत को पूरा करने के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थों तक उनकी पहुंच निर्धारित करता है। खराब खाने से पनपने वाले खतरे को पहचानने और समझने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन के सहयोग से इस वर्ष 7 जून को नए थीम के साथ खाद्य सुरक्षा दिवस मनाया। विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस 2024 का विषय था- ह्यखाद्य सुरक्षा : अप्रत्याशित के लिए तैयारी करें ह्ल इस वर्ष का थीम खाद्य सुरक्षा, घटनाओं के लिए तैयार रहने के महत्व को रेखांकित करता है, चाहे वे कितनी भी हल्की या गंभीर क्यों नहीं हों। खाद्य सुरक्षा दिवस को मनाने के लक्ष्य हैं : खाद्य सुरक्षा, मानव स्वास्थ्य, आर्थिक समृद्धि, कृषि बाजार पहुंच, सतत विकास में योगदान करने, खाद्य जनित जोखिमों का पता लगाने एवं रोकने तथा प्रबंधित करने में मदद हेतु ध्यान आकर्षित करने और कार्रवाई को प्रेरित करने हेतु। एक अनुमान के अनुसार हर साल वायरस, बैक्टीरिया, रासायनिक पदार्थों से दूषित भोजन खाने से लगभग 600 मिलियन लोग बीमार पड़ते हैं और 420000 लोग मारे जाते हैं। इनमें ज्यादातर औरतें और बच्चे होते हैं। पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की हर साल 125000 मौतें होती हैं। सयुंक्त राष्ट्र ने खाद्य सुरक्षा में चुनौतियां चिन्हित की हैं जो हैं : जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान, मौसम की परिवर्तनशीलता, आक्रामक फसल कीट और लगातार चरम मौसमी घटनाओं का खेती कार्यों पर हानिकारक प्रभाव आदि। इससे ऊपज में कमी, पोषण गुणवत्ता की गिरावट और किसान आय में हानि हो रही है। हरित क्रांति से भारतवर्ष में खाद्य असुरक्षा और गरीबी दोनों के स्तरों में कमी आई है। साथ में जनसंख्या की वृद्धि के दबाव को भी सहन किया है। परंतु अभी भी खाद्य सुरक्षा को बनाए रखने में बहुत सी चुनौतियां हैं जिनमें बढ़ते भूमि क्षरण, मृदा उर्वरता की हानि, जल जमाव, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान (रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण), खाद्य प्रबंधन नीति का अभाव, खाद्यान्नों में लीकेज एवं डायवर्सन, अनाज का सडा, बारिश में भीगने से अनाज का खराब होना, फल/सब्जियों का प्रबंधन, नकली राशन कार्ड आदि। इसके लिए सरकार को गोदामों और कोल्ड स्टोरेज, फार्म टू फैक्टरी की सुविधा देनी होगी। भारत में वार्षिक भंडारण हानि 14 मिलियन टन खाद्यान्न है। भारत में आज भी अनाज को तिरपांलिन के नीचे खुले में रखा जाता है जिससे अनाज में नमी के साथ कवक तथा फफूंद आता है।

संक्षिप्त खबरें

22 जून को होगी अधिवक्ताओं की आमसभा

छपरा कोर्ट स्थानीय विधि मंडल के महामंत्री अमरेंद्र कुमार सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया है कि 22 जून 2024 को 10:05 बजे विधि मंडल के मुख्य कक्ष में अधिवक्ताओं की आम सभा बुलाई गई है। जिसमें अधिवक्ता के मृत्यु उपादान राशि भेजने पर विचार किया जाएगा तथा बिहार अधिवक्ता कल्याण न्यास समिति के सदस्यता शुल्क भेजने पर विचार, जिला विधि मंडल छपरा का निबंध शुल्क एवं बिहार बार काउंसिल का हाजिरी शेयर भेजने पर विचार ,कुर्सी खरीद पर विचार ,पुराने शौचालय के बिस्तार पर विचार, विधि मंडल के पूरब शेड निर्माण करने पर विचार तथा अन्य मुद्दों पर विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बिहार राज्य विधिक परिषद के निर्णय के आलोक में कल सभी अधिवक्ता छपरा में हुए अधिवक्ताओं के हत्या के विरोध में काला फीता लगाकर अपना कार्य करेंगे।

वित्तीय प्रभार नही सौंपने पर विधिक परिषद अध्यक्ष को दिया आवेदन

छपरा कोर्ट ।स्थानीय विधि मंडल की वरीय संयुक्त सचिव सरोज कुमारी ने वित्तीय अधिकार एवं प्रभार अभिलंब महामंत्री द्वारा सौंपने के लिए महामंत्री एवं विधि मंडल अध्यक्ष तथा बिहार राज्य विधिक परिषद के अध्यक्ष को पत्र भेजा है। उन्होंने अपने पत्र में कहा है कि बिहार विधिक परिषद पटना के अध्यक्ष महोदय एवं सम्मानित सदस्य गण के पत्र 1304 एवं 1305/ 2024 दिनांक 11/06/ 2024 के आलोक में वर्तमान छपरा विधि मंडल के महामंत्री अमरेंद्र कुमार सिंह का वित्तीय प्रभार सीज कर दिया गया है और वरीय संयुक्त सचिव को वित्तीय प्रभार देने का आदेश पारित किया गया है ।परंतु उक्त पत्र प्राप्ति के बावजूद भी अभी तक महामंत्री द्वारा वित्तीय अधिकार नहीं दिया गया है। जिसके कारण छपरा विधि मंडल का वित्तीय कार्य बाधित हो रहा है। अधिवक्ताओं के हित में अति शीघ्र महामंत्री महोदय को कार्य सौपने का निवेदन करते हुए संयुक्त सचिव ने पत्र भेजते हुए प्रेस विज्ञप्ति भी जारी की है। आवेदन की प्रति उन्होंने छपरा विधि मंडल के कोषाध्यक्ष को भी दिया है।

मारपीट कर मां बेटे को किया जख्मी

बनियापुर । स्थानीय थाना क्षेत्र के देवलखा भिट्ठी गाव मे पड़ोसियों ने पूर्व के विवाद मे मारपीट कर मा बेटे को जख्मी कर दिया है. घटंक के संबंध मे पीड़ित सुभाषचंद राय ने बताया है कि पड़ोसियों ने पूर्व के विवाद को लेकर विवाद कर वकील राय सचिदानंद राय उमा शंकर राय गाली गलौज करते लाठी डंडे के साथ दरवाजे पर पहुंचे ,विरोध करने पर सभी ने मिलकर मारपीट कर जख्मी कर दिया,वही बचाव मे आयी माता को भी जख्मी कर दिया ।मामले मे पुलिस अनुसंधान कर रही है।

अंग्रेजी शराब के साथ धंधेबाज गिरफ्तार

इसुआपुर । स्थानीय थाना क्षेत्र के अमरदह गाँव से पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर लालबाबू मांझी को 8 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ रंगे हाथ पकड़ लिया। धंधेबाज अपने घर में शराब छिपा कर रखा था। थानाध्यक्ष कमल राम ने बताया कि ताड़ी की आर में यह धंधा करता है। पुछताछ के बाद उसे बुधवार को जेल भेज दिया जाएगा। छापेमारी दल में एएसआई मुकेश कुमार गिरी के साथ पुलिस बल थी।

क्रिकेटर महिला की बिगड़ी तबीयत, अस्पताल में करवाया गया इलाज

जमुई [झाझा] मंगलवार को पांचवा मुकाबला रेलवे चांदवारी मैदान में आयोजित हो रहे सीनियर महिला टी- 20 मैच के दौरान एक महिला क्रिकेट खिलाड़ी की तबीयत बिगड़ गई जिसके बाद उसे आनन फानन में इलाज के लिए रेफरल अस्पताल झाझा में भर्ती करवाया गया जहां उसका इलाज किया गया। बताया जाता है कि मंगलवार को पांचवा मुकाबला खेला जा रहा था कि उसी दौरान तीखी धूप और भीषण गर्मी होने के कारण महिला क्रिकेटर याशिता सिंह को अचानक चक्कर आ गया और उसकी तबीयत बिगड़ गई जिसके बाद ग्राउंड पर मौजूद अन्य खिलाड़ी एवं अन्य लोगों ने उसे तुरंत इलाज के लिए अस्पताल लाया जहां उसका इलाज किया गया गया। अस्पताल में महिला क्रिकेटर का इलाज करने वाले चिकित्सक डॉ.प्रियदर्शी ने बताया कि महिला क्रिकेटर को लू लग गया जिसके वजह से उसे उल्टी ओर चक्कर आ रहा था। अस्पताल में उसका बेहतर इलाज किया गया जिसके बाद उसकी स्थिति में सुधार हुआ। प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. अरूण कुमार सिंह ने बताया कि महिला क्रिकेटर को अस्पताल में बेहतर इलाज होने के बाद उसकी स्थिति में सुधार किया गया जिसके बाद उसके साथियों के द्वारा उसे वापस ले जाया गया। बताते चले कि याशिता सिंह बिहार पटना की रहने वाली है जो भारतीय क्रिकेट बोर्ड महिला क्रिकेट अंडर 19 की कप्तान रह चुकी है।

स्टेशन पर खाना बांटने वाला संस्था रोटी बैंक जयनगर को

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी। जयनगर दरभंगा के स्थित दलाल रिसोर्ट में सामाजिक संस्था समर्पण के द्वारा सामाजिक कार्यों में अपना उत्कृष्ट योगदान देने के लिए रोटी बैंक जयनगर को सम्मानित किया गया। सदस्य अमित गुप्ता, विकास महतो ने इस सम्मान को सभी सदस्यों एवम दाताओं को समर्पित किया। बताते चले कि रोटी बैंक जयनगर के द्वारा पिछले 6 साल से नॉन स्टॉप सेवा के तहत जयनगर स्टेशन परिसर में गरीब और भूखे लोगो को निशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है साथ ही समय समय पर सामाजिक कार्यों में भी अपनी सहभागिता निभाता रहा है। इस समारोह में सभी जिलों के सामाजसेवी संस्थाओं को आमंत्रित किया गया था। इस समारोह में संस्था के मुख्य अतिथियों ने कहा कि ऐसा आयोजन हर साल होना चाहिए जिसमें बिहार से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ता लोगों को सम्मानित किया जाए तो उन्हें और भी अच्छा करने की प्रेरणा मिले।

बिहार राज्य सबजूनियर बालिका हैंडबॉल प्रतियोगिता में सारण बना उपविजेता बधाई देने की लगी होड़

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। बिहार हैंडबॉल संघ के तत्वावधान में पटना के मनेर शेरपुर में आयोजित 9 वी सबजूनियर बालिका हैंडबॉल प्रतियोगिता के रोमांचक फाइनल मुकाबला में पटना ने 14 - 10 गोल के अंतर से सारण को पीछे छोड़ चैंपियन ट्रॉफी जीता। वही लगातार खेले गए मैच में दरभंगा , जहानाबाद ,कैमूर , वैशाली , पूर्णिया , सेमीफाइनल में नवादा को पराजित कर फाइनल तक पहुंची सारण टीम को उपविजेता ट्रॉफी संघ रजत पदक से अतिथियों ने सम्मानित किया। मैंने ऑफ द टूनामेंट बेस्ट प्लेयर की ट्रॉफी सारण टीम की कैप्टेन राष्ट्रीय खिलाड़ी रागिनी कुमारी को मिला जो संत जलेश्वर एकेडमी की छात्रा है। वही बेस्ट गोलकीपर पटना के सोनाली को मिला। सारण टीम के कोच राष्ट्रीय खिलाड़ी आकाश कुमार जबकि मैनेजर शिक्षक अंकित कुमार थे। जबकि प्रतियोगिता में तकनीकी पदाधिकारी के रूप में राष्ट्रीय रेफरी रितेश कुमार सिंह एवम अभिषेक कुमार सिंह भाग लिया। टीम में शामिल खिलाड़ी रागिनी कुमारी , दीपशिखा कुमारी उप कप्तान , करिश्मा कुमारी , आदिति कुमारी (सभी राष्ट्रीय खिलाड़ी), रीमा कुमारी, सिमरन कुमारी, अर्चना कुमारी, अंजली ,खुशबू , नेहा , गौरी , आकांक्षा कुमारी सभी ने बेहतर खेल प्रदर्शन किया। जो संत जलेश्वर एकेडमी लौवा बनियापुर , उच्च विद्यालय मशरक एवम उच्च विद्यालय महुली चकहन इसुआपुर की छात्रा है। सारण टीम के बेहतर प्रदर्शन पर सारण जिला हैंडबॉल संघ के मुख्य संरक्षक विधान पार्षद इंजीनियर सच्चिदानंद राय, अध्यक्ष कृष्णमोहन सिंह , चेयरमैन डा. हरेंद्र सिंह , उपाध्यक्ष डा जितेंद्र सिंह , मुखिया अजीत सिंह , राकेश कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष प्रिंस कुमार , ठाकुर विनोद सिंह अप्पू जी सहित अन्य ने टीम बधाई दी। सारण जिला हैंडबॉल संघ के सचिव संजय कुमार सिंह ने बताया कि सारण बालिका टीम का संत जलेश्वर में लगातार चल रहे प्रशिक्षण शिविर की बदौलत खिलाड़ी बेहतर प्रदर्शन कर रहे। शीघ्र ही उपविजेता टीम को जिला संघ सम्मानित करेगा।

आरा बस स्टैंड में नगर व्यवसायिक संघ के द्वारा जिला प्रशासन का पुतला दहन किया गया

प्रात : किरण संवाददाता

बिहार के भोजपुर जिला के उदवंतनगर क्षेत्र के जीरो माइल बाजार पर लगातार दो दिनों से फायरिंग अपराधियों द्वारा किया जा रहा है। अपराधियों द्वारा लगातार शहर में व्यसाइयों से रंगदारी मांगी जा रही हैं , रंगदारी ना देने के कारण सोमवार शाम बाइक सवार हथियारबंद अपराधियों ने दहशत फैलाने के लिए अंधाधुंध फायरिंग की इस फायरिंग के दौरान नमस्ते मार्ट के मालिक और सड़क के दूसरे किनारे स्थित अल्युमिनियम दुकान के स्टाफ को गोली लग गई। दोनों को इलाज के लिए आरा शहर के बाबू बाजार स्थित निजी अस्पताल लाया गया और आज भी वे जीवन - मौत से जूझ रहें है । आज सैकडों व्यवसायों द्वारा बस स्टैंड आरा में जिला प्रशासन पुतला दहन किया । घटना शाम 6:30 बजे की बताई जा रही थी ।अपराधियों की संख्या पांच थी. घटना को अंजाम देने के बाद बाइक सवार अपराधी मौके से भाग निकले। लगातार दो दिन से हो रही फायरिंग की घटना को लेकर स्थानीय दुकानदार व लोगों का आक्रोश भड़क उठा। दो दिन बीत जाने के बाद भी अभी तक जिला प्रशासन भोजपुर अपराधियों को पकड़ने में नाकाम रही हैं। जिसके कारण आरा नगर के अक्रोशित व्यवसायों द्वारा बस स्टैंड आरा में भोजपुर जिला प्रशासन का पुतला दहन कर विरोध दर्ज किया गया । आरा नगर व्यवसाई संघ ने कहा की अगर जिला प्रशासन के द्वारा अपराधियों को जल्द से जल्द पकड़ कर साजा नहीं दिलावती हैं तो आने वाले दिनों इससे भी बड़ा आंदोलन किया जाएगा। बिहार सरकार तो बोलती हैं की ये सुशासन की सरकार हैं परंतु प्रत्येक दिन बिहार के किसी न किसी भाग में अपराध को अंजाम दिया जा रहा है बिहार के जानता दहसत में हैं की कब किसके साथ अपराधिक घटना घट जाए, कोई सुरक्षित नहीं है। ये सरकार महाजंगल राज की चल रही है। इस पुतला दहन कार्यक्रम में व्यवसाई संघ आरा नगर सचिव बबलू गुप्ता , उपाअध्यक्ष राजेश कुमार,राजु प्रसाद, राजेंद्र यादव, बालमुकुन्द चौधरी, धनंजय सिंह,अनिल वर्मा, हरिशंकर जी, छात्र संगठन आइसा भोजपुर जिला सहसचिव रौशन कुशवाहा,रणधीर राणा,महेंद्र प्रसाद, राकेश सिंह,दिपक कुमार,मोहम्मद सहजाद ,संत जी , भीम पासवान, कलावती गुप्ता, सुनील कुमार, रितेश कुमार सहित सैकड़ों लोगों शामिल थे ।

शराब कांड व एससी/एसटी एक्ट मामले में 6 अभियुक्त गिरफ्तार

बगहा पुलिस द्वारा वाहन जांच के दौरान 93,000 रुपए का जुर्माना लगाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

बगहा ।बगहा पुलिस जिला में सोमवार को विगत 24 घंटा में 06 अभियुक्त की गिरफ्तारी की गई है ।कुल-03 अजमानतीय वारंट का निष्पादन किया गया है। उक्त जानकारी पुलिस अधीक्षक,बगहा सुशांत कुमार सरोज ने प्रेस रिलीज जारी करके दिया ।उन्होंने बताया कि लौकरिया थाना,धनहाँ थाना,रामनगर थाना द्वारा शराब के काण्ड तथा एससी/एसटी एक्ट में 06 अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया ।एसपी ने बताया कि बगहा पुलिस द्वारा को अपराध नियंत्रण हेतु वाहन जॉच किया गया। जॉच के क्रम में यातायात थाना द्वारा-23,000, रामनगर थाना द्वारा-16,000, धनहाँ थाना द्वारा-15,000, चौतरवा थाना द्वारा-14,000, पटखौली थाना द्वारा-14,000, बगहा थाना द्वारा-11,000 इस प्रकार कुल 93,000 रुपए का जुमार्ना लगाया गया ।एसपी ने बताया कि अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए बगहा पुलिस का निरंतर अभियान जारी है ।सोमवार की रात्रि में विभिन्न थाना क्षेत्रों में बगहा पुलिस द्वारा रोको टोको अभियान किया गया तथा संदिग्ध व्यक्ति,वाहनों का विधिवत जांच किया गया ।मंगलवार को बगहा पुलिस द्वारा अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाए रखने हेतु दिवा गस्ती के दौरान विभिन्न थाना अंतर्गत वाहनों,बैंकों तथा संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग की गई साथ ही हर कार्य दिवस की तरह एसपी बगहा सुशांत कुमार सरोज के द्वारा कार्यालय कक्ष में कई आम जनता,परिवादियों की समस्या सुनी गई तथा त्वरित निराकरण हेतु संबंधित थानाध्यक्षों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

नव निर्वाचित सांसद का क्षेत्रीय भ्रमण कर लोगों से किया संवाद स्थापित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई। जमुई लोकसभा के नव निर्वाचित सांसद अरुण भारती मंगलवार 18 जून को जीतने के बाद पहली बार जमुई आये ।पटना से जमुई आने के क्रम में पहले वो महादेव सिमरिया स्थित धनेश्वर नाथ मंदिर में अपने समर्थकों के साथ पूजा अर्चना किये ।तत्पश्चात लोजपा के पूर्व प्रत्याशी सुभाष पासवान के छोटे भाई विक्रम पासवान के आकस्मिक निधन हो जाने के बाद उनके परिजनों से मिलकर सांत्वना दिए ।इसी क्रम में माननीय पूर्व केंद्रीय मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव की माता पूर्व विधायक शांति देवी के मरणोपरांत बरहट स्थित आवास पर जाकर उनके परिजनों से मिले ।विगत कुछ दिनों पहले खैरा प्रखंड अंतर्गत नवडीहा गाँव निवासी संजय साव के पुत्र सत्यदेव कुमार की हत्या किए जाने के बाद परिजनों से मिलकर सांत्वना दिए और प्रशासनिक स्तर पर हर सम्भव सहायता करने की बात कहे। क्षेत्र भ्रमण के क्रम में माननीय सांसद बेला स्थित निमार्णाधीन मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल का भी निरीक्षण किये और संबंधित अधिकारी को जरूरी सुझाव दिए। क्षेत्र भ्रमण के दौरान सांसद अरुण भारती के साथ जिलाध्यक्ष जीवन सिंह,बीजेपी जिलाध्यक्ष कन्हैया सिंह,लोजपा प्रदेश महासचिव चंदन सिंह,जद यू नेता राकेश पासवान, लोजपा उद्यमी प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रधान महासचिव राहुल रंजन सिंह,रवि शंकर पासवान,पूर्व जिलाध्यक्ष मोतिउल्लाह, रिन्कू सिंह,विमल वर्मा,संगीता पासवान,गौतम पासवान,राहुल भवेश, नंदकिशोर यादव,हरेराम रावत,दीपक सिंह,सकलदेव यादव,दयानंद पंडित सहित दर्जनों की संख्या में एनडीए के पदाधिकारी एवम कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने गड़खा थाना अंतर्गत जानकी नगर ग्राम में स्थल पर जाकर विधि व्यवस्था का लिया जायजा

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। गड़खा थाना के जानकी नगर ग्राम में सोमवार की रात्रि में दो पक्षों के बीच झड़प के बाद वहाँ विधि व्यवस्था बनाये रखने के उद्देश्य से दंडाधिकारी एवं पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति की गई थी।

आज जिलाधिकारी अमन समीर एवं पुलिस अधीक्षक कुमार आशीष ने जानकी नगर जाकर स्वयं विधि व्यवस्था का जायजा लिया। वहाँ विधि व्यवस्था की वर्तमान स्थिति संतोषप्रद पाई गई। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर एवं अनुमंडल पदाधिकारी सदर एवं को आवश्यकतानुसार अतिरिक्त दंडाधिकारी एवं पुलिस बल प्रतिनियुक्त करने का निदेश दिया गया। उन्हें प्रतिनियुक्त किये गये दंडाधिकारियों एवं पुलिस बल की स्थल पर उपस्थिति का पर्यवेक्षण का सुनिश्चित करने को कहा गया। प्रखंड विकास पदाधिकारी गड़खा एवं एवं थाना प्रभारी को संयुक्त रूप से लगातार भ्रमणशील रहकर विधि व्यवस्था सामान्य बनाये रखने को कहा गया। दोनों अधिकारियों को आज ही स्थानीय शांति समिति की बैठक करने का निदेश दिया गया।

सप्तक्रांति एक्सप्रेस के चपेट आने से एक युवक की हुई दर्दनाक मौत

प्रात : किरण ब्यूरो

बगहा। बगहा रेलवे स्टेशन के रेलवे ट्रैक पोल संख्या 290 के 15/17 के बीच मंगलवार दोपहर बाद मुजफ्फरपुर से आनंद विहार जा रही सप्तक्रांति एक्सप्रेस के चपेट आने से एक युवक की दर्दनाक मौत हो गई है। मृतक की पहचान बगहा रतनमाला के वार्ड 33 निवासी अजय यादव का पुत्र धीरेंद्र यादव के रूप में की गई है। जिसका उम्र करीब 30-35 वर्ष बताई जा रही है। प्रत्यक्षदर्शियों की माने तो युवक रेल ट्रैक के समीप काफी देर तक किसी से फोन पर बात कर रहा था। इस दौरान ट्रेन आने पर उसके आगे छलांग मार कर लेट गया।

इस बाबत बगहा आरपीएफ प्रभारी इंद्रजीत सिंह ने बताया कि सूचना मिलते हीं आरपीएफ की टीम को मौके पर भेजा गया। तथा इसकी सूचना पटखौली थाना को दी गई। पटखौली थाना के द्वारा युवक के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु अनुमंडलीय अस्पताल भिजवाया गया।

तारापुर के रक्तवीर किशन को किया गया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर)। तारापुर के किशन केशरी उर्फ रक्तवीर किशन को दिल्ली में राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया गया है । गौरतलब है कि रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए तारापुर के किशन केशरी(रक्तवीर किशन) को दिल्ली मे राष्ट्रीय सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया । सोमवार को किशन ने बताया की सम्मान व संगोष्ठी में भारत के करीब सभी राज्यों के प्रतिनिधि हिस्सा लिए केशरी मूल रूप से मुंगेर जिला के अंतर्गत पड़ने वाले तारापुर के है जो बिहार के मुंगेर जिला के अंतर्गत पड़ता है। इन्हें समाज सेवा की प्रेरणा अपनी नानी से मिला है। बता दे कि किशन केशरी जिन्होंने अपने एक हेल्प फॉर सोसाइटी जो कि बजरंग दल का हिस्सा व्हाट्सएप के माध्यम से लोगो को जोड कर तारापुर के साथ साथ बिहार के सभी जगह अपने साथियों के द्वारा निःशुल्क रक्त मुहैया करवाते है। हेल्प फॉर सोसाइटी के संस्थापक किशन केशरी का कहना है कि रक्त के बगैर किसी को तड़पता नही देख सकते । इन्होंने अभी तो 14 बार रक्तदान कर चुके है । आगे इनका कहना है मैं सौ साल जिऊ या ना जिऊ मैं आने जीवन काल में एक सौ बार जरूर रक्तदान करूंगा।

हत्या की नीयत से अपहरण करने वाले दो अपराधी को पुलिस ने किया पिस्टल के साथ गिरफ़्तार

प्रात : किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)। थाना क्षेत्र के बरियारपुर बाजार से एक युवक को पांच की संख्या में अपराधी पिस्तौल के बल पर अपहरण कर टोटो गाड़ी पर बैठाकर जान मारने की नियत से लेकर भागे। इसी बीच पुलिस को किसी ने सूचना दे दिया इसके बाद बरियारपुर पुलिस हरकत में आए और अपहरण कर भाग रहे अपराधी में से दो अपराधी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया । घटना की जानकारी देते हुए बरियारपुर थानाध्यक्ष राजेश कुमार ने बताया कि सोमवार की शाम को लगभग 7 बजे सूचना मिली कि एक युवक को टोटो गाड़ी पर जबरदस्ती बैठाकर कुछ अपराधी खड़गपुर रोड की दिशा में भाग रहा है। सूचना पर बरियारपुर पुलिस ने त्वरित कारवाई हुए अपराधी का पीछा करना शुरू किया जिसे सोती पुल के समीप भाग रहे अपराधियों में से दो अपराधी जो कि पड़िया निवासी गोलू कुमार उर्फ निशांत कुमार एवं प्रेम कुमार को एक पिस्टल एवं एक खोखा के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। पिस्टल एवं खोखा गोलू कुमार के पास से बरामद हुआ एवं अन्य तीन अपराधी भागने में सफल रहे अपराधी भागने के दौरान पुलिस पर भी फायरिंग किया गया था । अपहृत युवक पड़िया निवासी कृष्ण सिंह के पुत्र आतिश कुमार को घायल अवस्था में बरामद कर लिया गया है जिसे चिकित्सा के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा गया पुलिस पर फायरिंग के आरोप में पुलिस के तरफ से अपराधियों के विरुद्ध प्राथमिक की दर्ज की गई है। घायल पड़िया निवासी आतिश कुमार के बयान पर प्राथमिकी दर्ज की गई है जिसमें बताया है कि 5 की संख्या में पड़िया निवासी गोलू कुमार उर्फ निशांत कुमार सूरज कुमार आशीष कुमार प्रेम कुमार एवं अंशु कुमार ने पिस्तौल सटाकर जबरदस्ती टोटो गाड़ी पर बैठाकर खड़गपुर रोड में जान मारने की नियत से भागने लगा सोती पुल के समीप पिस्तौल के बट से मेरे सर पर मारते हुए मुझे बुरी तरह घायल कर दिया पुलिस टीम के द्वारा मुझे बचा लिया गया। घायल युवक आतिश कुमार ने जानकारी दिया कि सोमवार की दोपहर में मामा का सड़क पर जाने के क्रम में मामा का बाइक से गोलू कुमार से हल्का सा सट गया था सभी गिरफ्तार युवक को न्यायिक हिरासत में मुंगेर भेज दिया गया बचे हुए अपराधियों के गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

हर घर नल जल की व्यवस्था की समीक्षात्मक बैठक आयुक्त संजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में संपन्न

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर। भीषण गर्मी के दृष्टिगत मुंगेर प्रमंडल के सभी जिलों में पेयजल समस्या व संकट, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग अंतर्गत पेय जलापूर्ति व्यवस्था, हर घर नल जल की व्यवस्था की समीक्षात्मक बैठक मंगलवार को प्रमंडलीय सभागार में आयुक्त संजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में पीएचईडी विभाग तथा पंचायती राज विभाग अंतर्गत क्रियान्वित योजनाओं के तहत पेयजलापूर्ति योजना के शत प्रतिशत क्रियान्वयन करने तथा हर घर नल जल योजना का लाभ लाभूकों को पहुंचाने पर बिंदुवार चर्चा की गई ।इस बैठक में आयुक्त के सचिव अरविंद कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी दिलीप कुमार देव, अधीक्षण अभियंता पीएचईडी मुंगेर एवं बेगूसराय अंचल, सभी जिलों के कार्यपालक अभियंता, पीएचईडी सहित अन्य उपस्थित थे। आयुक्त द्वारा प्रमंडल अंतर्गत लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के तहत जिले भर में पेय जलापूर्ति के लिए क्रियान्वित योजनाओं के संबंध में ली गयी योजनाओं, कार्यरत, अकार्यरत एवं विवाद के कारण बाधित योजनाओं की जिला बार जानकारी ली गयी। लखीसराय अधीक्षण अभियंता द्वारा बताया गया कि हर घर नल जल योजना के लिए बिछाए गए पाइप लाइन से कुछ जगहों पर स्थानीय किसानों अथवा दबंगों द्वारा पाइप को पंक्चर कर खेतों के सिंचाई का कार्य किया जा रहा है, जिससे अन्य लोगों को पेयजल का लाभ नहीं मिल पा रहा है। अन्य जिलों में भी ऐसी शिकायतों की जानकारी पर आयुक्त ने कहा कि ऐसे लोगों को चिन्हित करें तथा तत्काल प्राथमिकी दर्ज कराते हुए उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करें। यदि उनके द्वारा कोई विरोध किया जाता है तो दण्डाधिकारी तथा पुलिस बल को साथ ले जाएं और उनके खिलाफ कार्रवाई करें। ऐसे तत्वों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। इसके अलावे पेयजल के लिए जो भी टावर का निर्माण किया गया है, उसकी गुणवत्ता की जांच करें ताकि पेय जल का स्टोरेज उसमें सही से हो और उससे स्थानीय आम जन को शुद्ध पेयजल की आपूर्ति की जा सके।

आयुक्त ने कहा कि सभी टावरों का आईओडी डिवाइस से मॉनिटरिंग करें तथा उसका अद्यतन जांच प्रतिवेदन लेते रहें, कि कहीं उसमें कोई परेशानी तो नहीं हो रही है। मुंगेर पीएचईडी विभाग के कार्यपालक अभियंता द्वारा बताया गया कि मुंगेर में पीएचईडी के तहत 800 योजना है और सभी क्रियान्वित हैं। आयुक्त द्वारा जानकारी ली गयी कि यदि कहीं बोरिंग फेल होने की स्थिति उत्पन्न होती है तो उस पर क्या कार्रवाई की जाती है। इस पर संबंधित अभियंता द्वारा बताया गया कि माइनर समस्या का निजात 24 घंटे तथा मेजर समस्या का 72 घंटे के अंदर निदान कर लिया जाता है। बोरिंग के किसी भी समस्या का निदान तुरंत कर दिया जाता है। आयुक्त ने बताया कि कई जिलों से आपरेटर द्वारा पेय जलापूर्ति में अनियमितता बरती जा रही है, ऐसे आपरेटरों को चिन्हित करें तथा उनके खिलाफ कार्रवाई करें। आयुक्त ने सभी कार्यपालक अभियंताओं से छूटे हुए टोलों, वार्डो व बसावटों में जहां नल जल योजना ली गयी है, बताया गया कि टेंडर की प्रक्रिया की जा रही है। निदेश दिया गया कि छूटे हुए नल जल योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए टेंडर से संबंधित सभी प्रक्रिया, एकरारनामा एवं कायादेश संबंधी सभी प्रक्रिया अधिकतम दो माह के अंदर हर हाल में पूर्ण कर योजनाओं को क्रियान्वित करें। अधीक्षण अभियंता बेगूसराय एवं मुंगेर को अपने स्तर से अनुश्रवण करते हुए उसे सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया। आयुक्त द्वारा पीएचईडी कार्यपालक अभियंताओं से सभी जिलों के प्राथमिक एवं मध्य विद्यालयों में नल जल योजना द्वारा टावर निर्माण और बोरिंग की व्यवस्था की भी जानकारी ली गयी। बताया गया कि सभी जिलों में अब शिक्षा विभाग के स्तर से पेय जलापूर्ति की व्यवस्था किया जाना है। आयुक्त ने कहा कि यदि शिक्षा विभाग द्वारा भी इस तरह की व्यवस्था की जा रही है तो भी आप उसकी जांच रिपोर्ट तैयार कर रखें साथ ही उसकी गुणवत्ता की भी जांच करें। इसके अलावे सभी विद्यालयों में पीएचईडी द्वारा चापानल कार्यरत करने की भी व्यवस्था करें। विद्यालय द्वारा किए गए पेयजलापूर्ति के अतिरिक्त पीएचईडी विभाग द्वारा सभी विद्यालयों में चापानल अवश्य संस्थापित कराएं, ताकि यदि बोरिंग खराब हो तो चापानल से पानी की व्यवस्था होती रही। इस संबंध में उपस्थित क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक सह आयुक्त के सचिव को निर्देश दिया गया कि वे सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी से रिपोर्ट प्राप्त करें, कि ऐसे प्राथमिक एवं मध्य विद्यालयों जो छूटे हुए हैं, जहां चापानल कार्यरत नहीं है, की सूची संबंधित कार्यपालक अभियंता पीएचईडी को चापानल की मरम्मती हेतु हस्तगत कराएं। वहीं आंगनबाड़ी केंद्रों में भी आयुक्त द्वारा पेयजलापूर्ति व्यवस्था का निर्देश दिया गया। उन्होंने कहा कि सभी जिलों में संचालित सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में पीएचईडी विभाग द्वारा कम से कम एक कनेक्शन पेयजल की जरूर लगाएं। उन्होंने सभी डीपीओ आईसीडीएस से जिलावार सभी सरकारी निजी भवनों में नल जल योजना से जलापूर्ति एवं चापानल की स्थिति के संबंध में प्रतिवेदन प्राप्त करने का निर्देश विशेष कार्य पदाधिकारी को दिया गया। तद्लोक में संबंधित कार्यपालक अभियंता, सभी निजी/सरकारी भवनों में संचालित आंगनबाड़ी केंद्रों में प्राप्त सूची के आधार पर 15 दिनों के अंदर शत प्रतिशत पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करें। आयुक्त ने सभी जिलों के भू-जल स्तर की भी जानकारी ली। जिलावार भू- जलस्तर की जानकारी दी गयी। बताया गया कि भू- जल स्तर से सबसे ज्यादा प्रभावित जिला शेखपुरा है, जहां का भू-जल स्तर 38 फीट है। वहीं खगड़िया का औसत भू- जल स्तर से 19 फीट बताया गया। जबकि मुंगेर का 28 फीट, जमुई का 29 फीट, बेगूसराय का 24 तथा लखीसराय का 29 फीट औसत जल स्तर बताया गया। आयुक्त ने कहा कि शेखपुरा में जलस्तर की समस्या गंभीर प्रतीत हो रही है, इस लिए वहां पेय जलापूर्ति की समुचित व्यवस्था करें ताकि इस भीषण गर्मी में लोगों को पेयजल की समस्या से नहीं जूझना पड़े। साथ ही चापानलों का भी लक्ष्य के अनुरूप संस्थापन का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जिस टोलों में पेयजल की जहां जहां समस्या है और नल जल योजना से लोगों को पानी नहीं मिल पा रहा है, वैसे स्थानों पर जलापूर्ति हेतु तत्काल टैंकर के माध्यम से पेयजल सुलभ कराएं और फिर परमानेंट व्यवस्था भी करें। अधीक्षण अभियंता स्वयं इसका अनुश्रवण करें कि उस क्षेत्र में नियमित जलापूर्ति की व्यवस्था हेतु स्थायी निदान कैसे हो सकता है और इसके लिए योजना तैयार कर अग्रेत्तर कार्रवाई करें।

आयुक्त ने कहा कि जल संकट अथवा समस्या को लेकर विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित जिलावार प्रेस कतरन का उल्लेख करते हुए संदर्भित समाचार के आलोक में की गयी कार्रवाई के संबंध में संबंधित अधीक्षण अभियंता एवं कार्यपालक अभियंताओं से जानकारी ली एवं निर्देश दिया कि उक्त प्रेस कतरनों के आलोक में कृत कार्रवाई प्रतिवेदन वे एक सप्ताह के अंदर उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने कहा कि नल जल योजना में जल के अपव्यय पर भी रोकथाम आवश्यक है। इसके लिए लोगों को जागरूक करें।

संक्षिप्त खबरें

पीडब्ल्यूडी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष ने उत्तर दिल्ली के सांसद से किया मुलाकात

गया ।उत्तर दिल्ली लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनोज तिवारी से पीडब्ल्यूडी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री हृदय यादव ने मुलाकात कर उत्तर दिल्ली लोकसभा क्षेत्र में पड़ने वाले सभी दिव्यांग भाई बहनों कि ओर बधाई एवं पुष्प गुछ देकर स्वागत किया है ।यादव ने सांसद से उत्तर दिल्ली क्षेत्र में पड़ने वाले दिव्यांगजनों के लिए मोटराइज्ड गाड़ी बैसाखी क्लिपर जूता ट्राईसाईकिल व्हीलचेयर दिव्यांगता पेंशन प्रधानमंत्री आवास योजना पानी बिजली दवाई शिक्षा रोजगार इत्यादि चीजों को भरपूर मात्रा में उपलब्ध कराने का यादव ने अनुरोध किया है इस मौके पर दिल्ली पीडब्ल्यूडी संगठन के प्रदेश अध्यक्ष चेतन उपाध्याय सहयोगी अभिजीत कुमार मौजूद रहे धन्यवाद।

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष ने केंद्रीय मंत्री से की मुलाकात

गया ।मंगलवार को खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के मंत्री चिराग पासवान से मुलाकात कर भारत के सभी दिव्यांग जनों की ओर से बधाई एवं स्वागत पीडब्ल्यूडी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष हृदय यादव ने किया मंत्री से यादव ने बातचीत के दौरान भारत के 28 राज्यो के दिव्यांगजनो के लिए अंतोदय कार्ड योजना एवं 5% आरक्षण के आधार पर 28 राज्यों में डिलरो के रिक्त पदों पर दिव्यांग जनों को पद स्थापित करने हेतु अनुरोध किया है ।मंत्री ने आश्वासन भी दिया है

कच्चा नाला निकाल कर तत्काल खत्म करें आशा नगर के रोड पर का जल जमाव : गरिमा

बेतिया ।नगर निगम क्षेत्र के आशानगर में सड़क की पट्टी पर अतिक्रमण के कारण लगातार जलजमाव से लोग ग्रसित है । बीते करीब एक साल से आशा नगर वासियों के लिए सड़क पर जल जमाव की समस्या नासूर बनी है । लोगों की शिकायत मिलने के बाद महापौर गरिमा देवी सिकारिया मंगलवार को स्थल निरीक्षण के लिए पहुंचीं । आशा नगर के मेन रोड पर जल जमाव नहीं हटने को लेकर महापौर श्रीमती सिकारिया ने अविलंब कच्चा नाला निकाल कर सड़क पर जल जमाव को तत्काल खत्म करने का आदेश घारी प्रभारी तबरेज आलम एवं सफाई निरीक्षक जुलुम साह को दिया । जमीन का ढाल उल्टा होने की समस्या पर नगर निगम महापौर ने कच्चे नाले की गहराई बढ़ा कर जल निकासी सुनिश्चित करने का सख्त आदेश दिया है । इसके साथ ही उन्होंने आक्रोशित जनता को तत्काल की स्थिति से उबरने के लिये कच्चा नाला कटवाने मे जनसहयोग की अपील की । एवं नगर आयुक्त को जल्द से जल्द नाले एवं सड़क की जमीन के अतिक्रमण की नापी कराकर अतिक्रमण मुक्त करने हेतु निर्देशित किया।

बाजार चौक अतिक्रमण पर पुलिस अलर्ट

बेतिया ।मझौलिया में आए दिन बाजार चौक पर सब्जी ठेला दुकानदारों द्वारा अतिक्रमण से जाम की समस्या को संज्ञान में लेते हुए थाना अध्यक्ष अखिलेश कुमार मिश्रा ने थाना के प्रशिक्षु अधिकारियों को भेज कर जाम से आम लोगों को राहत दिलाने के लिए जनहित में सराहनीय कदम उठाया हैं ।जिसको लेकर थाना अध्यक्ष के कार्य शैली की प्रशंसा स्थाई दुकानदार एवं आम लोगों द्वारा बाजार में देखी गई ।बताया गया कि थाना के सामने से लेकर चीनी मिल गेट बाजार चौक तक सड़क के दोनों बगल आवागमन के मुख्य सड़क पर सब्जी एवं ठेला दुकानदारों द्वारा दुकान लगाने एवं बाजार के समय ट्रक समेत भारी वाहन के आवागमन से लोगों को घंटो जाम की समस्या झेलनी पड़ती थी ।प्रशिक्षु दरोगा पुलिस बल के साथ दुकानदारों को सड़क से चार फिट पीछे हटकर दुकान लगाने का अभियान चलाएं चीनी मिल गेट से गोलंबर चौक तक अतिक्रमणकारियों को पीछे कर आने जाने वाले सवारियों को जाम से मुक्ति दिलाया थाना अध्यक्ष ने बताया कि चेतावनी देने के बाद भी सुधार नहीं हुआ तो दुकानदारों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

चौतरवा पुलिस ने की छापेमारी में 126 लीटर अंग्रेजी शराब बरामद, दो धंधेबाज गिरफ्तार

बगहा । बगहा पुलिस जिला के चौतरवा थाना पुलिस ने मंगलवार की दोपहर गुप्त सुचना के आलोक में 501 बोतल अंग्रेजी शराब के साथ ही चालक व एक धंधेबाज को गिरफ्तार किया है । चौतरवा थाना के अपर थानाध्यक्ष ज्योति पूंज ने बताया कि गुप्त सुचना मिली थी कि उत्तर प्रदेश के तरफ से बिहार में शराब की एक बड़ी खेप आने वाली है । उन्होंने बताया कि गुप्त सुचना के आलोक में प्रशिक्षु सब - इन्स्पेक्टर रुपेश कुमार, जमादार जयशंकर कुमार समेत पुलिस जवानों के नेतृत्व में एन एच 727 मुख्य मार्ग में छापेमारी अभियान चलाई गई । अपर थानाध्यक्ष ने बताया कि तभी डीएल 6 सी एम 2462 एसकोडा कार चौतरवा होतें हुए बेतिया के तरफ निकल रहा था । पुलिस पदाधिकारी व जवानों ने कार के पीछा करते हुए एन एच 727 मुख्य मार्ग के साधु बाबा पूल बहुअरवा के समीप पकड़ लिया, तथा तलाशी करने लगे।

अपराधियों का तांडव, दो लोगों को सरेआम मारी गोली

आरा सासाराम मुख्य सड़क को लोगों ने किया जाम

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। बिहार के भोजपुर जिले में अपराधियों का मनोबल दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अपराधी पुलिस के नाक के नीचे अपराधिक घटनाओं को अंजाम देकर आसानी से फरार हो जा रहे है। ताजा मामला भोजपुर जिले के उदवंतनगर थाना क्षेत्र के जीरो माइल की है, जहां अपराधियों ने एक मार्ट के मालिक और एक एल्युमिनियम दुकान के स्टाफ को गोली मार दी है। इस घटना में दोनों ही बुरी तरह जख्मी हो गए हैं, जिसके बाद दोनों को इलाज के लिए आरा शहर के बाबू बाजार स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां दोनों का इलाज चल रहा है। जख्मी नमस्ते मार्ट का मालिक नवादा थाना क्षेत्र के मौलाबाग निवासी स्वर्गीय जगदयाल सिंह के 65 वर्षीय पुत्र सियाराम सिंह हैं।

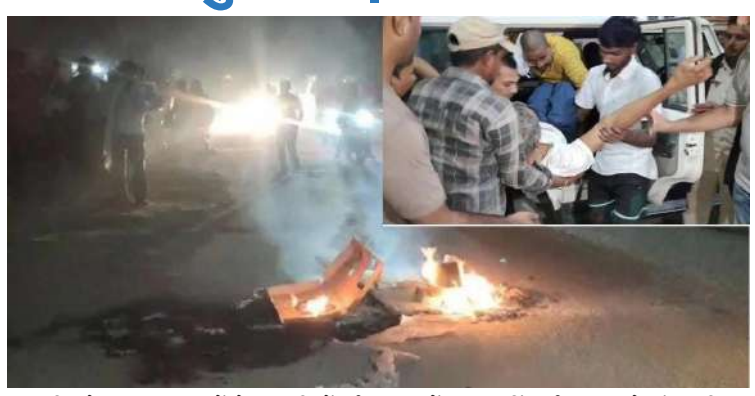

सियाराम सिंह को गोली बाएं साइट पेट में लगी है। वहीं दूसरा जख्मी चरपोखरी थाना क्षेत्र के काउप गांव निवासी अजीत कुमार सिंह के 27 वर्षीय पुत्र पप्पू कुमार है। पप्पू कुमार को गोली बाएं हाथ के बाजू पर लगी है। वहीं, घटना के बाद दुकानदार अपराधिक घटनाओं पर पुलिस द्वारा कार्रवाई नहीं करने पर आक्रोशित हो गए, जिसके बाद दुकानदारों ने अपराधियों की गिरफ्तारी को लेकर आराझसासाराम मुख्य मार्ग जीरो माइल के पास सड़क जाम कर दिया।

दुकानदारों ने सड़क पर आगजनी कर प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। वहीं घटना की सूचना मिलने के बाद एएसपी परिचय कुमार घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की जांच में जुट गए है। वहीं, आपको बता दें कि अपराधियों ने लगातार दूसरे दिन दहशत फैलाने के इरादे से गोलीबारी की घटना को अंजाम दे रहे है। बीती रात रविवार को भी अपराधियों ने इसी इलाके के दुकानों पर फायरिंग की घटना को अंजाम दिया था, जिसके बाद हथियार लहराते हुए मौके से फरार हो गए थे। इसी बीच अपराधियों ने 24 घंटे होते ही एक बार फिर से इसी इलाके में गोलीबारी की घटना को अंजाम दिया है, जिसमें नमस्ते मार्ट के मालिक और एल्युमिनियम दुकान पर काम कर रहे एक स्टाफ को गोली लगी है, जिसका इलाज निजी अस्पताल में कराया जा रहा है। वहीं, जख्मी युवक पप्पू कुमार ने बताया कि दो की संख्या में आए अपराधियों ने बिना कुछ बोले फायरिंग करना शुरू कर दिया, जिसमें एक गोली मुझे लगी है। वहीं पप्पू कुमार ने बताया कि वह एल्युमिनियम के दुकान पर स्टाफ है और उसकी किसी से दुश्मनी नहीं है। वहीं आक्रोशित दुकानदारों ने सड़क पर आगजनी कर आरा-सासाराम मुख्य मार्ग को जाम कर दिया।

गोलीबारी और सड़क जाम की सूचना मिलने के बाद एएसपी परिचय कुमार और उदवंतनगर थाना की पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और मामले की छानबीन में जुट गई है। वहीं, दुकानदारों ने बताया कि लगातार दो-तीन दिनों से इस इलाके में अपराधी अपना दबदबा बनाने के लिए गोलीबारी की घटना को अंजाम दे रहे हैं। रविवार को भी अपराधियों ने इस एरिया के तीन से चार दुकान को अपना निशाना बनाया था। दहशत फैलाने के लिए गोलीबारी की थी। सोमवार को भी अपराधियों ने एक बार फिर से गोलीबारी की घटना को अंजाम दिया है, जिस पर प्रशासन द्वारा अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। वहीं एसीपी परिचय कुमार ने बताया कि गोली चलने की सूचना मिली है। पुलिस हर तरीके से छानबीन कर रही है। कल भी गोलीबारी की गई थी, जल्द से जल्द पुलिस अपराधियों को गिरफ्तार कर लेगी।

मकई के रेशों से बाना काढ़ा के लाभ पर दर्जनों शोध पत्र प्रकाशित : डॉ पी पुष्कर

प्रात : किरण संवाददाता

आर। बदलते जीवन शैली और खानपान के कारण हमारे स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी बढ़ी है जिस कारण लगभग सभी घरों में पूरी जीवन बीमारियों से संबंधित दर्द और दवाइयां खाना मजबूरी हो गया है ऐसे में हमारे स्वास्थ्य को बेहतर और संतुलित रखने में मकई के रेशा जो हम फेंक दिया करते हैं उसे पर किए गए शोध जिसमें प्रमुख हैं।

इंटरनेशनल जनरल ऑफ पैरासिटिक साइंस एंड रिसर्च बेंगलुरु भारत द्वारा 1 सितंबर 2021 को छापा आर्टिकल के अनुसार मकई के रेशे के औषधीय गुनो पर किया गया शोध से पता चलता है की मकई के रेशे का चाय (काढ़ा) हमारे सेहत के लिए वरदान है वर्ष 2009 से प्राकृतिक चिकित्साक के रूप में सेवा दे रहे आयुष कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के निदेशक डॉ पी पुष्कर ने बताया की मकई के रेशा से बना काढ़ा से अब तक सैकड़ो पीड़ितों को गंभीर रोगों में संतोष जनके परिणाम देखने को मिला है गंभीर बीमारियों में त्वचा रोग, डायबिटीज, आर्टरी ब्लॉकेज, किडनी स्टोन, जोड़ों में दर्द अर्थराइटिस, से लेकर डायलिसिस तक की पीड़ितों को अपनी रोग से छुटकारा मिला है डॉ पुष्कर ने बताया अब तक मकई के रेशों से बाना काढ़ा के लाभ पर दर्जनों शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं जिसमें प्रमुख हैं।

दिवंगत अधिवक्ता नाग्रेन्द्र कुमार सिंह को दी गई श्रद्धांजलि

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद में एक शोक सभा आयोजित कर दिवंगत अधिवक्ता नाग्रेन्द्र कुमार सिंह को श्रद्धांजलि दी गई है। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि सर्वप्रथम उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि 1990 से विधि व्यवसायी अच्छे, सरल स्वभाव के पूर्व में जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद के कार्यसमिति सदस्य रहे नागेंद्र कुमार सिंह वर्तमान में नोटरी पब्लिक भी थे। अधिवक्ताओ ने दो मिनट के मौन रखकर उनके आत्मा के शान्ति की प्रार्थना की और सर्वसम्मति से न्यायिक कार्य से विरत रहने का निर्णय लिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला विधिज्ञ संघ के अध्यक्ष विजय कुमार पाण्डेय और संचालन महासचिव जगनरायण सिंह ने किया। मौके पर लोक अभियोजक पुष्कर अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष रसिक बिहारी सिंह, पूर्व महासचिव नागेंद्र सिंह, योगेन्द्र प्रसाद योगी, कामता प्रसाद सिंह, प्रदीप कुमार, विश्वनाथ सिंह, सत्येन्द्र सिंह, यमुना प्रसाद सिंह, दिलीप सिंह,पवन सिंह, प्रदीप सिंह, ओमप्रकाश सिंह सुजीत सिंह, अशोक सिंह, अनील सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

श्रेया हत्याकांड की उद्भेदन के लिए हर संभव कार्रवाई पूरी चौकसी के साथ हो : निवर्तमान सांसद

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। औरंगाबाद लोकसभा क्षेत्र के निवर्तमान सांसद व भाजपा नेता सुशील कुमार सिंह ने औरंगाबाद एस.पी को पत्र के माध्यम से ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि बहुचर्चित श्रेया हत्याकांड के विषय में कुछ सवाल और सलाह भी देना चाहता हूँ। सर्वप्रथम मैं जानना चाहूँगा कि श्रेया की माँ ने जब बेटी की गुमसूदगी की सूचना थाने में दी तो पुलिस ने इसे एक गंभीर मामला मानते हुए गंभीरता पूर्वक इसका संज्ञान ले कर औरंगाबाद और आसपास के जिलों में एक लड़की के गुम होने का प्रचार चित्र सहित किया गया की नहीं। यदि नहीं किया तो क्यों ? क्योंकि मेरा मानना है कि ऐसा करने से लड़की सही सलामत बरामद हो सकती थी या घटना होने की सूचना और जल्दी मिल सकती थी।मैं कहना चाहूँगा कि ऐसी किसी घटना होने पर जिसका कारण घटना स्थल, घटना का समय और घटना को अंजाम देने वाले के विषय में स्पष्ट जानकारी ना हो सबकुछ संदेह के घेरे में हो वैसे मामलों में पुलिस को जांच अनुसंधान में कोई एक कारण नहीं मानते हुए जांच केवल एक ही दिशा में नहीं करते हुए सारे विकल्प खुले रखने चाहिए अथार्त पुलिस की नजरे चौतरफा होनी चाहिए। जैसा कि शव के अंत्य परीक्षण प्रतिवेदन में जीवित अवस्था में पानी में डूबने और मरने की बात कही जा रही है, इसलिए की पेट में पानी भरा था। मतलब हत्या कर लाश को पानी में फेंकने की बात सही नहीं है। इसमें मैं कहना चाहूँगा कि ये भी संभव हो सकता है कि लड़की को हत्या की नियत से गहरे पानी में ढकेल दिया गया हो ? रिपोर्ट में तेजाब या शरीर के ऊपर चोट के निशान नहीं पाए जाने की बात कही गई है।मैं कहना चाहूँगा कि जब घटना के लगभग 60 घंटे के बाद (अंत्य परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार) शव बरामद होता है तो शव की स्थिति ऐसी नहीं रहती कि तेजाब या ऐसे निशान स्पष्ट हो, ऐसा किन्हीं अन्य / सामान्य चिकित्सकों की राय है।दूसरी बात मैं कहना चाहूँगा कि चुकि शव रोहतास जिले में लावारिस लाश के रूप में बरामद हुआ तो अंत्य परीक्षण भी बिना मेडिकल बोर्ड के बहुत ही हल्के तरीके से मामले को लेते हुए अंत्य परीक्षण की खानापूर्ति हुई। चूंकि हिन्दू रीति के अनुसार दाह संस्कार के बाद दुवारा अंत्य परीक्षण का प्रश्न ही नहीं है इसलिए पुलिस को घटना की शुरूआत अथार्त लड़की के घर से निकलने के समय से लेकर शव बरामद होने के बीच के श्रोतों को बहुत ही गंभीरता से खंघालना होगा।

डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने स्वास्थ्य मंत्री से जिले के स्वास्थ्य सेवा बेहतर करने की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता सह बिहार सरकार के स्वास्थ मंत्री श्री मंगल पांडे जी से मिलकर भारतीय जनता पार्टी गया जिला मोर्चा के सह प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने श्री विष्णु चरण चिन्ह, अंग वस्त्र एवं फूलों का गुलदस्ता देकर स्वागत किया। इस अवसर पर डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा ने मंगल पांडेय से मिलकर संगठन से लेकर स्वास्थ्य संबंधी चर्चा किया गया है। गया जिला में हीट वेव पर विशेष रूप से चर्चा किया गया माननीय मंत्री जी से मांग किया कि पूरे जिला में प्राइमरी हेल्थ सेंटर मे उचित व्यवस्था रहने के बावजूद भी मरीज का इलाज नहीं हो पाता है जिसके कारण अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल अस्पताल गया,जयप्रकाश अस्पताल,प्रभावती देवी अस्पताल में इलाज के लिए रोगियों की भीड़ इकट्ठा हो जाती है । मंगल पांडे से आग्रह किया गया है, की जिला के सभी प्राइमरी हेल्थ सेंटर में समुचित स्वास्थ किट की व्यवस्था रहने के बावजूद भी रोगियों को जिला मुख्यालय भेज दिया जाता है जिससे अस्पताल अव्यवस्थित हो जाती है। हीट वेव देखते हुए जिले का सबसे बड़ा अस्पताल मगध मेडिकल अस्पताल का आपातकालीन वार्डो में बेड़ो की संख्या बढ़ाई जाए जिससे रोगियों के इलाज समुचित ढंग से हो सके सोशल मीडिया पर एक विडिओ में मरीज को स्टेचर के जगह पर लोहे का कुर्सी पर ही घसीटते हुए इमरजेंसी वार्ड में लाया जा रहा है, जो बहुत ही दुखद बात है। इस तरह की घटना से सरकार की बदनामी होती है जबकि बिहार सरकार के द्वारा अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल अस्पताल सहित सभी अस्पतालों में सारी सुविधा रोगियों के लिए है स्वास्थ्य मंत्री ने गंभीरता पूर्वक बातों को सुनकर आश्वासन दिया की इन बिन्दुओ पर जाँच कराई जाएगी।

शिक्षक तुफान सर ने जीतन राम मांझी को केंद्रीय मंत्री बनने पर दि बधाई

प्रात : किरण संवाददाता

गया। के मशहूर शिक्षक तुफान सर ने जीतन राम मांझी जी को केंद्रीय मंत्री बनने पर दिए बधाई दी है ।तूफान सर हम पार्टी के शिक्षक प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष है ।तथा जीतन राम मांझी जी ने भी अपने कार्यकताओं को उनकी मेहनत के लिए उनको धन्यवाद कहा है।

गया के सांसद जीतनराम मांझी को रविवार को कैबिनेट मंत्री में शामिल किए जाने और सोमवार दोपहर एमएसएमई मंत्रालय दिए जाने से हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा के लोगों में हर्ष है ।आजादी के बाद पहली बार मुसहर महादलित परिवार, दशरथ मांझी के वंशज को भारत सरकार में कैबिनेट मंत्री का दर्जा मिला है। यह केवल मुसहर समाज के लिए न सिर्फ गर्व की बात है बल्कि गयावासियों के लिए भी गर्व की बात है ।इससे पूर्व गया से जितने वाले एक भी सांसद इस मुकाम तक नहीं पहुंच सके थे। इसकी खास वजह यही रही कि जीतन राम मांझी ने गरीबों के लिए सड़क से लेकर सदन तक आवाज उठाया है। हर समय जीतनराम मांझी ने संविधान के तहत संघर्ष किया और गरीबों की हक की मांग की। इससे नई पीढ़ी को काफी सीखने को मिलेगा।

सांप्रदायिक सद्भावना कायम रखने के उद्देश्य से मंदिरों की निगरानी में लगे पैगाम ए इंसानियत के जिलाध्यक्ष सल्लू खान

बकरीद पर्व के दौरान पूरी रात निगरानी करते रहे सल्लू, कहा- यहां दोनों धर्म के लोग आपसी भाइचारे के साथ रहते हैं

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिले में घटित पूर्व की घटनाओं को देखकर बकरीद पर्व में शांति बनी रहे सोमवार की रात और मंगलवार की अहले सुबह तक शहर के मंदिरों की निगरानी में पैगाम ए इंसानियत के जिलाध्यक्ष शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान लगे रहे।

बकरीद पर्व पर मंदिरों में जाकर इस बात की तहकीकात करते रहे कि कही किसी के द्वारा मंदिरों में या उसके बाहर माहौल खराब करने के उद्देश्य से किसी प्रकार का अवांछित सामग्री न फेंक दिया जाए। इस कार्य को देखते हुए शहर के कुछ मुस्लिम युवा भी साथ लग गए। पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से संपादित करने में अहम भूमिका निभाई। गौरतलब है कि शहर में चार वर्ष पूर्व अंदर बाजार में असामाजिक तत्वों द्वारा घिनौनी हरकत की गई थी। जिससे माहौल बिगड़ते बचा था और हाल में ही हसपुरा में भी ऐसी ही घटनाएं घटी थी। मंदिर की निगरानी करने वाले मुस्लिम समाज के समाजसेवी सल्लू खान ने कहा कि औरंगाबाद अपनायत की नगरी रही है और वर्षो से हम सभी हिंदू और मुस्लिम एक दूसरे के साथ अमन चैन और भाईचारे के साथ रहते आए है और आगे भी यह प्रेम भाईचारा ऐसे ही बना रहेगा। सल्लू खान ने लोगो से अपील किया है कि किसी तरह का आपत्तिजनक पोस्ट या वीडियो किसी भी धर्म के के खिलाफ नहीं करना है और नहीं किसी भी धर्म को ठेस लगना चाहिए।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुई साप्ताहिक समन्वय बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। जिलाधिकारी अमन समीर की अध्यक्षता में आज समाहरणालय सभागार में साप्ताहिक समन्वय बैठक आहुत की गई।

उच्च न्यायालय से संबंधित लंबित वादों में अपेक्षित कार्रवाई सुनिश्चित करने एवं ससमय तथ्य विवरणी दाखिल करने का निदेश सभी पदाधिकारियों को दिया गया। सभी अनुमंडल पदाधिकारी को प्रखंड से संबंधित तथा भूमि सुधार उपसमाहर्त्ता को अंचल से संबंधित लंबित मामलों की प्राथमिकता से निरंतर समीक्षा कर अपेक्षित कार्रवाई सुनिश्चित कराने का निदेश दिया गया। विभिन्न तरह की आपदा से संबंधित मुआवजे के भुगतान हेतु लंबित मामलों का एक सप्ताह के अंतर्गत निष्पादन सुनिश्चित का निदेश सभी अनुमंडल पदाधिकारियों को दिया गया।अगलगी की घटना में मानव मृत्यु, पशु मृत्यु, गृह क्षति, फसल क्षति, घायल व्यक्ति एवं अन्य आपदा से संबंधित मुआवजे के भुगतान हेतु लंबित आवेदनों का एक सप्ताह के अंदर त्वरित निष्पादन सुनिश्चित करते हुये संबंधित अनुमंडल पदाधिकारी इस आशय का प्रमाणपत्र देंगे कि उनके क्षेत्राधिकार में अद्यतन कोई भी मामला लंबित नहीं है। पंचायत सरकार भवन के निर्माण हेतु जिन पंचायतों से भूमि की उपलब्धता का प्रस्ताव अप्राप्त है, उन पंचायतों के लिए शीघ्र भूमि चिन्हित कर प्रस्ताव भेजने का निदेश सभी अंचलाधिकारियों को दिया गया। सभी भूमि सुधार उपसमाहर्त्ता को आगामी दो दिनों में सभी लक्षित पंचायतों में भूमि की उपलब्धता सुनिश्चित कराने हेतु सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा गया। मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर लाइट योजना के तहत पूर्व से जारी कार्य के तहत 15 जून तक अधिष्ठापित किये गए सोलर स्ट्रीट लाइट का शत प्रतिशत भुगतान संबंधित मुखिया के माध्यम से एजेंसी को सुनिश्चित कराने का निदेश सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी को दिया गया। इसकी दैनिक मोनिटरिंग के लिये जिला स्तर पर वार रूम बनाया गया है। इस योजना के तहत सोलर स्ट्रीट लाइट लगाने हेतु आगे के लिये स्थल चयन हेतु 20 एवं 21 जून को विशेष ग्राम सभा का आयोजन किया जाना है। ग्राम सभा द्वारा पारित किये जाने के बाद समेकित सूची को प्रशासनिक स्वीकृति के साथ जिला में अविलंब उपलब्ध कराने का निदेश दिया गया। ताकि आगे का कार्य हेतु कायादेंश निर्गत कर तेजी से कार्य कराया जा सके। जिला स्थापना शाखा को सेवा से संबंधित सभी लंबित मामलों का त्वरित निष्पादन सुनिश्चित कराने को कहा गया। अनुकंपा नियुक्ति,एमएसीपी सहित सेवा से संबंधित अन्य मामलों में अपेक्षित कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा गया।

विधि व्यवस्था से संबंधित सभी मामलों में प्रखंड एवं अनुमंडल स्तर पर पदाधिकारियों के बीच आपसी समन्वय सुनिश्चित रखने को कहा गया। किसी भी घटना की जानकारी थाना प्रभारी एवं संबंधित प्रखंड विकास पदाधिकारी/अंचलाधिकारी आपस में तुरंत साझा करें तथा अविलंब इसकी सूचना अनुमंडल एवं जिला स्तर पर संबंधित पदाधिकारियों को दें।

बैठक में नगर आयुक्त, उप विकास आयुक्त, जिला लोकशिकायत निवारण पदाधिकारी सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय पदाधिकारी एवं वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी अनुमंडल पदाधिकारी, भूमि सुधार उपसमाहर्त्ता, प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी आदि जुड़े थे।

बाइक सवार ने ठेला में मारा जोरदार टक्कर

प्रात : किरण संवाददाता

लहलादपुरः जनता बाजार थाना क्षेत्र के नाजीरगंज बाजार के नजदीक तीव्र गति से आ रहा एक बाइक सवार ने सब्जी बेंचने वाले एक ठेला में जोरदार टक्कर मारा, जिससे बाइक सवार स्वयं बाइक से गिर कर जख़्मी हो गया तथा ठेला वाले के पेट में गंभीर चोट लग गयी. स्थानीय लोगों ने दोनों जख्मियों को पीएचसी, लहलादपुर पहुंचाया. जहां प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर रूप से जख्मी बाइक सवार को बेहतर इलाज के लिये चिकित्सक डॉङ्क बी एन सिन्हा ने सदर अस्पताल, छपरा भेज दिया. जबकि चोट से पीड़ित इलाज के बाद अपने घर चला गया. घटना सोमवार की देर संध्या आठ बजे की बतायी जाती है. घटना तब हुई जब धमसर गांव निवासी सुनिल साह अपने ठेला पर सब्जी बेंचकर घर वापस लौट रहा था कि सोनिया गांव निवासी रौशन कुमार ने तीव्र गति से बाइक चलाता हुआ आया और उसके ठेला में जोरदार टककर मार दिया. समाचार प्रेषण तक प्राथिमिकी दर्ज होने की सूचना नहीं थी।

चलती कार में आग लगने से पत्नी की जलकर हुई मौत मामले में प्राथमिकी दर्ज

तरैया। थाना क्षेत्र के पोखडेरा पंचायत के बगही गांव में अयोध्या से लौटने के दौरान मेरे निजी वाहन बीआर 01एच के 3447 कार के इंजन में सॉर्ट सर्किट से आग लग गई। कार के पिछले सीट पर मेरी पत्नी सोई हुई थी।मैं उसे बाहर निकालने के लिए बाहर से खोलने लगा लेकिन दरवाजा लॉक हो गया।बाहर से दरवाजा खोलने का बहुत प्रयास किया लेकिन दरवाजा नही खुल पाया जिसके कारण मेरी पत्नी सोनी कुमारी कार में जिंदा जल गई।आसपास के लोग पुलिस को बुलाते तब तक मेरी पत्नी गाड़ी में जलकर खाक हो गई थी।पत्नी को बचाने के क्रम में मेरा भी पैर जल गया।मुझे पुलिस एवं ग्रामीणों के सहयोग से तरैया रेफरल अस्पताल में इलाज कराया गया।तथा मेरी पत्नी का पोस्टमार्टम सदर अस्पताल छपरा में कराया गया। इस संबंध में अवतार नगर थाना क्षेत्र के पकवालिया गोराईपुर के दीपक कुमार ने तरैया थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है।पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले कि जांच कर रही है।

सांसद देवेश चंद्र का बयान गैर जिम्मेदाराना और सामंती सोच को दर्शाता है

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा । राष्ट्रीय जनता दल ने सीतामढ़ी से जदयू सांसद देवेश चंद्र ठाकुर द्वारा यादव, मुस्लिम, और कुशवाहा समाज के लोगों का कोई काम नहीं करूंगा ' इस समाज के लोग आए, चाय, नाश्ता और मिठाई खा कर चले जाएं पर कड़ी आपत्ति जताते हुए इसे गैर जिम्मेदाराना और संविधान विरोधी बताया है। सारण जिला राजद के प्रवक्ता हरेलाल यादव ने जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से जानना चाहता है कि पूर्व उपमुख्यमंत्री सह नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने अपने अथक प्रयासों से मात्र सत्रह महीनों के कार्यकाल में जो पांच लाख युवक -युवतियों को सरकारी नौकरियां दिलवाने का काम किए, क्या उसमे सिर्फ. यादव, मुस्लिम और कुशवाहा वर्ग के ही लोग हैं ' राजद प्रवक्ता ने कहा कि श्री ठाकुर पूर्व में विधानपरिषद के कार्यकारी सभापति जैसे संवैधानिक पद पर भी रह चूके हैं, उन्हें पता होना चाहिए की,लोकतन्त्र में सभी वर्ग और धर्म के लोगों को अपने स्वेक्षा से किसी भी पार्टी व प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने की आजादी है, ऐसे में श्री ठाकुर का बयान असंवैधानिक,गैरजिम्मेदाराना और सामंती सोच को दर्शाता है,जो पूर्णतः अलोकतांत्रिक है ।उन्होंने कहा कि ऐसे में जदयू के शीर्ष नेतृत्व को समाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता की हिफाजत के लिए सांसद देवेश चंद्र ठाकुर को अविलंब पार्टी से बर्खास्त कर बाहर का रास्ता दिखा देना चाहिए।

ट्रक के धक्के से हुई मौत मामले में मृतक के पुत्र ने ट्रक चालक पर दर्ज कराई प्राथमिकी

प्रात : किरण संवाददाता

तरैया। उझाना क्षेत्र के डुमरी छपिया गांव निवासी हीरालाल राम को 06 जून 2024 को ब्रह्म पिचास बाबा के पास एसएच 73 मुख्य सड़क पर ट्रक संख्या बीआर 01जी एल 0386 के चालक के द्वारा तेजी एवं लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए मोटरसाइकिल में धक्का मार दिया था जिससे मौके पर मेरे पिता जी की मृत्यु हो गई थी।इस संबंध में मृतक के पुत्र राजेश कुमार राम ने तरैया थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है।दर्ज प्राथमिकी में कहा गया है कि मेरे पिता जी एवं विनोद सिंह मोटरसाइकिल से कही जा रहे थे की ब्रह्म पिचास बाबा के पास ट्रक चालक के लापरवाही के चलते मेरे पिता जी की मृत्यु हो गई थी।पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले कि जांच कर रही है।

आपसी विवाद को लेकर भाई ने भाई का पैर तोड़ा, प्राथमिकी दर्ज

तरैयाथाना। क्षेत्र के पचभिंडा गांव में आपसी विवाद को लेकर हुई मारपीट में पीड़ित एकलाख खान ने अपने भाई व भाई की पत्नी पर प्राथमिकी दर्ज कराई है।इस संबंध में पीड़ित का कहना है कि मैं बाहर रहकर कमाता हूं।मैं अपने भाई नन्हे खान को एक गाड़ी भाड़े पर कमाने के लिए दिया था।

बॉलीवुड गाने नहीं गाना चाहते थे दिलजीत दोसांझ

पंजाबी गायक और अभिनेता दिलजीत दोसांझ इस समय अपने करियर की बुलंदियों पर चल रहे हैं। उनका नाम देश के बड़े सितारों में गिना जाने लगा है। पंजाबी गायक ना सिर्फ भारत में बल्कि विश्व स्तर पर लोगों का दिल जीत रहे हैं। हाल ही में दिलजीत ने घोषणा की कि वे जिमी फॉलन अभिनीत 'द टुनाइट शो' में दिखाई देंगे। इसकी घोषणा करते हुए दिलजीत ने लिखा, 'पंजाबी आ गए ओये।' ऐसा पहली बार नहीं है जब दिलजीत ने यह लाइन कही या लिखी हो। उन्होने कोचला और मुंबई कॉन्सर्ट में भी बड़े गर्व के साथ यह लाइन लिखी थी। उनके कई प्रशंसकों के मन में ये सवाल उठा कि वह पंजाब क्यों कहते हैं? भारत क्यों नहीं कहते? अब अभिनेता ने इस सवाल का जवाब दे दिया है। आइए जानते हैं उन्होंने क्या कहा?

इस वजह से लेते हैं पंजाब का नाम

एक पॉडकास्ट के दौरान दिलजीत दोसांझ से पूछा गया कि वह मंचों पर भारत के बजाय पंजाब का नाम इतने गर्व से क्यों लेते हैं? इस पर अभिनेता ने कहा, 'पंजाब भारत का एक छोटा सा भाग है और मैं बहुत छोटे राज्य से आता हूं, जहां क्षेत्रीय संगीत बनते हैं। पहले क्षेत्रीय संगीत इतने बड़े स्तर पर नहीं था, लेकिन अब यह वैश्विक स्तर पर पहुंच चुका है। इसलिए जब आप छोटे शहर से आते हैं इसका एहसास एकदम अलग होती है।' अभिनेता ने आगे कहा, 'भारत के स्तर पर, बहुत बड़े कलाकार हैं। मैं सोनू निगम जितना अच्छा नहीं गा सकता। क्षेत्रीय संगीत भारत से कोचेला पहुंचा। यही वजह है कि मेरे पास आज वह अनुभूति है कि मैं छोटे शहर से बड़े शहर आया हूं।'

अभिनेता अपने कोचेला दौरे के बारे में बात करते हुए कहते हैं, जब मैं कोचेला गया था, तो मेरे एक दोस्त ने मुझसे कहा था कि तुम्हें एहसास नहीं हो रहा है कि यह पहली बार है जब पंजाबी दुनिया के मंच पर बोली जा रही है। यह मेरे दिमाग में बैठ गया और अपने आप ही मंच पर आ गया, मैंने इसे जानबूझकर नहीं कहा था।'

बॉलीवुड गाना गाने से कर दिया था मना

साक्षात्कार के दौरान दिलजीत दोसांझ ने यह भी बताया कि हिंदी गाना बनाने में उन्हें कितना संघर्ष करना पड़ता है। 'वरू' फिल्म में उनका गाना 'नैना' निर्माता रिया कपूर के फॉलो-अप के बाद आया था। अभिनेता ने बताया कि उन्होंने रिया कपूर को हिंदी गाना बनाने के लिए मना कर दिया था। उन्होंने कहा, वरू में 'नैना' भी रिया कपूर की वजह से ही संभव हुआ, वरना मैं हिंदी गाने नहीं बना सकता। मैंने उनसे कहा कि मैं बॉलीवुड के लिए गाने नहीं बना सकता, मुझे नहीं पता कि यह कैसे करना है, लेकिन उन्होंने एक साल तक मेरा पीछा किया। उस समय मैं एक एल्बम बना रहा था और वह मुझसे हर दस दिन पर पूछती थीं कि गाना कहां है।'

प्रीति जिंटा से शक्ल मिलने के चलते मुझे बॉलीवुड में लाया गया

एक्ट्रेस तापसी पन्नू ने खुलासा करते हुए कहा कि उन्हें बॉलीवुड में प्रीति जिंटा से मिलती जुलती शक्ल के कारण लाया गया था। क्रिकेटर शिखर धवन के टॉक शो धवन करेंगे में शामिल हुईं तापसी ने बातचीत के दौरान कहा कि वह एक्ट्रेस प्रीति जिंटा को अपना आदर्श मानती हैं। मुल्क फेम एक्ट्रेस ने बताया कि मुझे सबसे पहले बॉलीवुड में इसलिए लाया गया क्योंकि मेरी शक्ल प्रीति जिंटा से मिलती-जुलती है। उनमें बहुत अच्छी ऊर्जा है और आप यह अच्छी तरह जानते हैं। तापसी ने आगे कहा कि प्रीति मैम का व्यक्तित्व बहुत जीवंत है और वह बहुत बुद्धिमान हैं। मुझे लगा कि मुझे उनकी प्रतिष्ठा के अनुरूप काम करना चाहिए। मैं उनके नाम के कारण ही इंडस्ट्री में आई हूं। इसलिए मैं हमेशा उनके जैसा बनने की कोशिश करती हूं।

बता दें कि शिखर आईपीएल टीम पंजाब किंग्स के कप्तान हैं, जिसकी मालकिन प्रीति जिंटा हैं। वन डिजिटल एंटरटेनमेंट द्वारा क्यूरेटेड और निर्मित शो धवन करेंगे जिओसिनेमा प्रीमियम पर स्ट्रीम हो रहा है। इसका प्रीमियर 20 मई को हुआ था। एक्ट्रेस ने बैडमिंटन खिलाड़ी मेथियास बो के साथ बेहद ही गुपचुप तरीके से शादी रचाई थी। कपल 11 साल से एक दूसरे को डेट कर रहे थे। साक्षात्कार में तापसी ने कहा कि शादी सीक्रेट नहीं थी, बल्कि यह उनका निजी मामला था। दोनों उदयपुर में शादी के बंधन में बंधे थे। इस बीच, तापसी को शाहरुख खान के साथ कॉमेडी-ड्रामा डंकी में आखिरी बार देखा गया था। वह अगली बार वो लड़की है कहां? फिर आई हसीन दिलरुबा और खेल खेल में नजर आएंगी।

शाहरुख, आमिर और सलमान नहीं करते हैं फिल्मों के लिए कोई फीस चार्ज

बॉलीवुड के मशहूर निर्देशक इन दिनों अपनी आगामी फिल्म बैड कॉप को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। हाल ही में इस फिल्म के प्रमोशन के दौरान वे फिल्मों की लागत के बारे में भी बातें करते नजर आए। साथ ही साथ उन्होंने शाहरुख खान, सलमान खान और आमिर खान के बारे में भी कई खुलासे किए।

सलमान, आमिर और शाहरुख नहीं लेते हैं फीस अनुराग कश्यप बॉलीवुड में अलग किस्म की फिल्में बनाने के लिए मशहूर हैं। उनकी फिल्मों की कहानी जबरदस्त होती है, लेकिन फिल्म के लिए बजट अन्य निर्देशकों की तुलना में काफी कम होती है। हाल ही में निर्देशक ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि, शाहरुख खान, सलमान खान और आमिर खान अपनी फिल्मों के लिए फीस नहीं लेते हैं और सबसे खास बात यह है कि उनकी ही फिल्में बॉक्स ऑफिस पर सबसे ज्यादा कमाई करती है।

तीनों खान की फिल्में महंगी नहीं होती हैं

अनुराग कश्यप अपनी बात जारी रखते हुए कहते हैं, शाहरुख खान, सलमान खान और आमिर खान बॉलीवुड के सबसे ज्यादा कॉस्ट कॉन्शियस स्टार्स हैं। वे अपनी हर फिल्म का बैकएंड लेते हैं। वे प्रॉफिट शेयरिंग मॉडल पर काम करते हैं। उनकी कोई फिल्म महंगी नहीं होती। वे जानते हैं कि फीस की वजह से फिल्म निर्माण में कितनी मुश्किलें आती हैं। मैं खुद कम बजट की फिल्में बनाता हूं।

दायरा में आयुष्मान और करीना मुख्य भूमिका में आएंगे नजर !

आयुष्मान खुराना और करीना कपूर मेघना गुलजार की आगामी फिल्म में पहली बार एक साथ काम करने जा रहे हैं। फिल्म इंडस्ट्री के सूत्रों ने खुलासा किया है कि मेघना गुलजार की अगली निर्देशित फिल्म दायरा जिसका निर्माण जंगली पिक्चर्स द्वारा किया जा रहा है, इस फिल्म में आयुष्मान खुराना और करीना कपूर खान मुख्य भूमिका में होंगे। एक ट्रेड सूत्र ने कहा, मेघना गुलजार इस फिल्म के लिए आयुष्मान खुराना और करीना कपूर खान के साथ बातचीत कर रही हैं। यह एक दमदार फिल्म है, जिसमें उनके द्वारा चुने गए कलाकारों की क्षमता वाले कलाकारों की मौजूदगी की गारंटी है। मेघना ने राजी के लिए आलिया भट्ट और विक्की कौशल को साथ लिया है और फिर सैम बहादुर के लिए विक्की और सान्या मल्होत्रा को साथ लिया है। अब सभी की निगाहें दायरा पर होंगी कि मेघना आयुष्मान और करीना की अपनी शानदार कास्ट के साथ क्या जादू बिखेरती हैं।

अल्लू अर्जुन ने ठुकराई एटली की फिल्म!

अल्लू अर्जुन के फैंस के लिए एक बुरी खबर है! जी हां, पहले ही जहां पुष्पा 2 की रिलीज एक बार फिर से पोस्टपोन होने की चर्चा है, वहीं अब खबर है कि एक्टर ने जवान फेम डायरेक्टर एटली की फिल्म ठुकरा दी है। यह खबर ऐसे समय में आई है, जब पिछले दिनों ऐसी चर्चा थी कि शाहरुख खान के साथ ब्लॉकबस्टर देने वाले एटली अब सलमान खान संग फिल्म करेंगे। हालांकि, अरबाज खान ने इन कयासों पर विराम लगा दिया था। लेकिन अब अल्लू अर्जुन के फिल्म को ठुकराने के बाद फिर से चर्चा चल पड़ी है कि बहुत संभव है कि यह फिल्म अब सलमान खान करेंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, अल्लू अर्जुन और एटली कुमार की बातचीत किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाई है। तेलुगू सुपरस्टार अल्लू अर्जुन और तमिल फिल्मेकर एटली की जोड़ी फिलहाल नहीं बन रही है। यह खबर ऐसे समय में आई है जब पुष्पा- द रूल का पोस्टपोन होना लगभग तय हो चुका है। पुष्पा 2 पहले 15 अगस्त 2024 को रिलीज होने वाली थी। लेकिन बताया जाता है कि यह फिल्म अभी तक बनकर तैयार नहीं हुई है। लिहाजा, इसे पोस्टपोन किया जा रहा है और अब यह दिवाली के मौके पर आएगी।

जवान के बाद एक और एक्शन फिल्म बना रहे हैं एटली

जवान की तरह ही एटली की यह अपकमिंग फिल्म भी एक्शन एंटरटेनर है। रिपोर्ट में कहा गया है कि दोनों के बीच निश्चित रूप से बातचीत चल रही थी। लेकिन यह बात किसी नतीजे तक नहीं पहुंच पाई। बताया जाता है कि एटली अभी भी स्क्रिप्ट पर काम कर रहे हैं। वह इस स्क्रियप्ट को लेकर पहले सलमान खान के पास पहुंचे थे। लेकिन वहां से कोई खास रेस्पॉन्स नहीं मिलने के बाद यह अल्लू अर्जुन की झोली में पहुंची थी। फैंस भी खासे खुश थे कि अल्लू अर्जुन और एटली एकसाथ आते हैं तो सिनेमाघरों में एक और ब्लॉकबस्टर तय है।

डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीमिंग होगी अरनमनई 4

तमन्ना भाटिया और राशि खन्ना की फिल्म अरनमनई 4 ने सिनेमाघरों में जमकर धमाल मचाया है। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर खूब कमाई की है। फिल्म का पहली तीनों किश्तें सुपरहिट रही थीं, जिसके बाद मेकर्स चौथी किश्त लेकर आए थे। इस फिल्म को आप तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम में देख सकते हैं। सिनेमाघरों के बाद अब यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आने के लिए पूरी तरह से तैयार है। तमन्ना भाटिया और राशि खन्ना की तमिल हॉरर-कॉमेडी हिट कॉमेडी फिल्म अरनमनई 4 की ओटीटी रिलीज डेट की घोषणा कर दी गई है। पॉपुलर फ्रेंचाइजी की यह चौथी किश्त 21 जून को डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगी।

ऐसे शो का हिस्सा नहीं बन सकती जो तीन महीने में बंद हो जाए

एक हजारों में मेरी बहना है और जमाई राजा जैसे टीवी शो से घर-घर मशहूर हुईं निया शर्मा इन दिनों सुर्खियों में बनी हुई हैं। उनके शो सुहागन चुड़ैल को दर्शक काफी पसंद कर रहे हैं। निया ने लंबे समय के बाद टीवी सीरियल की दुनिया में वापसी की है। हाल ही में निया ने एक इंटरव्यू के दौरान इस लंबे ब्रेक के पीछे की कहानी को अपने फैंस के संग साझा किया है। निया शर्मा अपने इस ब्रेक के बारे में बातें करते हुए कहती हैं, सबसे पहली बात तो ये है कि मैं किसी भी ऐसे शो का हिस्सा नहीं बनना चाहती थी जो शुरू होने के तीन महीने बाद बंद हो जाए। मैं लंबे और अच्छे शो के साथ जुड़ना चाहती थी इसलिए मैंने सोच-समझ कर यह ब्रेक लिया था। निया शर्मा अपनी बात जारी रखते हुए कहती हैं, पिछले कुछ वर्षों में कितने ही शो शुरू हुए और बंद हुए किसी को पता भी नहीं चला। मुझे खुद इनमें से कई शो ऑफर हुए थे जो तीन-चार महीने में बंद हो गए। एक और अहम बात मुझे जो भी रोल ऑफर हो रहे थे मैं उनसे कनेक्ट नहीं फील कर रही थी इसलिए मैंने उन शो में काम नहीं किया। निया शर्मा अपने शो सुहागन चुड़ैल को लेकर काफी उत्साहित हैं। वे कहती हैं, जैसे ही मैंने इस शो के बारे में सुना मैंने तय कर लिया था कि मुझे यह करना है। इस शो में मेरा किरदार काफी अलग और चैलेंजिंग है। मुझे यह शो करके काफी मजा आ रहा है।

सूबेदार बन एक्शन अवतार दिखाएंगे अनिल कपूर

बॉलीवुड अभिनेता अनिल कपूर ने घोषणा की है कि उन्होंने अपनी अगली फिल्म पर काम शुरू कर दिया है। अभिनेता सुबेदार पर काम कर रहे हैं। उन्होंने इस फिल्म पर काम रियलिटी शो बिग बॉस ओटीटी सीजन 3 के प्रीमियर से कुछ दिन पहले शुरू किया है। बिग बॉस ओटीटी 3 से अनिल बतौर होस्ट डेब्यू कर रहे हैं। अब अगले कुछ महीनों तक अनिल अपने दोनों परियोजनाओं पर काम करते रहेंगे। अनिल कपूर ने सुबेदार की तैयारी करते हुए इंस्टाग्राम पर अपनी एक तस्वीर साझा की और इसकी इसकी घोषणा की। अभिनेता आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लेते हुए नजर आ रहे हैं। तस्वीर में वे अपने ट्रेनर की गर्दन पकड़े हुए इंटेंस लुक में नजर आ रहे हैं। तस्वीर के साथ अभिनेता ने लिखा, अभी तो हाथ उठा ही कहां है, यह तो बस तैयारी है। उन्होंने यह भी बताया कि यह उनकी आगामी फिल्म सूबेदार की तैयारी के लिए है।

बिग बॉस ओटीटी 3 के लिए उत्साहित अनिल

वहीं बात करें बिग बॉस ओटीटी 3 के तो अनिल इसके जरिए होस्ट के तौर पर काम करने के लिए उत्साहित हैं। बिग बॉस ओटीटी 3 शो 21 जून से जियो सिनेमा पर स्ट्रीम होगा। यह शो हर रोज रात 9 बजे सिर्फ प्रीमियम यूजर्स के लिए उपलब्ध होगा। हालांकि प्रतियोगियों की पूरी सूची अभी तक पुष्टि नहीं की गई है, लेकिन ऐसा लग रहा है कि अंजलि अरोड़ा, शहजादा धामी, शोएब इब्राहिम, अंजुम फकीह, जेसन शाह, साई केतन राव, सना मकबूल, यूट्यूबर अरमान मलिक और सोनम खान इस सीजन में शो में भाग लेंगे। निर्माताओं ने अभी तक प्रतिभागियों की पुष्टि करने वाली आधिकारिक सूची जारी नहीं की है।

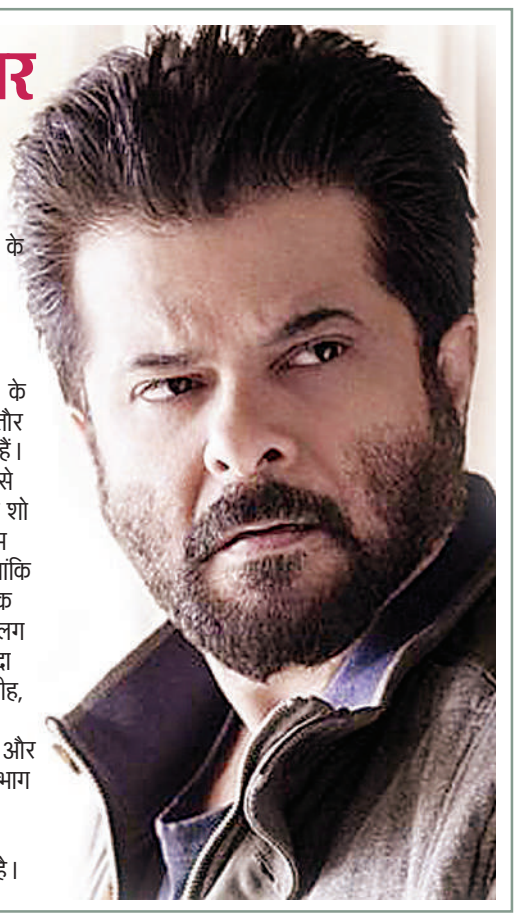

संक्षिप्त समाचार

इक्सिगो की स्टॉक मार्केट में धांसू एंट्री, 48 फीसदी प्रीमियम के साथ हुई लिस्ट

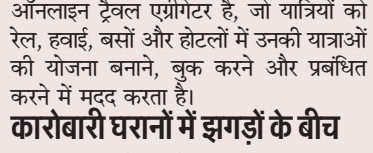

नई दिल्ली, एजेंसी। शेयर बजार में लिस्टिंग जारी है। आज स्टॉक मार्केट में ट्रैवल बुकिंग प्लेटफॉर्म इक्सिगो का संचालन करने वाली ले ट्रैवेन्यूज़ टेक्नोलॉजी लिमिटेड के शेयर लिस्ट हुए हैं। कंपनी के शेयर ने शानदार एंट्री ली है। कंपनी के शेयर 93 रुपये के निर्गम मूल्य के मुकाबले 48 प्रतिशत से अधिक प्रीमियम के साथ सूचीबद्ध हुए। बीएसई पर स्टॉक ने निर्गम मूल्य से 45.16 प्रतिशत की बढ़त के साथ 135 रुपये पर कारोबार शुरू किया। बाद में यह 58.88 प्रतिशत बढ़कर 147.76 रुपये पर पहुंच गया। वहीं, एनएसई पर यह 48.49 प्रतिशत की बढ़त के साथ 138.10 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। शेयर में आई तेजी के बाद कंपनी का बाजार मूल्यांकन 5,581.22 करोड़ रुपये रहा। पिछले सप्ताह बुधवार को कंपनी के आईपीओ को सब्सक्राइब करने का आखिरी दिन था। ले ट्रैवेन्यूज़ टेक्नोलॉजी के आईपीओ को आखिरी दिन 98.10 गुना अभिदान मिला। कंपनी का आईपीओ 740 करोड़ रुपये की शुरुआती शेयर बिक्री में 120 करोड़ रुपये तक का ताजा इश्यू और 6,66,77,674 इक्विटी शेयरों की बिक्री का प्रस्ताव (ओएफएस) था। इस आईपीओ का प्राइस बैंड 88-93 रुपये प्रति शेयर थी। आलोक बाजपेयी और रजनीश कुमार द्वारा इक्सिगो ने 2007 में लॉन्च किया गया। ले ट्रैवेन्यूज़ टेक्नोलॉजी देश का अग्रणी ऑनलाइन ट्रैवल एग्रीगेटर है, जो यात्रियों को रेल, हवाई, बसों और होटलों में उनकी यात्राओं की योजना बनाने, बुक करने और प्रबंधित करने में मदद करता है।

कारोबारी घरानों में झगड़ों के बीच एकजुटता से आगे बढ़ रहा एस्सार समूह, दिवालिया कार्रवाई से उबरा

नई दिल्ली, एजेंसी। कारोबारी घरानों में मालिकाना हक को लेकर संस्थापकों में सार्वजनिक झगड़ों के बीच रुइया परिवार के नियंत्रण वाला एस्सार समूह एकजुटता से आगे बढ़ रहा है। रुइया परिवार की तीन पीढ़ियां संस्थापक भाई शशि व रवि रुइया, उनके बच्चे और पोते-पोतियां एक ही छत के नीचे रहकर संयुक्त रूप से कारोबारी साम्राज्य चलाते हैं। पहली पीढ़ी के उद्यमी शशि व रवि रुइया ने 1969 में ऊर्जा, धातु, बुनियादी ढांचे से लेकर प्रौद्योगिकी और खुदरा क्षेत्र में कारोबार करने वाले समूह की स्थापना की थी। समूह के निवेश पोर्टफोलियो का प्रबंधन करने वाली एस्सार कैपिटल के निदेशक प्रशांत रुइया ने कहा, मजबूत पारिवारिक संबंध बनाए रखने के लिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि परिवार के हर सदस्य को अपनी बात कहने और आगे बढ़ने का अवसर मिले। उन्होंने कहा, पारिवारिक परंपरा तेजी से खत्म हो रही है, लेकिन हमने इसे अब तक बनाए रखा है।

हरी सब्जी में लगा 'हीट स्ट्रोक' तो सरपट चढ़े दाम, आलू-प्याज भी चल पड़े इसी राह

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र यानी एनसीआर समेत सहित उत्तर भारत में इस समय भीषण गर्मी पड़ रही है। भीषण गर्मी की मार अब फल-सब्जियों की कीमतों पर भी दिख रही है। इस कारण पिछले एक हफ्ते में कई सब्जियों के दाम डबल हो गए हैं। आजादपुर मंडी में व्यापारियों का कहना है कि गर्मी के कारण सब्जियों का उत्पादन कम हो गया है। जो उपज रहा है, वह खेतों से मंडियों में नहीं पहुंच रही हैं। बढ़ते तापमान के कारण अधिकांश खेतों में सब्जियों की फसल बर्बाद हो रही है, जिससे आवक प्रभावित हुई है।

हरी सब्जियों के पौधे तक जल गए

भीषण तपिश और हीट वेव में आप ही नहीं, खेतों में हरी सब्जियों के पौधे भी जल रहे हैं। दादरी के पास किराये पर जमीन लेकर हरी सब्जी उगाने वाले किसान रामकिशन मौर्या बताते हैं कि हैं कि इस मौसम में चाहे कितना भी पानी दें, लौकी-घीया के बेल जल रहे हैं। भिंडी-टमाटर का पौधा भी झुलस सा गया है। वह सवाल पूछते हैं कि ऐसे पौधों से आप कितना उत्पादन ले सकते हैं? वह बताते हैं कि सुबह-शाम बोरिंग से पानी देते हैं, तब भी पौधे नहीं बच पा रहे हैं। आखिर खुली धूप में इतनी गर्मी सहना नरम-नाजुक पौधों के बस में नहीं है।

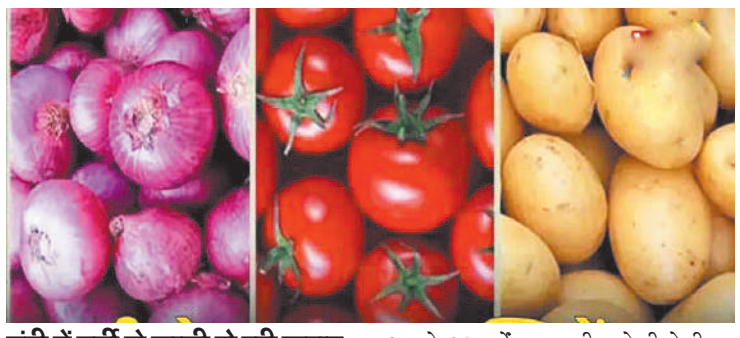

मंडी में गर्मी से सब्जी हो रही खराब

एक तरफ तापमान और तेज धूप की वजह से खेतों में ही हरी सब्जियां के पौधे सूख रहे हैं। जो कुछ सब्जी मंडी तक पहुंच जाती है, वे भीषण गर्मी की वजह से खराब हो रही हैं। टमाटर, घीया, तोरई की फसल नष्ट हो गई है, जिसका असर अब बाजारों पर 50 प्रतिशत तक दामों में उछाल देखने को मिल रहा है। पिछले हफ्ते टमाटर के दाम 25 से 30 रुपये किलो था, वह 40 से 45 रुपये किलो पहुंच गए हैं। शिमला मिर्च 100 रुपये किलो, नींबू पहले जो 80 से 100 रुपये किलो का बिक रहा था वह अब 160 रुपये किलो तक पहुंच गया है। ऐसा ही हाल फलों का भी है। सेब, आम, अनार, पपीता, तरबूज, खरबूजा, मौसमी, नारियल पानी जैसे फलों के रेट में 25 से 30 पर्सेंट तक की बढ़ोतरी देखी जा रही है।

लोकल सब्जियों की आवक घटी

दिल्ली के आजादपुर सब्जी मंडी में थोक विक्रेता तथा वेजिटेबल ट्रेडर्स असोसिएशन से अनिल मल्होत्रा ने बताया कि बारिश न होने की वजह से आजादपुर मंडी में पहुंची शिमला मिर्च 100 रुपये किलो (थोक भाव) बिकी है, 10-15 रुपये किलो के हिसाब से बिकने वाली तोरई 25 से 30 रुपये किलो, घीया जो 20 से 25 रुपये किलो था वह 50 रुपये किलो है अब। अदरक 150 से 160 रुपये, एक अन्य व्यापारी घनश्याम ने बताया कि इन दोनों लोकल सब्जियां नहीं आ रही हैं। इसकी वजह से भी सब्जियां में तेजी देखी जा रही है।

टमाटर भी हो गया महंगा

इस समय आजादपुर मंडी में हिमाचल प्रदेश से आने वाले टमाटर का 25 किलो का क्रेट 800 से 1000 रुपये में बिक रहा है। यहां कर्नाटक से भी टमाटर आता है, लेकिन वहीं इस समय टमाटर महंगा है। व्यापारी बताते हैं कि अभी कर्नाटक का हाल यह है कि वहां खेत से ही 40 रुपये के भाव पर टमाटर उठ रहा है। शिमला मिर्च का होलसेल प्राइस हफ्ताभर पहले 50-60 रुपये किलो था, अब 100-110 रुपये किलो है। अदरक 150-170 रुपये किलो चल रहा है। जब हरी सब्जी महंगी हो तो लोग आलू पर शिफ्ट कर जाते हैं। लेकिन इस समय आलू भी महंगा हो गया है। एक पखवाड़ पहले जो आलू 15 से 20 रुपये किलो मिल जा रहा था, वह 25 से 30 रुपये किलो हो गया है। नैनीताल या पहाड़ी आलू का भाव तो 40 रुपये किलो या इससे ऊपर है। दरअसल, दिल्ली एनसीआर में आलू मुख्य रूप से यूपी और बंगाल से आता है। जाड़ों में मौसम खराब होने से उपज कम रह गई थी। जो आलू कोल्ड स्टोर से बाहर आ गया है, वह खराब भी हो रहा है। प्याज का भाव भी इस दिनों चढ़ा हुआ है। बताया जाता है कि नासिक की थोक मंडी में ही प्याज 30 रुपये किलो हो गया है। दिल्ली आते-आते यही प्याज 40 रुपये किलो का हो जाता है।

हुडको ने विदेशी ऋणदाताओं से 20 करोड़ अमेरिकी डॉलर जुटाए

मुंबई। आवास एवं शहरी विकास निगम (हुडको) ने ऋण बाजार में कदम रखते हुए 20 करोड़ अमेरिकी डॉलर (30 अरब जापानी येन) जुटाए हैं। इसकी व्यवस्था करने वाली जापान की सुमितोमो मित्सुई बैंकिंग कॉरपोरेशन (एसएमबीसी) ने कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र की संस्था ने अपने पहले ''सामाजिक ऋण के हिस्से के रूप में पांच साल के लिए यह धनराशि जुटाई है। आधिकारिक बयान के अनुसार, एसएमबीसी की सिंगापुर शाखा के नेतृत्व में हुए इस सौदे को कुल नौ ऋणदाताओं से अधिक अभिदान मिला तथा ग्रीनशू विकल्प का इस्तेमाल करने के बाद इसकी मूल आरंभिक राशि 15 अरब येन से बढ़ाकर 30 अरब येन कर दी गई। एसएमबीसी इंडिया के 'कंट्री हेड हिरोयुकी मेसाकी ने कहा, ''हम वंचित समुदायों तक अपनी पहुंच बढ़ाने तथा स्थानीय समुदाय की संसाधनों तक पहुंच को मजबूत बनाने के लिए तत्पर हैं। हुडको के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक संजय कुलश्रेष्ठ ने कहा कि सरकार द्वारा बुनियादी ढांचे पर आधारित वृद्धि पर ध्यान दिए जाने से संस्था को अपनी सेवाओं की मांग में वृद्धि की उम्मीद है।

फाल्कन टेक्नोप्रोजेक्ट्स इंडिया लिमिटेड की पब्लिक इश्यू से रु. 13.69 करोड़ जुटाने की योजना

मुंबई । पेट्रोलियम रिफाइनरियों, हाउसिंग एस्टेट, परमाणु ऊर्जा, कंस्ट्रक्शन आदि क्षेत्रों में ग्राहकों को मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और प्लंबिंग सेवाएं प्रदान करने में विशेषज्ञता वाली मुंबई स्थित फाल्कन टेक्नोप्रोजेक्ट्स इंडिया लिमिटेड अपने एसएमई पब्लिक इश्यू से रु. 13.69 करोड़ तक जुटाने की योजना बना रही है। कंपनी को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एनएसई इमर्ज प्लेटफॉर्म पर अपना पब्लिक इश्यू लॉन्च करने की मंजूरी मिल गई है। पब्लिक इश्यू 19 जून को सब्स्क्रीप्शन के लिए खुला है और 21 जून को बंद होगा। पब्लिक इश्यू की आय का उपयोग कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों को पूरा करने सहित कंपनी की विस्तार योजनाओं को

निधि देने के लिए किया जाएगा। केफिन टेक्नोलोजीस लिमिटेड इस इश्यू की लीड मैनेजर है।

रु. 13.59 करोड के आइपीओ में प्रति शेयर रु. 92 की कीमत पर प्रति रु. 10 की फेस वेल्यु के 14.88 लाख इक्विटी शेयर का फ्रेश इश्यू शामिल है। रु. 13.69 करोड़ के नए इश्यू में से, कंपनी रु. 10.27 करोड़ कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं के लिए और रु. 2.81 करोड़ सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्य के लिए उपयोग करने की योजना बना रही है। एप्लिकेशन के लिए न्यूनतम लॉट साइज 1200 शेयर है जो प्रति एप्लिकेशन रु. 1,10,400 के निवेश के बराबर है। आईपीओ के लिए रिटेल निवेशक कोटा शुद्ध ऑफर का 50 प्रतिशत रखा गया है। प्रमोटर होल्डिंग प्री इश्यू 84.20 प्रतिशत है। 2014 में स्थापित फाल्कन टेक्नोप्रोजेक्ट्स इंडिया लिमिटेड भारत भर में अपने ग्राहकों को मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और प्लंबिंग सेवाएं प्रदान करती है और पेट्रोलियम रिफाइनरियों, हाउसिंग एस्टेट, परमाणु ऊर्जा, कंस्ट्रक्शन आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में काम करती है।

श्रीराम फार्म सोल्यूशन्स ने लॉन्च किए 5 नए क्रॉप प्रोटेक्शन एवं स्पेशलटी प्लांट न्यूट्रिशन प्रोडक्ट्स

इंदौर। डीसीएम श्रीराम लिमिटेड के प्रभाग श्रीराम फार्म सोल्यूशन्स ने फसलों की सुरक्षा एवं उन्हें पोषण प्रदान करने वाले 5 नए क्रॉप प्रोटेक्शन एवं स्पेशलटी प्लांट न्यूट्रिशन प्रोडक्ट्स लॉन्च किए हैं। लॉन्च कार्यक्रम का आयोजन मध्यप्रदेश के इंदौर स्थित होटल सायाजी में किया गया था, जहां क्षेत्र के मुख्य चैनल पार्टनर्स ने हिस्सा लिया। इतना ही नहीं, 200 से अधिक वितरकों और 5000 से अधिक दर्शकों ने भी लाईव टेलीकास्ट के ज़रिए ऑनलाईन हिस्सा लिया। इस अवसर पर श्रीराम सुपर व्हीट सीड गेंहुत्सव योजना के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन भी हुआ, जहां मध्य भारत से 188 विजेताओं को सम्मानित किया गया। खरपतवार प्रबन्धन एवं मैनुअल संचालन के कारण बढ़ी लागत से संबंधित चुनौतियों को हल करने के लिए श्रीराम फार्म सोल्युशन्स लेकर आए हैं अर्ली पोस्ट-एमर्जेन्ट सलेक्टिव हर्बीसाईड (शाकनाशी) श्रीराम बिकुटा जो कपास की फसल में चौड़ी पत्ती और संकरी पत्ती वाले- दोनों तरह के खर

पतवार को नष्ट कर देता है। यह आधुनिक प्रोडक्ट दो बेहद प्रभावी, सक्रिय अवयवों और एक एमई फॉर्मूला से बनाया गया है, जो किसानों को किफ़ायती समाधान उपलब्ध कराता है। अपने इन्सेक्टिसाईड यानि कीटनाशक पोर्टफोलियो को सशक्त बनाने के लिए कंपनी ग्लोबल इनोवेटर्स के सहयोग से श्रीराम साईशो, श्रीराम क्रोन और श्रीराम ट्रेक्सटर लेकर आई है।

फिच ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए भारत के वृद्धि अनुमान को बढ़ाकर किया 7.2 प्रतिशत

नई दिल्ली, एजेंसी। फिच रेटिंग्स ने मंगलवार को चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए भारत की वृद्धि दर का अनुमान बढ़ाकर 7.2 प्रतिशत कर दिया है। मार्च में उसने इसके सात प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था। रेटिंग एजेंसी ने उपभोक्ता खर्च में सुधार और निवेश में वृद्धि का हवाला देते हुए अनुमान में संशोधन किया। वित्त वर्ष 2025-26 और 2026-27 के लिए फिच ने क्रमशः 6.5 प्रतिशत और 6.2 प्रतिशत की वृद्धि दर का

अनुमान लगाया है। फिच ने अपनी वैश्विक आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट में कहा, ''हमारा अनुमान है कि वित्त वर्ष 2024-25 में भारतीय अर्थव्यवस्था में 7.2 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि होगी। फिच का अनुमान आरबीआई के अनुमान के अनुरूप है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने इस महीने की शुरुआत में अनुमान लगाया था कि ग्रामीण मांग में सुधार और मुद्रास्फीति में नरमी से चालू वित्त वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था 7.2 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी।

बजट से उम्मीदें: खपत बढ़ाने के लिए कर दरें घटा सकती है सरकार, सरकारी खजाने को होने वाले नुकसान की होगी भरपाई

नई दिल्ली, एजेंसी। सरकार जुलाई में पेश होने वाले पूर्ण बजट में कुछ श्रेणियों में व्यक्तिगत कर दरों में कटौती पर विचार कर रही है। इससे देश में खपत बढ़ाने में मदद मिल सकती है। कर कटौती से सरकार के खजाने को होने वाले नुकसान की आंशिक भरपाई इस श्रेणी के व्यक्तिगत करदाताओं में खपत बढ़ाकर की जा सकती है। चुनाव बाद सर्वेक्षण से पता चलता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने भले ही तीसरी बार सत्ता में वापसी की है, लेकिन मतदाताओं में उच्च महंगाई, बढ़ती बेरोजगारी और घटती आय को लेकर चिंता से भाजपा को बहुमत नहीं मिला। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 22 जुलाई को पूर्ण बजट पेश कर सकती हैं।

मध्य वर्ग को बचत बढ़ाने में मिलेगी मदद

व्यक्तिगत कर में कटौती से अर्थव्यवस्था में खपत को बढ़ावा मिलने के साथ मध्य वर्ग की बचत में भी इजाफा हो सकता है। साथ ही, इससे सालाना 15 लाख रुपये कमाने वाले व्यक्तियों को कर में राहत मिलने की उम्मीद है। 15 लाख रुपये तक की सालाना आय पर अभी 5 से 20 फीसदी तक कर लगता है। 15 लाख से अधिक कमाई पर 30 फीसदी की दर से कर चुकाना पड़ता है। चुनाव बाद सर्वेक्षण में कहा गया है कि 2023-24 के दौरान भारतीय जीडीपी 8.2 फीसदी की रफ्तार से आगे बढ़ी। इस वृद्धि में खपत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

वित्त वर्ष 2025 में अब तक एडवांस टैक्स कलेक्शन 28 प्रतिशत बढ़कर 1.48 लाख करोड़ रुपए पर रहा: रिपोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। वित्त वर्ष 2025 के 16 जून तक एडवांस टैक्स कलेक्शन पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 28 फीसदी बढ़कर 1.48 लाख करोड़ रुपए हो गया है। 1 अप्रैल से 16 जून के बीच की अवधि में कॉर्पोरेट टैक्स कलेक्शन 1.6 लाख करोड़ रुपए रहा, जबकि पर्सनल टैक्स कलेक्शन 3.79 लाख करोड़ रुपए रहा। इस अवधि के दौरान कुल 5.15 लाख करोड़ रुपए टैक्स कलेक्ट हुआ है। इस अवधि में कुल टैक्स कलेक्शन में पिछले वर्ष की तुलना में 22.89 फीसदी की मजबूत बढ़त हुई है। एक चैनल ने सूत्रों के हवाले से ये जानकारी दी है।

एडवांस टैक्स क्या है

एडवांस टैक्स वह टैक्स है जिसे आप वित्तीय वर्ष की समाप्ति से पहले, उसी वर्ष अर्जित आय पर चुकाते हैं। इसके तहत आपको वर्ष के अंत में एक बार में पूरी

राशि का भुगतान करने के बजाय, किश्तों में भुगतान करना होता है। ये किश्तें 15 जून, 15 सितंबर, 15 दिसंबर और 15 मार्च तक जमा की जा सकती हैं। वेतनभोगी व्यक्तियों के मामले में उनकी कंपनी महीने के अंत में उनके वेतन जमा करने से पहले टैक्स काट लेती है। हालांकि, करदाता के पास आय के अन्य स्रोत भी होने की संभावना हो सकती है जिसमें जमा राशि से मिलने वाला ब्याज, शेयरों और म्यूचुअल फंड की बिक्री पर प्राप्त कैपिटल गेन आदि। ऐसे में एडवांस टैक्स देयता की गणना में इन स्रोतों से होने वाली आय को भी ध्यान में रखना चाहिए।

किश्तों में एडवांस टैक्स का भुगतान

आपको 15 जून को अपनी अनुमानित अग्रिम कर देयता का 15 फीसदी भुगतान करना होगा। 15 सितंबर तक, आपको देय राशि का 45 फीसदी और 15 दिसंबर तक देय राशि का 75 फीसदी और 15 मार्च तक शेष राशि का 100 फीसदी भुगतान करना होता है। हालांकि, ऐसे स्व-रोजगार वाले व्यवसायियों और प्रोफेशनल्स के लिए नियम थोड़े अलग हैं जिन्होंने प्रिजम्पटिव टैक्सेशन स्कीम का विकल्प चुना है। हालांकि उन्हें भी अग्रिम कर का भुगतान करना होता है लेकिन उनको कुछ रियायतों मिलती हैं। वे वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में 15 मार्च तक एक बार में भुगतान कर सकते हैं। यह रियायत इसलिए बढ़ाई गई है क्योंकि छोटे व्यवसायियों को वित्तीय वर्ष की शुरुआत में अपनी अग्रिम कर देयता का अनुमान लगाना मुश्किल हो सकता है।

महिंद्रा ने मध्यप्रदेश में लॉन्च किया अपना क्रांतिकारी 6आरओ पैडी वॉकर ट्रांसप्लांटर

मुंबई । महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के फार्म इक्विपमेंट सेक्टर (एफईएस), जो महिंद्रा समूह की इकाई है, और दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैक्टर निर्माता कंपनी है, ने मध्यप्रदेश में महिंद्रा 6आरओ पैडी वॉकर नामक एक नया 6 रो धान ट्रांसप्लांटर लॉन्च किया है। मध्यप्रदेश में 4आरओ वॉक बिहाइंड ट्रांसप्लांटर (एमपी461) और 4आरओ राइड-ऑन (प्लांटिंग मास्टर पैडी 4आरओ) की सफल शुरुआत के बाद, नया महिंद्रा 6आरओ पैडी वॉकर चावल की रोपाई तकनीक के क्षेत्र में महिंद्रा की मौजूदगी को और बढ़ाएगा, जहाँ कंपनी पहले से ही बाजार में अग्रणी है। धान एक प्रमुख फसल है और मध्यप्रदेश अपने विश्व स्तरीय चावल के लिए प्रसिद्ध हैं। यह प्रदेश चावल मशीनीकरण तकनीकों को अपनाने वाला पहला राज्य है, जहाँ राज्य के कई हिस्सों में उच्च गुणवत्ता वाला चावल उगाया जाता है। नया समाधान जल संरक्षण को संभव बनाता है। साथ ही पर्यावरणीय प्रभाव को कम करता है और इसके इस्तेमाल से अन्य श्रम-गहन तकनीकों की तुलना में कम श्रम लागत आती है। दूसरी तरफ यह चावल की खेती से संबंधित समग्र लाभप्रदता में भी सुधार करता है।

एमआईसी इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड ने क्यूआईबी प्लेसमेंट शुरू किया

कंपनी ने 48.30 रुपये प्रति शेयर फ्लोर प्राइस के रूप में सेट किए

हैदराबाद, एजेंसी। एलईडी वीडियो डिस्प्ले के डिज़ाइन, डेवलपमेंट और मैन्युफैक्चरिंग में ग्लोबल लीडर एमआईसी इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड ने घोषणा की है कि उसके बोर्ड ने इस इश्यू के संबंध में ऐप्लिकेशन फॉर्म के साथ 12 जून, 2024 के प्रारंभिक प्लेसमेंट डाक्यूमेंट्र को अप्रूव करके मंजूरी दी और 12 जून, 2024 को इश्यू की ओपनिंग करके इसे ऑथराइज्ड किया है। इसके अलावा, कंपनी ने सेबी आईसीडीआर रेगुलेशंस के रेगुलेशन 176 के तहत निर्धारित मूल्य प्राइसिंग फार्मूले के आधार पर इश्यू की न्यूनतम कीमत 48.30/- रुपये प्रति इक्विटी शेयर होने को मंजूरी दी।

हाल ही में कंपनी ने घोषणा की थी कि उसे फिरोजपुर डिवीज़न के प्रमुख और महत्वपूर्ण स्टेशंस पर कोच गाइडेंस डिस्प्ले बोर्ड के प्रोविजन के लिए उत्तरी रेलवे जोन के फिरोजपुर डिवीज़न से स्वीकृति पत्र प्राप्त हुआ है। उक्त कार्य आदेश का कुल मूल्य 3,04,95,149.54/- रुपये है। इसके अलावा, कंपनी को हापा स्टेशन पर डीडब्ल्यूके पीएफ -1 सीजीडीबी और आईपीआईएस सिस्टम के काम को पूरा करने के लिए पश्चिमी रेलवे क्षेत्र के राजकोट डिवीज़न से लेटर ऑफ कंप्लीशन (समापन पत्र)/ इंस्टॉलेशन सर्टिफिकेट (स्थापना प्रमाण पत्र) प्राप्त हुआ है। इससे पहले, कंपनी ने घोषणा की थी कि उसने एक सहायक कंपनी यानी मेसर्स एसओए इलेक्ट्रॉनिक्स ट्रेडिंग एलएलसी, को शामिल किया, संयुक्त अरब अमीरात, दुबई में एमआईसी इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है। एमआईसी इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड 1988 से एलईडी वीडियो डिस्प्ले, हाई-एंड इलेक्ट्रॉनिक और टेलीकम्युनिकेशन इक्विपमेंट और टेलीकॉम सॉफ्टवेयर के डिज़ाइन, डेवलपमेंट और मैन्युफैक्चरिंग में एक ग्लोबल लीडर है।

अब शुरू हुआ न असली वर्ल्ड कप...

- बरसते रहे छक्के, रिकॉर्ड तोड़ मैच, निकोलस पूरन का दिखा रौद्र रूप
- वेस्टइंडीज की 104 रन की धमाकेदार जीत
- पावरप्ले में टीम ने बनाए रिकॉर्ड 92 रन

ग्रॉस आइलेट (सेंट लूसिया) (एजेंसी)। टी-20 का मतलब होता है फटाफट क्रिकेट। छक्के-चौके की बरसात। रनों का अंबार। स्कोर अनलिमिटेड। लेकिन यूएस-वेस्टइंडीज में जारी टी-20 वर्ल्ड कप का मौजूदा सीजन फीका-फीका सा लग रहा था। ऐसी पिच पर मैच हो रहे थे, जहां रन ही नहीं बन रहे थे। 120 रन का टारगेट चेज करने में भी बल्लेबाजों के पसीने छूट जा रहे थे। लो स्कोरिंग थ्रिलर देखने को मिल रहा था, लेकिन मंगलवार की सुबह वेस्टइंडीज और अफगानिस्तान के बीच एक ऐसा मुकाबला हुआ, जिसने फैंस को खुश होने का मौका दे दिया। क्रिकेट लवर्स की माने तो असली टी-20 वर्ल्ड कप तो आज से शुरू हुआ है।

निकोलस पूरन के 98 रन – दरअसल, निकोलस पूरन ने लंबे-लंबे छक्के जड़ने की अपनी काबिलियत दिखाते हुए 53 गेंद पर 98 रन ठोक दिए, जिसके बूते वेस्टइंडीज ने अफगानिस्तान के खिलाफ टॉस गंवाकर पहले बल्लेबाजी करते हुए पांच विकेट पर 218 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। इसी के साथ कैरेबियाई टीम ने डैरेन सैमी स्टेडियम में मौजूदा टी-20 विश्व कप का सबसे बड़ा स्कोर खड़ा कर दिया।

कैरेबियन पावर ने किया फायर – वैसे तो दोनों टीम पहले ही सुपर-8 में अपनी जगह पक्की कर चुकी थी और इस मैच से ग्रुप से शीर्ष पर रहने वाली टीम का निर्धारण होना था। दो बार के चैंपियन वेस्टइंडीज के लिए पूरन के अलावा वेस्टइंडीज की तरफ से पूरन के अलावा ओपनर जॉनसन चार्ल्स (43), शाई होप (25) और रोवमैन पॉवेल (26) ने भी उपयोगी योगदान दिया। इसके जवाब में अफगानिस्तान की टीम 16.2 ओवर में 114 रन पर आउट हो गई। वेस्टइंडीज के लिए ओबेद मैकॉय ने 14 रन देकर तीन, अकील हुसैन ने 21 रन देकर दो और गुडाकेश मोती ने 28 रन देकर दो विकेट लिए।

रिकॉर्ड्स की बौछार – निकोलस पूरन ने छह चौके और आठ छक्के वाली अपनी पारी के दौरान अजमतुल्लाह ओमरजई के एक ओवर में तीन सिक्स और एक चौका लगाया। इस ओवर में कुल 36 रन बने, जिसमें 5 नोबॉल, 5 वाइड और चार लेगबाई भी शामिल हैं। इस तरह से यह टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के सबसे महंगे ओवरों में शामिल हो गया। वेस्टइंडीज ने पावर प्ले में एक विकेट पर 92 रन बनाए जो पुरुष टी20 विश्व कप में नया रिकॉर्ड है। पूरन रन आउट होने के कारण अपना शतक पूरा नहीं कर पाए। उन्हें मैच का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया।

संक्षिप्त समाचार

टी-वर्ल्ड कप 24

फ्लेमिंग बोले- सुपर 8 में भारत के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं कुलदीप

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान स्टीफन फ्लेमिंग का मानना है कि टी20 विश्व कप के सुपर 8 के चरण में वेस्टइंडीज की पिचों से टर्न मिलने की संभावना है और ऐसे में विकेट लेने की अपनी क्षमता के कारण बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव भारत के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं। भारत अभी तक टूर्नामेंट में तीन तेज गेंदबाजों जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज और अर्शदीप सिंह तथा दो स्पिनरों रविंद्र जडेजा और अक्षर पटेल के साथ मैदान में उतरा है। फ्लेमिंग ने कहा, 'अगर विकेटों से टर्न मिलता है जैसा कि टूर्नामेंट आगे बढ़ने के साथ उम्मीद की जा रही है, तो फिर कुलदीप इसमें विकेट लेने की अतिरिक्त क्षमता जोड़ सकते हैं।% उन्होंने कहा, 'उनके पास अभी दोनों तरह के संयोजन आजमाने का मौका है जो कि अच्छा है लेकिन खेल में आप लकीर का फकीर बनकर नहीं रह सकते जिससे कि आप परिस्थितियों का फायदा उठाने से चूक जाओ। भारत को सुपर 8 में अपना पहला मैच गुरुवार को बारबाडोस में अफगानिस्तान के खिलाफ खेलना है। भारत अभी तक बाएं हाथ के दो स्पिनर के साथ उतरा है। इनमें अक्षर को सफलता मिली लेकिन जडेजा तीन मैच में केवल तीन ओवर ही कर पाए। आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स के लंबे समय से कोच रहे फ्लेमिंग को एक ही विधा के दो खिलाड़ियों को टीम में रखने में कोई आपत्ति नहीं है।

पाकिस्तान में अपना समय बर्बाद मत करो- हरभजन ने गैरी कर्स्टन को दी सलाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर हरभजन सिंह ने सोमवार को गैरी कर्स्टन को सलाह दी कि वे पाकिस्तान में अपना समय बर्बाद नहीं करें क्योंकि दक्षिण अफ्रीका के इस पूर्व क्रिकेटर ने दावा किया था कि बाबर आजम की अगुआई वाली टीम में एकता नहीं है। कर्स्टन ने टी20 विश्व कप में निराशाजनक अभियान के दौरान एक-दूसरे का समर्थन नहीं करने के लिए पाकिस्तानी खिलाड़ियों की आलोचना की और कहा कि उन्होंने किसी टीम में ऐसा विषाक्त माहौल कभी नहीं देखा। कर्स्टन ने अमेरिका और वेस्टइंडीज में टूर्नामेंट से ठीक पहले पाकिस्तान के मुख्य कोच का कार्यभार संभाला था लेकिन वे निराश हो गए क्योंकि टीम अमेरिका और भारत से हारकर पहले दौर से बाहर हो गई।

टी20 विश्व कप सुपर 8 मैचों से पहले बोले रोहित शर्मा

थोड़ा व्यस्त कार्यक्रम लेकिन हम तैयार

ब्रिजटाउन (बारबडोस) (एजेंसी)। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने स्वीकार किया कि टी20 विश्व कप का सुपर आठ चरण 'थोड़ा व्यस्त' होने वाला है लेकिन उनके खिलाड़ी इसके लिए तैयार हैं क्योंकि उनमें 'कुछ खास' करने को लेकर 'वास्तविक उत्सुकता' है। भारत अपने सुपर आठ अभियान की शुरुआत 20 जून को अफगानिस्तान के खिलाफ करेगा। टीम इसके बाद बांग्लादेश (22 जून को एंटीगा) और ऑस्ट्रेलिया (24 जून को सेंट लूसिया) के खिलाफ खेलेगी।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा अपलोड किए गए एक वीडियो में रोहित ने कहा, 'पहला मैच खेलने के बाद हम अगले दो मैच तीन या चार दिन के अंतराल में खेलेंगे। इस 37 वर्षीय खिलाड़ी ने कहा, 'यह थोड़ा व्यस्त होने वाला है लेकिन हम इन सभी चीजों के आदी हो चुके हैं। हम बहुत यात्रा करते हैं और बहुत खेलते हैं इसलिए यह कभी बहाना नहीं बनने वाला।

भारतीय टीम ने सोमवार को लंबे अभ्यास सत्र में हिस्सा लिया जिसमें विराट कोहली और रोहित जैसे सीनियर खिलाड़ियों ने सामान्य से अधिक समय नेट पर बिताया। रोहित ने कहा, 'टीम में कुछ खास करने को लेकर बहुत उत्सुकता है। यह दूसरे चरण की शुरुआत करने का एक अच्छा तरीका है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि हर कोई अंतर पैदा करना चाहता है और हम अपने कौशल सत्रों को काफी गंभीरता से लेते हैं।

उन्होंने कहा, 'हर कौशल सत्र में हासिल करने के लिए कुछ होता है। आयोजकों द्वारा इस्तेमाल की गई ड्रॉप इन पिचों (दूसरे स्थान पर तैयार करके लाई गई पिच) के कारण भारतीय टीम को अमेरिकी चरण के दौरान प्रतिकूल बल्लेबाजी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। रोहित ने कहा कि कैरेबियाई चरण अपने साथ परिस्थितियों से पहचान की भावना लेकर आता है और उनकी टीम इसका अधिकतम लाभ उठाने की कोशिश करेगी।

उन्होंने कहा, 'हमने यहां बहुत सारे मैच देखे हैं, हमने यहां बहुत सारे मैच खेले हैं। इसलिए हर कोई समझता है कि परिणाम को अपने पक्ष में करने के लिए क्या करना है। भारतीय टीम ने लीग चरण में आयरलैंड, पाकिस्तान और अमेरिका को हराया जबकि कनाडा के खिलाफ उनका अंतिम ग्रुप मैच फ्लोरिडा में गीली आउटफील्ड के कारण रद्द हो गया।

राजनीति से ब्रेक के बाद पहली बार अमित शाह से मिले गौतम गंभीर

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक ओर जहां भारतीय क्रिकेट टीम के कोच के लिए इंटरव्यू होना है तो दूसरी ओर भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर ने गृह मंत्री अमित शाह से भेंट की। गंभीर 2019 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर पूर्वी दिल्ली से सांसद बने थे। उन्होंने अपने क्रिकेट कोचिंग करियर पर ध्यान केंद्रित करने के लिए सक्रिय राजनीति से ब्रेक ले लिया है। इस फैसले के बाद इस तरह की पहली मीटिंग है। इस मीटिंग के बाद कुछ बड़ा होने का कयास लगाया जा रहा है।

गंभीर ने 'एक्स' पर शाह के साथ तस्वीर साझा करते हुए लिखा, 'हाल की चुनावी सफलता पर बधाई देने के लिए माननीय गृह मंत्री अमित शाह जी से मुलाकात की। गृह मंत्री के रूप में उनका नेतृत्व हमारे राष्ट्र की सुरक्षा और स्थिरता को और मजबूत करेगा।' बता दें कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) चैंपियन कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) के मेंटोर (मार्गदर्शन) के रूप में गौतम गंभीर की खूब तारीफ हुई है। जब से केकेआर चैंपियन बनी है तब से उन्हें टीम इंडिया का हेड कोच बनाने की मांग की जा रही है।

गंभीर टी20 विश्व कप के बाद भारत के मुख्य कोच के रूप में राहुल द्रविड़ की जगह लेने के मजबूत दावेदार हैं। द्रविड़ ने पुष्टि की है कि वह मौजूदा टी20 विश्व कप के बाद भारतीय टीम के कोच का पद छोड़ देंगे। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव जय शाह ने संभावित नई नियुक्ति पर कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं की है। हालांकि, वह चाहते हैं कि कोई देसी कोच ही बने, जो टीम इंडिया के माहौल और प्लेयर्स से परिचित हो। यह पता चला है कि अशोक मल्होत्रा की अध्यक्षता वाली क्रिकेट सलाहकार समिति (सीएसी) ने अभी तक किसी भी इच्छुक उम्मीदवार का साक्षात्कार नहीं लिया है। बीसीसीआई से जुड़े लोगों का मानना है कि गंभीर की नियुक्ति महज एक औपचारिकता है क्योंकि दिल्ली के इस खिलाड़ी को टक्कर देने के लिए कोई उपयुक्त भारतीय उम्मीदवार मौजूद नहीं है। गंभीर की देख-रेख में जब केकेआर आईपीएल चैंपियन बना, तो उन्हें भारतीय टीम का कोच बनाने की मांग और बढ़ गई। गंभीर ने हाल ही में दुबई में एक कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय टीम का कोच बनने की इच्छा जताई थी।

विंबलडन चैंपियन वोंद्रोसोवा ने जीत के साथ की ग्रास कोर्ट सत्र की शुरुआत

बर्लिन (एजेंसी)। विंबलडन चैंपियन मार्केटा वोंद्रोसोवा ने अपने ग्रास कोर्ट सत्र की शुरुआत बर्लिन लेडीज ओपन टेनिस टूर्नामेंट के पहले दौर में क्वालीफायर रेबेका मसारोवा के खिलाफ सीधे सेट में जीत के साथ की। पांचवीं वरीय वोंद्रोसोवा ने रेबेका को 6-4, 6-3 से हराकर दूसरे दौर में प्रवेश किया। वोंद्रोसोवा ने तीन बार रेबेका की सर्विस तोड़ी और फोरहैंड विनर लगाकर जीत हासिल की। चेक गणराज्य की वोंद्रोसोवा ने फ्रेंच ओपन के पहले दौर में भी स्पेन की इस खिलाड़ी को हराया था। वोंद्रोसोवा दूसरे दौर में अन्ना केलिन्सकाया से भिड़ेंगी। पिछले साल वोंद्रोसोवा विंबलडन खिताब जीतने वाली पहली गैरवरीय महिला खिलाड़ी बनीं थी। उन्होंने फाइनल में 2022 की उप विजेता ओन्स जेब्युर को 6-4, 6-4 से हराया था।

आज दक्षिण अफ्रीका पर अजेय बढ़त बनाने उतरेगी भारतीय महिला टीम

बेंगलुरु (एजेंसी)। पहले मैच में बड़ी जीत से उत्साहित भारतीय महिला टीम दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बुधवार को यहां होने वाले दूसरे एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में अपना अच्छा प्रदर्शन जारी रखकर श्रृंखला में 2-0 की अजेय बढ़त बनाने की कोशिश करेगी। भारत ने पहले मैच में 143 रन से जीत दर्ज की लेकिन टीम कुछ खिलाड़ियों के प्रदर्शन को लेकर चिंतित होगी।

भारत ने पहला मैच स्मृति मंधाना के शतक और स्पिनरों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत जीता। बल्लेबाजी में हालांकि उसकी कुछ कमजोरियां खुलकर सामने आई। भारत के लिए सबसे बड़ी चिंता सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा का वनडे में लगातार खराब प्रदर्शन है। उन्होंने वनडे में अपना आखिरी अर्धशतक 2022 में लगाया था। पिछले छह मैच में वह दोहरे अंक में भी नहीं पहुंच पाई। उन्हें टीम ने अपनी जगह बनाए रखने के लिए बड़ी पारी खेलने की जरूरत है।

कप्तान हरमनप्रीत कौर का बल्ला भी नहीं चल पा रहा है। पिछले 5 मैच में उन्होंने 14, 9, 5, 3 और 10 रन बनाए। चोट से उबर कर वापसी करने वाली शीर्ष क्रम की एक अन्य बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिग्स भी प्रभावित करने में नाकाम रही। इन सभी को मंधाना से सीख लेने की जरूरत है जिन्होंने वनडे में छठा शतक लगाया। यह बाएं हाथ की बल्लेबाज अच्छी लय में है। उन्होंने फरवरी 2022 के बाद वनडे में सात अर्धशतक और दो शतक लगाए हैं। भारतीय टीम को उनसे एक और बड़ी पारी की उम्मीद रहेगी।

गेंदबाजों में अपना पहला मैच खेल रही लेग स्पिनर आशा शोभना ने 21 रन देकर चार विकेट लिए लेकिन टीम प्रबंधन तेज गेंदबाज पूजा वस्त्राकर की फिटनेस को लेकर चिंतित होगा जो दक्षिण अफ्रीका की पारी के दौरान 18वें ओवर में मैदान छोड़कर चली गई थी। उनके नहीं खेलने पर अरुंधति रेड्डी को टीम में लिया जा सकता है। जहां तक दक्षिण अफ्रीका का सवाल है तो अगर उसे श्रृंखला जीवंत रखती है तो उसके बल्लेबाजों को भारतीय स्पिनरों का डटकर सामना करना होगा। पिछले मैच में भारतीय स्पिनरों आशा, दीप्ति शर्मा और राधा यादव ने मिलकर सात विकेट लिए थे।

टीम इस प्रकार हैं

भारत – हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), शैफाली वर्मा, दीप्ति शर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, ऋचा घोष (विकेट कीपर), उमा छेत्री (विकेट कीपर), दयालन हेमलता, राधा यादव, आशा शोभना, श्रेयंका पाटिल, साइका इशाक, पूजा वस्त्रकार, रेणुका सिंह ठाकुर, अरुंधति रेड्डी, प्रिया पुनिया।

दक्षिण अफ्रीका – लॉरा वोल्वार्ड्ट (कप्तान), एनेके बॉश, तजमिन ब्रिट्स, नादिन डी क्लार्क, एनेरी डर्कसेन, मिके डी रिडर, सिनालो जाफ्ता, मारिजाने काप, अयाबोंगा खाका, मसाबाता क्लास, सुने लुस, एलिज-मारी मार्ज, नॉनकुलुलेको म्लाबा, तुमी सेखुकुने, नोंडुमिसो शंगासे, डेलमी टकर।

समय- दोपहर 1.30 बजे।

टी-20 वर्ल्ड कप

वेस्टइंडीज ने बड़ी जीत के साथ लगाई रिकॉर्ड्स की झड़ी

ग्रॉस आइलेट (एजेंसी)। निकोलस पूरन (98) रनों की शानदार अर्धशतकीय पारी और उसके बाद गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर वेस्टइंडीज ने टी-20 विश्वकप के 40वें मुकाबले में अफगानिस्तान को 104 रनों के विशाल अंतर से हरा दिया है। मैच के दौरान वेस्टइंडीज द्वारा बनाए गए रिकॉर्ड्स पर नजर डाल लेते हैं-

वेस्टइंडीज के लिए सबसे ज्यादा टी20आई मैच जीतने वाले कप्तान

28 - डैरेन सैमी (जीत/हार अनुपात= 1.647)
14 - रोवमैन पॉवेल (जीत/हार अनुपात= 2)
13 - कीरोन पोलार्ड (जीत/हार अनुपात= 0.619)
11 - कार्लोस ब्रैथवेट (जीत/हार अनुपात= 0.647)
8 - निकोलस पूरन (जीत/हार अनुपात= 0.571)

टी20आई में वेस्टइंडीज के लिए सबसे लंबी जीत का सिलसिला

8* - 2024
7 - 2012-2013
5 - 2017
4 - 2015-2016

टी20 विश्व कप में वेस्टइंडीज के लिए सबसे लंबी जीत का सिलसिला

2024 में 4*
2012 में 3 (चैंपियंस)
2014 में 3 (सेमीफाइनलिस्ट)
2016 में 3 (चैंपियंस)

टी20आई में अफगानिस्तान की बड़ी हार का रिकॉर्ड

116 रन बनाम इंग्लैंड, कोलंबो आरपीएस, 2012
104 रन बनाम वेस्टइंडीज, ग्रॉस आइलेट, 2024
101 रन बनाम भारत, दुबई, 2021
72 रन बनाम श्रीलंका, दांबुला, 2024
68 रन बनाम आयरलैंड, अबू धाबी, 2013

टी20आई में वेस्टइंडीज के लिए सबसे बड़ा जीत अंतर

134 रन बनाम युगांडा, गुयाना, 2024
104 रन बनाम अफगानिस्तान, ग्रॉस आइलेट, 2024
84 रन बनाम पाकिस्तान, मीरपुर, 2014
74 रन बनाम ऑस्ट्रेलिया, कोलंबो आरपीएस, 2012
73 रन बनाम बांग्लादेश, मीरपुर, 2014

मैच की बात करें तो पहले ही सुपर 8 में अपनी जगह पक्की कर चुकी थी और इस मैच से ग्रुप से शीर्ष पर रहने वाली टीम का निर्धारण होना था। दो बार के चैंपियन वेस्टइंडीज ने अपने बल्लेबाजी कौशल का अच्छा नमूना पेश किया तथा पांच विकेट पर 218 रन बनाए जिसमें पूरन ने 53 गेंद पर 98 रन का योगदान दिया। उन्होंने अपनी पारी में छह चौके और आठ छक्के लगाए। अफगानिस्तान की टीम इसके जवाब में 16.2 ओवर में 114 रन पर आउट हो गई। उसकी तरफ से इब्राहिम जादरान ने सर्वाधिक 38 रन बनाए। वेस्टइंडीज के लिए ओबेद मैकॉय ने 14 रन देकर तीन और अकील हुसैन ने 21 रन देकर दो विकेट लिए।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के ऑन करें
www.pratahkiran.com | epaper.pratahkiran.com
@Pratahkiran | @Pratahkiran

संक्षिप्त समाचार

बकरीद पर कुर्बानी से बचाने को 11 लाख में खरीद लिए 127 बकरे

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली समेत पूरे देश में सोमवार को बकरीद का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। परंपरा के मुताबिक कुर्बानी भी दी गई। इस बीच दिल्ली में 127 बकरों को कुर्बानी से बचाने के लिए कुछ लोगों ने मिलकर 11 लाख रुपए खर्च कर डाले। ना सिर्फ इन बकरों को खरीदा गया बल्कि जीवनभर इनकी सेवा का इंतजाम भी किया गया है। सोशल मीडिया पर इसकी खूब चर्चा हो रही है। दरअसल, यह पहल पुरानी दिल्ली में स्थित धर्मपुरा जैन मंदिर से जुड़े जैन समाज के कुछ लोगों ने की। दिगंबर जैन लाल मंदिर के प्रबंधन से जुड़े

पुनीत जैन ने लाइव हिन्दुस्तान को फोन पर बताया कि मंदिर से जुड़े युवा जैन संगठन ने यह काम किया। उन्होंने कहा, हर जीव को जीने का हक है। हमसे जो भी सहयोग हो सकता है, जितनी हमारी क्षमता है उसके तहत हमने ऐसा किया। पुनीत जैन ने बताया कि बकरों का पूरा ध्यान रखा जा रहा है। उन्हें दाना-पानी दिया जा रहा है। डॉक्टरों की टीम सुबह शाम उनकी जांच कर रही है। एक-दो दिन में खतौली के पास एक बकराशाला में भेजा जाएगा, जिसे जैन समाज की ओर से ही संचालित किया जाता है।

क्राउड फंडिंग से जुटाया गया पैसा- बकरीद से दो दिन पहले ही मंदिर से जुड़े कुछ लोगों में मन में यह विचार आया। इसके बाद समाज के लोगों को जोड़ने वाले वॉट्सऐप ग्रुप्स में प्लान को साझा करते हुए आर्थिक मदद की अपील की गई। देखते ही देखते 11 लाख रुपए से अधिक की धनराशि जमा हो गई। इस धनराशि से 127 बकरों की खरीद की गई। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में लोग बकरों के साथ जियो और जीने दो के नारे लगाते दिख रहे हैं। दिल्ली जैन समाज के अध्यक्ष चक्रेश जैन समेत कई लोगों ने इसमें अहम भूमिका निभाई। मुहिम से जुड़े लोगों ने बताया कि अंकुर जैन और विवेक जैन की मेहनत से यह सफल हो पाया।

दिल्ली एयरपोर्ट को मिला बम की धमकी वाला ईमेल, मचा हड़कंप

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली से दुबई जाने वाली एक फ्लाइट को बम से उड़ाने की धमकी मिली। यह धमकी एक ईमेल के जरिए डीआइएएल (दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड) कार्यालय को भेजी गई थी। बम की धमकी वाला ईमेल मिलते ही हड़कंप मच गया। तुरंत सुरक्षा बढ़ाते हुए फ्लाइट की जांच की गई लेकिन कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। दिल्ली पुलिस ने बताया कि यह धमकी भरा ईमेल 17 जून को सुबह 9.35 बजे मिला था। पुलिस ने बताया कि ईमेल आईजीआई एयरपोर्ट स्थित डीआइएएल (दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड) कार्यालय को मिला जिसमें दिल्ली से दुबई की उड़ान के अंदर बम होने की धमकी दी गई थी। इसके बाद तुरंत फ्लाइट की तलाशी ली गई लेकिन कुछ संदिग्ध नहीं मिला। इससे पहले पुलिस ने दिल्ली हाई कोर्ट को बताया है कि आपातकालीन स्थिति में अधिक इकाइयों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पांच बम निरोधक दस्तों (बीडीएस) और 18 बम जांच दलों (बीडीटी) की मौजूदा संख्या में से छोटी टीमें गठित की जा सकती हैं। दिल्ली पुलिस ने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की 23 बीडीएस/बीडीटी इकाइयां भी तैनात हैं, जिन्हें गृह मंत्रालय की मंजूरी के बाद तैनात किया जा सकता है। इसमें आगे कहा गया है कि बीडीएस/बीडीटी के पांच दस्तों को भी इस संबंध में प्रशिक्षित किया जाएगा, जिनमें प्रत्येक बैच में 15 कार्मिक होंगे। पुलिस ने पहले कहा था कि यहां 4,600 से अधिक स्कूलों के लिए कुल पांच बीडीएस और 18 बीडीटी हैं। पुलिस का यह रुख यहां मथुरा रोड स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) में बम की झूठी धमकी के मद्देनजर पेशे से वकील अर्पित भार्गव द्वारा 2023 की याचिका में दायर एक अतिरिक्त हलफनामे में आया है। पुलिस ने नवीनतम हलफनामे में कहा, दिल्ली पुलिस के बेस स्टेशनों पर 18 बम जांच दल कार्यरत हैं, जिनका उद्देश्य प्रतिक्रिया समय को न्यूनतम करना तथा संबंधित जिले के भौगोलिक क्षेत्र का दायरा सुनिश्चित करना है। इसमें कहा गया।

दिल्ली जल संकट पर बढ़ा सियासी घमासान

अब वीवीआईपी इलाकों तक पहुंची कटौती

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली में जल संकट दिन-प्रतिदिन और विकराल होता जा रहा है। राजधानी के दर्जनों इलाकों में लोग कई दिनों से बूंद-बूंद पानी को तरस रहे हैं। सभी प्रभावित इलाकों में दिल्ली सरकार टैंकर के जरिए पानी पहुंचाने के प्रयास कर रही है, जो नाकाफी साबित हो रहे हैं। दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने दिल्लीवालों से पानी बचाने और इसका सोच-समझ कर इस्तेमाल करने की अपील की है। दिल्ली पुलिस भी लगातार पाइपलाइनों की रखवाली कर रही है। बढ़ते जल संकट को देखते हुए अब दिल्ली के वीआईपी इलाकों वाले एनडीएमसी क्षेत्र में भी पानी की कटौती की तैयारी की जा रही है। एनडीएमसी ने कहा है कि लुटियंस दिल्ली में पानी की आपूर्ति में कटौती होगी। इस बीच आम आदमी पार्टी (आप) और भाजपा के बीच पानी के सवाल पर सियासी वार-पलटवार लगातार जारी है।

जल मंत्री आतिशी ने सोमवार को वजीराबाद बैराज का दौरा किया और कहा कि हरियाणा से कम पानी आने के कारण वजीराबाद में जल स्तर 6.20 फुट घट गया है। आतिशी ने कहा कि यमुना नदी का पानी हरियाणा से वजीराबाद जलाशय में आता है जहां से वजीराबाद, चंद्रावल और ओखला के वाटर ट्रीटमेंट प्लांट्स को इसकी आपूर्ति की जाती है। उन्होंने कहा कि अगर पानी नहीं मिलेगा तो वाटर ट्रीटमेंट प्लांट्स कैसे काम करेंगे? दिल्ली के लोग चिंतित हैं, इसलिए हम हरियाणा से अपील करते हैं कि उन्हें यमुना नदी में पानी छोड़ना चाहिए क्योंकि जब तक वे यमुना में पानी नहीं छोड़ेंगे, दिल्ली में लगातार पानी की कमी बनी रहेगी। वहीं हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सोमवार को दिल्ली की आम आदमी पार्टी (आप) सरकार पर राष्ट्रीय राजधानी में पानी की कमी के मुद्दे पर राजनीति करने का आरोप लगाया। सैनी ने कहा कि हरियाणा, दिल्ली के लोगों की परवाह करता है। दिल्ली की आप सरकार पर इस मुद्दे पर राजनीति करने का आरोप

लगाते हुए सैनी ने कहा कि आप को अपने गिरेबां में झांकना चाहिए।

भाजपा ने तस्वीरों के जरिए आप सरकार पर बोला हमला

दिल्ली में जल संकट को लेकर भाजपा लगातार आम आदमी पार्टी सरकार पर हमलावर बनी हुई है। दिल्ली भाजपा ने एक्स पर कुछ तस्वीरें पोस्ट कर कहा, ये केजरीवाल के लंदन का दृश्य है, जहां केजरीवाल गैंग जनता को पानी नल की टोटी से नहीं अपने टैंकर माफिया से भिजवाते हैं ताकि मोटी कमाई हो सके!

दिल्ली का जल संकट भाजपा द्वारा प्रायोजित: संजय सिंह

: दिल्ली में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) सरकार जल संकट के लिए भाजपा को जिम्मेदार ठहरा रही है। दिल्ली में पानी के मुद्दे पर भाजपा पर पलटवार करते हुए आप सांसद संजय सिंह ने सोमवार को बड़ा आरोप लगाते हुए इस जल संकट को भाजपा द्वारा प्रायोजित बताया था।

टैंकरों से बुझाई जा रही दिल्लीवालों की प्यास- दिल्ली के कई इलाकों में आज भी पानी की किल्लत देखी गई। राजधानी में जल संकट के बीच गीता कॉलोनी, चाणक्यपुरी, ओखला और न्यू अशोक नगर और वसंत विहार के कुसुमपुर पहाड़ी इलाके में टैंकरों के जरिये लोगों को पानी की आपूर्ति की जा रही है।

आतिशी बोलीं-

यमुना में कम पानी छोड़े जाने के कारण वजीराबाद में जलस्तर घटा

दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने सोमवार को जल संकट पर बोलते हुए कहा कि अगर पानी नहीं मिलेगा तो वाटर ट्रीटमेंट प्लांट कैसे काम करेंगे? दिल्ली के लोग चिंतित हैं, इसलिए हम हरियाणा से अपील करते हैं कि उन्हें यमुना नदी में पानी छोड़ना चाहिए क्योंकि जब तक वे यमुना में पानी नहीं छोड़ेंगे, दिल्ली में लगातार पानी की कमी बनी रहेगी। आतिशी ने कहा कि दिल्ली के लिए यमुना में कम पानी छोड़े जाने के कारण वजीराबाद में जलस्तर 6.20 फुट घट गया है और इससे दिल्ली में जल संकट पैदा हो गया है।

पानी के मुद्दे पर राजनीति करने से पहले आप को अपने गिरेबां में झांकना चाहिए

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सोमवार को दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार पर राजधानी में पानी की कमी के मुद्दे पर राजनीति करने का आरोप लगाया। सैनी ने कुरुक्षेत्र में संवाददाताओं से कहा कि हरियाणा को दिल्ली के लोगों की परवाह है। सैनी ने कहा कि आप सरकार पर पानी के मुद्दे पर राजनीति करने से पहले अपने गिरेबां में झांकना चाहिए। उन्होंने कहा कि वे लोगों से किए गए वादों को पूरा करने में नाकाम रहे हैं, क्योंकि उनका ध्यान भ्रष्टाचार पर अधिक रहा है।

1994 का जल समझौता नहीं पूरी कर रहा मांग

कैसे बुझेगी दिल्ली की प्यास; आतिशी ने बताया अगले साल का प्लान

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली की जनता पानी को लेकर त्राहिमाम कर रही है। सरकार और हरियाणा और आप सरकार लगातर एक दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं। इसी बीच दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने पड़ोसी राज्य से मानवीय आधार पर पानी छोड़ने का अनुरोध किया है। उन्होंने सोमवार को राजधानी के लिए यमुना से पानी के हिस्से के संशोधित आवंटन की मांग की और कहा कि 1994 का जल बंटवारा समझौता, जो यमुना के पानी को विभिन्न उत्तर भारतीय राज्यों में विभाजित करता है, खत्म होने वाला है।

2025 का प्लान

जल समझौते में यह प्रावधान है कि अगर कोई पार्टनर चाहे तो 2025 के बाद इस पर फिर से विचार किया जा सकता है और अगले साल इस पर फिर से बातचीत होगी। वजीराबाद बैराज में घटते जलस्तर का निरीक्षण करते हुए मंत्री ने कहा कि यमुना और गंगा से आने वाले सरफेस वाटर सोर्स ही ही एकमात्र रिलाएबल (विश्वसनीय) स्रोत हैं। उन्होंने कहा कि तीन दशक पहले जनसंख्या घनत्व को ध्यान में रखते हुए पानी का बंटवारा किया गया था, जो अब कई गुना बढ़ गई है। आतिशी ने कहा, 1994 के समझौते की अवधि खत्म हो रही है। अगले साल जब दोबारा बातचीत होगी, तो दिल्ली अपनी जनसंख्या वृद्धि के आधार पर अपनी मांगें रखेगी। गर्मियों में पानी की बड़ी किल्लत को रोकने के लिए दिल्ली को एक बड़ा कोटा आवंटित किया जाना चाहिए। समझौते के अनुसार, राजधानी को 0.724 बिलियन क्यूबिक मीटर यमुना जल आवंटित किया गया है और इसका हिस्सा तीन अवधियों- जुलाई से अक्टूबर, नवंबर से फरवरी और मार्च से जून के दौरान बदलता रहता है।

मां हुई बेहोश, खूब रोया पिता; यूपीएससी की परीक्षा में बेटी को देर से पहुंचने पर नहीं मिली एंट्री

नईदिल्ली, एजेंसी। आजकल इंटरनेट पर वायरल हो रहे एक हैरान करने वाली घटना के वीडियो ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा है। दरअसल, शनिवार को गुरुग्राम में यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा देने आई एक लड़की को देरी से पहुंचने के कारण उसके परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं दिया गया। इसके बाद उसके माता-पिता का भावुक करने वाला वीडियो सामने आया है। इस वायरल वीडियो में लड़की की मां परीक्षा केंद्र के बाहर बेहोशी की हालत में दिख रही है, जबकि उसके पिता रोते-बिलखते और परीक्षा केंद्र के लोगों को कोस रहे हैं। हालांकि, उनकी बेटी दोनों को समझाने और शांत कराने की कोशिश करती दिख रही है। मानवीय भावनाओं को झकझोर देने वाला यह वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हो गया है, जिसने ऑनलाइन चर्चा को जन्म दे दिया है। वीडियो में यूपीएससी परीक्षार्थी लड़की की मां बेहोशी की हालत में दिखाई दे रही है, जबकि उसके पिता निराशा में विलाप करते हैं। इस परेशानी के बीच, लड़की अपने पिता को सांत्वना देने की कोशिश करते हुए कहती है, पापा, प्लीज पानी पी लीजिए और शांत हो जाइए। आप ऐसा क्यों व्यवहार कर रहे हैं? मैं अगले साल फिर से परीक्षा दे दूंगी। यह कोई बड़ी बात नहीं है। वीडियो में पिता का दुख स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जब वह विलाप करते हुए कहते हैं, एक साल गया बाबू हमारा। जिस पर लड़की आश्वस्त होकर जवाब देती है कि वह अगले साल परीक्षा देगी और उसे पास करेगी।

यह वीडियो सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स के हैंडल से पोस्ट किया गया है। इसके कैप्शन में लिखा है, दिल दहला देने वाला वीडियो। आज यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा के लिए अपनी बेटी के साथ आए माता-पिता की हालत देखिए क्योंकि उनकी बेटी को देर से आने की वजह से प्रवेश नहीं दिया गया। परीक्षा सुबह 9:30 बजे शुरू होती है और वे सुबह 9 बजे गेट पर थे, लेकिन गुरुग्राम के सेक्टर-47 स्थित एस.डी. आदर्श विद्यालय के प्रिंसिपल ने उन्हें अंदर नहीं जाने दिया। वहीं, इस वायरल वीडियो पर कमेंट करते हुए कुछ लोगों ने टिप्पणी की कि परीक्षार्थियों को नियमों का पालन करना चाहिए, अन्य लोगों ने टिप्पणी की कि यह दृश्य कितना दिल दहला देने वाला था। यह घटना इस बात की याद दिलाती है कि प्रतियोगी परीक्षाएं उम्मीदवारों और उनके परिवारों पर कितना भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक बोझ डाल सकती हैं।

ड्रैगन ने की जी7 की आलोचना, शिखर सम्मेलन के नेताओं पर लगाया चीन को बदनाम करने का आरोप

बीजिंग, एजेंसी। चीन ने इटली में हुए जी 7 शिखर सम्मेलन की आलोचना की। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने जी 7 देशों पर चीन से संबंधित मुद्दों का इस्तेमाल कर ड्रैगन (चीन) को ही बदनाम करने का आरोप लगाया। जी7 शिखर सम्मेलन में चीन के बयान को लेकर लिन जियान ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। लिन जियान ने कहा, जी 7 सम्मेलन में नेताओं ने चीन से संबंधित मुद्दों का इस्तेमाल ड्रैगन की निंदा करने और उसपर हमला करने के लिए किया। उन्हीं झूठे आरोपों का इस्तेमाल किया गया, जिसका कोई आधार नहीं है। यह केवल झूठ से भरे हुए हैं। उन्होंने जी 7 की आलोचना करते हुए कहा, यह दुनिया का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। इन सात देशों में दुनिया की केवल 10 प्रतिशत आबादी रहती है। इन सभी तो एक साथ लाया जाए तो भी ये वैश्विक आर्थिक विकास में चीन से कम योगदान देते हैं।

जी7 अपने लक्ष्य से भटक गया: लिन जियान

चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता के अनुसार, जी 7 लंबे समय से अपने लक्ष्य से भटका हुआ है। यह अमेरिका और पश्चिमी देशों के वर्चस्व को बनाए रखने के लिए एक राजनीतिक टूल बन गया है। यह अपने नियम और फैसले को संयुक्त राष्ट्र चार्टर अंतरराष्ट्रीय नियम के उद्देश्य और सिद्धांत से ऊपर रखता है। लिन जियान ने जी-7 पर सैन्य युद्धाभ्यास और क्षेत्रीय हस्तक्षेप के माध्यम से तनाव बढ़ाने का आरोप लगाया। विशेष ग्रुप बनाकर विभिन्न गुटों को भड़काता है।

पाकिस्तान में टमाटर के भाव 250 रुपए तक पहुंचे

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान में ईद के मौके पर महंगाई ने लोगों की हालत खराब कर रखी है। टमाटर के दाम एक दिन में 100 रुपया से ज्यादा बढ़कर 200 रुपया किलो से भी ज्यादा हो गए हैं, कई जगहों पर यह 250 तक पहुंच गए हैं। जिलों के प्रशासन ने टमाटर का मार्केट रेट 100 रुपया फिक्स कर रखा है लेकिन इसके बाद भी टमाटर के दाम आसमान छू रहे हैं। रमजान और ईद के मौकों पर टमाटर जैसी चीजों की खपत बढ़ने के कारण कीमत बढ़ने की उम्मीद ज्यादा रहती है लेकिन प्रशासन द्वारा इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। जिससे जमाखोरी बढ़ गई और दाम आसमान पर चढ़ गए। लगातार बढ़ती कीमतों के बीच पेशावर के जिला प्रशासन ने धारा 144 का प्रयोग करते हुए टमाटर को जिले से बाहर ले जाने पर रोक

लगा दी है। आज ईद के मौके पर पाकिस्तान में टमाटर, प्याज और आलू के भाव बढ़े हुए हैं, यह भावों के बढ़ने का क्रम रमजान के क पहले हफ्ते से ही शुरू हो गया था लेकिन प्रशासन की तरफ से इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। जिससे यह भाव लगातार बढ़ते गए।

सब्जियों और रोजमर्रा की चीजों के बढ़ते हुए दामों को लेकर रहवासियों ने भी अपनी हताशा जाहिर की, उन्होंने कहा कि बाकी सब तो ठीक है हम झेल रहे हैं लेकिन यह एक दिन में 100 रुपय किलो तक दाम बढ़ जाना कहां तक सही है। जिला प्रशासन के नियम कायदे केवल कहने भर को हैं, कोई भी इनकी नहीं सुनता।

बजट में महंगाई कम करने का किया था वादा

हाल ही में आए पाकिस्तानी बजट में पाकिस्तानी सरकार ने महंगाई को कम करने का वादा किया था, उनके वादे कि धज्जियां कुछ ही दिनों में उड़ती हुई दिखाई दे रही हैं। सरकार ने वादा किया था कि वे महंगाई दर को अगले एक साल तक 12 फीसदी पर ही रोकने की कोशिश करेंगे। लेकिन जमीनी स्तर पर माहौल उसके बिलकुल उलट दिखाई दे रहा है।

आईएमएफ से लोन लेने के लिए बढ़ानी होगी महंगाई

पाकिस्तान में महंगाई को कम रखना सरकार के बस में भी ज्यादा नहीं है, सरकार एक बार फिर से आईएमएफ के पास लोन लेने के लिए जा रही है। ऐसे में उसे आईएमएफ की शर्तों के हिसाब से अपनी योजनाएं तैयार करनी होगी, साथ ही साथ टैक्स के दायरे को भी बढ़ाना होगा। जिससे पाकिस्तान में महंगाई अभी और बढ़ेगी।

भारत-भूमध्य सागरीय पहल के साथ भारत और इटली के संबंध होंगे मजबूत

रोम ,एजेंसी। भारत-इटली के बीच बढ़ते संबंधों के बीच, इस गति को और बढ़ाने के लिए एक नई पहल, इंडो-मेडिटेरेनियन इनिशिएटिव की घोषणा की गई है। रोम में दो दिवसीय इंडिया फोरम 2024 में घोषित, आईएमआई का उद्देश्य भारत-इटली की बढ़ती साझेदारी का अध्ययन, समर्थन और प्रचार करना है। इस पहल में भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (आईएमईसी) पर भी विशेष जोर दिया जाएगा, जो एक आर्थिक परियोजना है जिसका अनावरण सितंबर 2023 में नई दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन में किया जाएगा।

इटली के पूर्व विदेश मंत्री और भारत-इटली संसदीय मैत्री समूह के अध्यक्ष सीनेटर गिउलिओ टेरज़ी डि सैंट'अगाटा इस पहल का नेतृत्व करेंगे। फोरम में बोलते हुए सीनेटर टेरज़ी ने द्वृस्ध्रष्ट के महत्व पर जोर देते हुए कहा, ÷सभी एकमत थे कि द्वृस्ध्रष्ट, पिछले त20 की भारतीय अध्यक्षता द्वारा शुरू किया गया आर्थिक गलियारा, जिसमें इटली सबसे पहले हस्ताक्षरकर्ताओं में से एक था, एक बुनियादी ढांचा परियोजना से कहीं अधिक होगा।

इस रणनीतिक पहल का हिस्सा बनकर बहुत खुश हूं- फ्रांसेस्को टैलो- भारतीय चैंबर ऑफ कॉमर्स के इटली के मुख्य प्रतिनिधि वास शेनॉय द्वारा आयोजित इस फोरम में विविध वक्ताओं ने भाग लिया। 2023 में भारत की यात्रा के दौरान इटली की प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी के पूर्व राजनयिक सलाहकार राजदूत फ्रांसेस्को टैलो ने इटली की रणनीतिक भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, ÷मैं इस रणनीतिक पहल का हिस्सा बनकर बहुत खुश और गौरवान्वित हूं, जिसने इटली को न केवल भारत बल्कि संयुक्त अरब अमीरात और अन्य देशों के साथ

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में अग्रणी बना दिया है।÷

अतिरिक्त वक्ताओं में हेरिटेज फाउंडेशन के जेम्स जे कैराफानो और स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के कौश अर्हा शामिल थे, जिन्होंने अमेरिका और भू-राजनीतिक संदर्भों पर जानकारी दी। इस कार्यक्रम में इटली के प्रमुख थिंक टैंक और विश्वविद्यालयों की भागीदारी भी देखी गई, जिसमें इटली के प्रमुख भू-राजनीतिक मंच फॉर्मिच का रणनीतिक समर्थन भी शामिल था। भारत में इटली के राजदूत विन्सेन्ज़ो डी लुका और प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य संजीव सान्याल ने इस पहल का समर्थन करते हुए वीडियो संदेश भेजे।

फोरम ने आईसीसी इटली-भारत व्यापार फोरम की भी मेजबानी की, जिसका उद्घाटन इटली के विदेश मामलों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए अवर सचिव मारिया त्रिपोदी ने किया। मुख्य अतिथियों में इटली में भारत के नए राजदूत राजदूत वाणी राव, सीनेटर टेरज़ी डि संत'अगाटा और भारत में इटली के राजदूत एंटोनियो बार्टोली शामिल थे। आईसीसी के अध्यक्ष अमेय प्रभु ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और व्यवसाय में विश्वास के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, ÷वैश्विक शांति, सुरक्षा और प्रगति के लिए इटली-भारत संबंध महत्वपूर्ण हैं और व्यापार और व्यवसाय करने के लिए विश्वास एक आवश्यक वस्तु है। इस कार्यक्रम का समापन भारत-इटली संसदीय मैत्री समूह के प्रतिनिधियों, जिनमें सीनेटर मार्को स्कुरिया, सीनेटर माटेओ गेलमेट्टी और नाइक ग्रुपियोनी शामिल थे, के साथ-साथ इतालवी संस्थानों के सदस्यों और आईसीसी की 30 कंपनियों के प्रतिनिधिमंडल की उपस्थिति में हुआ। भारत-इटली संबंधों में उच्च स्तरीय भागीदारी देखी गई है, जिसमें पिछले सप्ताह प्रधानमंत्री मोदी की जी-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत यात्रा, तथा पिछले वर्ष इतालवी प्रधानमंत्री मेलोनी की दो बार भारत यात्रा शामिल है, पहली बार द्विपक्षीय यात्रा के लिए तथा फिर जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129